# प्रेमकान्ता

सन्तति।



प्रकाशक—

बनारसीप्रसाद खत्री

❀ श्रीहरिः ❀

# प्रेमकान्ता-सन्तति

या

## ❀ हीरे का तिलस्म ❀

## आठवाँ भाग।


लेखक—

आशुकवि शम्भुप्रसाद उपाध्याय।


आनन्द, सत्य, शोभा सौन्दर्य, प्रेम, शान्ति।
उत्फुल्ल, प्रीति, सौरभ, है दिव्य पुष्प कान्ति॥


प्रकाशक—

बाबू बनारसी प्रसाद वर्मा,

उपन्यास दर्पण आफ़िस, बनारस सिटी।

( प्रकाशक ने इसे बनवाकर स्वाधीन कर रक्खा है )

द्वितीयबार १०००] [मूल्य ॥=)
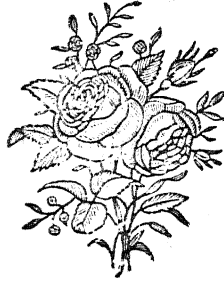
* श्रीहरिः *

श्री इष्टदेवता चरणकमलेभ्यो नमः ।

# प्रेमकान्ता-सन्तति

या

## हीरे का तिलस्म

## आठवां भाग ।

### पहला बयान ।
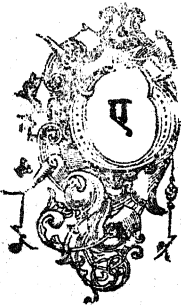
एका एक महारानी माया देवी का प्रेमी रघुवर-सिंह को उस तरह वहाँ आते हुए देख दोनों औरतें बेहद डरीं । आसमानी का तो होश पैतरा हुवा । मैंना डरके मारे थर थर काँपने लगी,—मगर कुछ क्षणके बाद आसमानी ने अपने को सँभाला और उसके ऊपर नफ़रत की निगाह से देखा । रघुवरसिंह ने भी बड़ी गुस्ताख़ी के साथ आसमानी के ऊपर नज़र लगाया । उसकी ऐसी हर्कत को देख—आसमानी का चेहरा गुस्से से लाल हो आया, और उसने घमण्ड के

साथ तनकर कहा-रघुवीर, मैं तुम्हे अच्छी तरह से जानती हूं,-तुम में कितनी ताक़त है वह भी मुझसे छिपी नहीं है,-तुम क्या कर सकते हो वह भी बतला सकती हूँ,—तुम्हारे ऊपर महारानी की कितनी कृपा है,-वह भी मेरे जानने से खाली नहीं है,-मगर तुम मेरी इज़ाज़त के बिना-इस तरह-इस कमरे में क्यों घुस आए? तुम्हे यहां आनेकी जुर्रत ही क्या है? तुम भूल गए,-तुम्हे मालूम नहीं है, बिना-महारानी की आज्ञा के कोई किसी सखी के पास जा नहीं सकता, न उस सखी की रज़ामन्दी के कोई उससे बोलही सकता है। तिसपर मैं कौन हूं-तुम जानते नहीं हो? मुझे तुमने क्या एक मामूली सखी समझ लिया है।

रघुबर-नहीं,-महारानी माया देवी से भी बढ़कर महारानी माहामाया समझ लिया है,-मगर आसमानी,-मुझे इस समय अच्छी तरह, बहुत ही अच्छी तरह मालूम है कि—तुम महारानी की क़सूर वार हो तुमने महारानी को धोखा दिया है,-तुम चाहे उनकी कैसी ही मुंहलगी सखी क्यों नहो,-मगर आज रातकी कार्रवाई तुम्हे मुजरिम बनाए बिना नहीं छोड़ती।

आसमानी-( गुस्से से ) मैं मुजरिम हूं? बदज़ात हरामज़ादे मैं मुजरिम हूं! तू मेरे घर में मेरी इज़ाज़त के बिना घुस आया है, इसलिए तूही मुज़रिम है। आप मुज़रिम होकर मुझे मुज़रिम होने की धमकी देता है? मैंने कौनसी ऐसी कार्रवाई की है जिससे मैं मुजरिम हूँ!

रघुबर-नहीं, तुम मुजरिम नहीं हो मैं ही मुजरिम हूँ,-मगर महारानी के सामने पहुँचकर-जब-सब किसी को मालूम हो जायगा कि-तुमने एक ऐसे खूबसूरत राजकुमार

को जिसके लिये महारानी परेशान हो रहीं हैं-सराय से उड़ा अपने बङ्गले में लाकर-महारानी को अंगूठा दिखाती हुई आपही उसका लुत्फ़ उठाना चाहा था, तब कौन मुजरिम में गिना जायगा। कौन उस धोकेबाजी के नतीजे को भोगेगा।

आसमानी-[ बिगड़ कर ] कौन कहता है कि मैंने ऐसी कार्रवाई की ?

रघुबर-मैं कहता हूं-मेरी ज़बान कहती है,-मेरी देखी हुई आँखें कहती हैं। तुमने कुमार चन्द्रदेवको ऐयारी करके उठालाया है,-और साथही यह भी कह सकता हूँ वह इसी के बग़लवाले कमरे में मौजूद है। अब बताओ—तुम महारानी की पक्का मुजरीम ठहर चुकी या नहीं? ऐसी हालत में मैं क्यों तुम्हारी इज़ाजत की राह देखता,-मैंने इस बातकी ज़रा भी ज़रूरत न देखी और अपने को एक महारानी की मुजरिम के सामने लापरवाही के साथ पहुँचाया।

आसमानी—तुम झूठा इल्जाम लगाकर मेरी आबरू लेरहे हो। मैं किसी कुमार को नहीं जानती-न मैंने वैसी कार्रवाई ही की है। तुम ग़लती कर रहे हो,-तुम मेरे हक़ में धोका खा रहे हो ?

रघुबर-नहीं आसमानी! मैंने आजतक कभी धोका नहीं खाया है,-न मेरी समझ कभी धोका खाहो सकती है। मैं तुम्हारे साथ-साथ नीचे के दीर्वाज़े तक चला आया था। ताज्जुब नहीं मदनमोहनी और अद्भुतनाथ को भी इस बातका पता लग गया हो। तुम अब किसी तरह से भी अपने को इस इल्ज़ाम से बाहर नहीं निकाल सकती। तुमने बड़ाही अन्धेर किया,-तुमने अपनी प्यारी महारानी को बड़ाही धोका

दिया। तुम्हे ऐसा करना लाज़िम नहीं था। तुम क्या यहाँ के क़ानूनों से वाक़िफ़ नहीं थी ?

आसमानी -[ गुस्से से तनकर ] झूठ-सरासर झूठ, मैंने ऐसा कभी नहीं किया है। तुम मेरी बेइज्ज़ती करने का साहस करते हो, तुम मुझे डरा धमका कर अपना मतलब निकालना चाहते हो ? यह नहीं होसकता है खूब ख्याल रखना ? खूब सोच समझकर ज़बान से बातें निकालना, यह तुम्हरी हिम्मत यह तुम्हारी लापरवाही, यह तुम्हारी ज़ुर्रत तुझे किसी न किसी दिन खूनके आंशू रूलाए बिना हर्गिज न छोड़ेगी। तुम किस घमण्ड में हो ? मुझे किसी तरहका कोई इल्ज़ाम लगाही नहीं सकता है। मैं कुछ भी नहीं जानती। मैं तुम्हे महारानी के सामने झूठा साबित कर नादिम करूँगी। वे मेरे मिज़ाज से अच्छी तरह वाकिफ़ हैं।

रघुबर-[ नफ़रतकी हँसी हँसकर ] बेशक, वे तुम्हारे मिजाज को अच्छी तरह जानती हैं और साथही मेरे मिज़ाज से भी नावाकिफ नही हैं। मगर आसमानी ! यह तुम अच्छी तरह से समझ रक्खो इस समय की यह चलती-फिरती झूठ बातें तुम्हे गुनहगार होने से कभी, किसी हालात में भी बचा नहीं सकती। जानती हो मैं महारानी के सामने तुम्हारे खिलाफ ऐसे ऐसे अच्छे सबूत दूंगा जिससे-करतनी को भी मात करदेने वाली यह तुम्हारी झूठी ज़बान—एक दम, बिना हिले डुले बन्द होजायगी। तुम चूँ तक किए बिना अपने कसूर को कबूलकर जाओगी।

आसमानी-झूठा, दग़ाबाज, बेईमान शैतान......

रघुबर-[बात काटकर] मैं तुम्हारे गाली देने से नाराज़ नहीं होता सुनती जावो आसमानी ! तुमने-एक महारानी की प्यारी

सखी तुमने-महारानी के प्रेमी को-उनसे छिपाकर, उन्हे धोका देकर अपनी इसी बगलवाले कमरे में जहां रातभर तुमने अकेले उसके साथ मज़ा उड़ाया है। इस समय भी बैठा रक्खी हो।

आसमानी—झूठ, एकदम झूठ,—मैना, देख तो वहां कोई बैठा है?

रघुवर—खबरदार मैना, तू यहां से एक क़दम भी आगे मत बढ़ना नहीं तो तेरे हक़ में बिलकुल ही अच्छा नहीं होगा। मैं कहता हूँ आसमानी, मैं क़सम खाकर कह सकता हूँ आसमानी,-इसी दम तुम्हें कुमार चन्द्रदेव सहित,—कै़दकर—मजबूर कर,—लाचार कर,—महारानी के पास लेजाने की ताकत मुझ में है। मैं बातकी बात में इस बातको कर दिखा सकता हूँ मैं इतने दिनों तक महारनी के पास रहकर तिलस्म में घास नहीं छिलता रहा हूँ। लेकिन नहीं,—तुम्हारे इतनी क़सूरवार होनेपर भी,—तुम्हारा इतना बड़ा गुनाह होने पर भी तुम्हारे महारानी को इतना बड़ा धोका देने पर भी-मैने इस तरह की, मैंने इस किश्म की, तुम्हारे हकमें बुराई होकर—तुम्हारी बर्बादी होने की कार्रवाई करने का अब तक,—इस समय तक,—भूल कर भी इरादा नहीं किया है।

आसमानी—तो फिर तुम किस इरादा से यहाँ आए हो बेइमान?

रघुबर—मैं जिस इरादे से आया हूं वह तुम्हे अभी मालूम होजाता है—मगर आसमानी, मैं तुम्हे मिटाने के इरादे से नहीं आया हूँ। अगर मेरा उस तरह का इरादा होना तो तुम अब तक महारानी के सामने पहुँचकर -अपनी सज़ाको भोग चुकी होती। मैंने तुम्हारी कारवाई को जिस वक्त देखा था

उसी वक्त महारानी के पास जाकर तुम्हारी चुगली खाता। फिर बतावो तुम्ही बतावा—तुम अपना बचाव कैसी करती ?

आसमानी—मैं सफा इनकार करजाती और तुझे बनाती।

रघुवर—मैं तुम्हारी दाल गलनेन देता और तुझे कसूरवार बनाने के लिए कुमार चन्द्रदेवको पेश कर देता ! किन्तु नहीं, मैंने वह इरादा ही नहीं किया और एक मर्तबः तुमसे भेंट कर अकेले में तुम्हे समझाने के लिए यहाँ चला। तुम तनो मत, अब तनने से कुछ काम नहीं चल सकता।

आसमानी—[ सोचकर ] तुम साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहते, तुम्हारा इरादा क्या है ?

रघुवर—मेरा इरादा क्या है,—वह सुनोगी आसमानी,—अच्छी बात है सुनो। इससे मेरी भलाई नहीं तुम्हारी ही भलाई है। मगर मैं यहाँ तुम्हे सुनऊँगा नहीं,—इस कमरे के अन्दर वाली कोठरी में चलो, मैं वहां अकेले तुमसे कुछ बातें करूंगा। तुम डरो मत—मैं उस तरफ़ तुम्हारे प्रेमी के कमरे में नहीं जाऊंगा। उसकी ऐसी बातें सुन—आसमानी एक गहरे सोच में पड़गई। उसने समझ लिया कि यह मेरे साथ ज़रूर ज्यादती कर,—मेरे सतीत्व रत्न को मुझ से छीन लेगा। कुछ देरतक जवाब का आसरा देख,—उसको न देते देखकर रघुबर ने कुछ कड़ाई के साथ कहा—सुनो—महारानी की गुनहगार आसमानी सुनो ! तुमने,—तुम्हारी बुरी चाल चलन ने आज एक बड़ा भारी जुर्म करके अपने को—सारे तिलस्म की नज़रों से गिराती हुई—महारानी की मुजरिम बना लिया है। तुम लाख कहो मगर कहनेवाले तुम्हे लाख ज़बान से मुजरिम कहेंगे। तुमने वह काम किया है—जिसको महा-

रानी के दुश्मन भी करने का साहस न करते होंगे। डरो आसमानी डरो! तुम्हे इस वक्त एक पत्ते के खटकने से भी डरना चाहिये। क्या तुम महारानियों के गुस्से से नावाकिफ हो, क्या तुमने ऐसी ऐसी हरकतों में कई एक मुंहलगी सहेलियों का प्राण जाते हुए नहीं देखा है?

आसमानी—देखा है, क्यों नहीं देखा है, मगर……

रघुबर—(बात काटकर) अब इस मगर तगर को रहने दो,—तुम्हारी कार्रवाइयों के बीचमें मगर-तगर कुछ भी नहीं लग सकता। आसमानो, एक मुजरिम आसमानी, क्या तुम डरती नहीं हो, क्या तुम्हें जरा भा खौफ नहीं है, क्या तुम्हारे मनमें कुछ भी बातें नहीं आती है, क्या तुम अपने को सबसे ज्यादा चालाक लगाती हो, तुम्हे रत्ती भर भी उस वक्त का ध्यान नहीं है, जब तुम, आसमानी जब तुम नासमझ आसमानी, महाशक्ति शाली महारानी महामाया के भरे हुए दरबार में, उसी भरे हुए दरबार में, जिसके हरएक इज्जतदार दरबारी, तुम्हे नादान आसमानी तुम्हे, छोटी महारानी कुमुदिनी की तरह, तुमसे डरते हुए तुम्हे इज्जत की, अदब की, कायदे की नजरों से देखते थे, अब तुम्हारी इन सब बातों का पोल खुलतेही तुम्हे बेइज्जती की नजर से देखेंगे, तुम बुरी तरह बे आबरू होगी। क्या तुम्हे इन सब बातों को सोचते हुए भी कँपकँपी पैदा नहीं होती है?

आसमानी—अफसोस! तुम मेरे कोमल कलेजे पर क्यों चोट लगाते हो?

रघुबर—मैं चोट लगाता हूँ, आसमानी! तुम मुझे फजूल ही का इल्जाम लगाती हो मैं कभो ऐसा काम नहीं करती

तुम खुदही अपनी कार्रवाई से अपने कलेजे पर चोट लगा रही हो। सुनो बेसमझ आसमानी, तुमने अपने को नाहक़ ही बर्बाद करने का सामान जुटाया। तुम्हारी बातें खुलतेही, तुम्हारा भेद दरबार के सामने आतेही, तुम्हारी जवानी के साथ अठखेलियाँ करती हुई जान पर आ बनेगी, तुम्हारी इज्ज़त मिट्टी में मिल जायगी, तुम किसी कामकी न रह जावोगी, तुम्हारी हैसियत छीनी जायगी, तुम्हारी आबरू पर पानी फिरेगा। तुम सबकी नज़रों से गिर जावोगी।

आसमानी - मालूम होता है मेरी तकदीर मेरा साथ छोड़ रही है।

रघुबर - बेशक ऐसी ही बाता है आसमानी, - तुम बहुतही बड़े ख़तरे में पड़ा चाहती हो। तुम्हें तुम्हारी आंखों में उस वक़्त की सच्ची तस्वीर उतर आनी चाहिए। तुम अपने को बचाओ,--तुम्हे बचने का अभी भी एक रास्ता है। देखो मेरी तरफ़ देखो, मेरी सूरत नफ़रत से देखी जाने लायक़ नहीं है,—मैं भी तिलस्म में एकही खूबसूरत हूँ,—मुझे भी तिलस्म में सबसे बढ़ कर रुतबा रखने वाली नज़र—चाह के साथ देखती है,-देखो,-तुम अच्छी तरह से जानती हो,-मैं उन सब बातों को इसी दम करवा देनेका अख्तियार अपने इस बाएँ हाथ में रखता हूं,-मेरे इशारे से तुम लकड़ी से कोयले, कोयले से राख हो सकती हो, मगर नहीं,आसमानी नहीं, उस लाजवाब कूवत को रखते हुए भी मैं तुम्हारे लिए सिर्फ़ तुम्हारे लिए उसको काम में न लाकर, - तुम से घण्टे - दो घण्टे के लिए फ़क़त कुछ बातें एकान्त कमरे में सुन लेने की मिन्नत करता हूं। क्या तुम ऐसी गुनहगारी के दल-दल में

गले तक फंसते हुए भी—एक।सहारे की टहनी पाकर,—उस-की चन्द बातों को सुन लेने की मजबूरी न दिखा,—रूखाई के साथ इन्कार करने का इरादा करती हो? क्या तुम्हे अपनी उभड़ती हुई जवानी की मुहब्बत नहीं है,—क्या तुम संसार के अलौकिक रसों को चखे बिनाही संसार से उठा चाहती हो?

आसमानी—(हतास होकर) रघुबर,—मैं समझ गई,—तुम इससे ज्यादा तूल देकर कहो मत,—मैं तुम्हारी एकएक बातें सुनूंगी। चलो—उस सामने की बसन्ती कोठरी में चलो। इतना कह कर वह बदहवास की तरह उस कोठरी के दरवाज़े की तरफ बढ़ी,—रघुबर उसके पीछे पीछे मुसकुराता हुवा—फ़तहयाबी की नज़र से देखता हुवा चला। मैंना उस कमरे के दरवाज़े को भिड़का कर बाहर निकली। आसमानी ने दरवाज़े पर पहुँच कर—उसमें लटका हुवा रेशमी कामदार परदा हटाया। दरवाजा खुला था। आसमानी के साथही रघुबर ने भी उस कोठरी के अन्दर पैर रक्खा। हटा हुवा परदा बराबर में आगया। इस समय एक परमसुन्दरी जवान कामिनी एक जवान, धूर्त्त ऐयार के साथ—एक निहायतही सजे सजाए कमरे में चेहरे की उदासी को कोशिश के साथ दबाती हुई खड़ी थी। रघुबर के होंठों पर बार २ मुस्कुराहट की रेखा दौड़ रही थी। उसका दिल बेहद खुश था। आसमानी की नज़र निराशा से भरी हुई थी,—वह मुलायम मखमली कोच पर बदहवास होकर बैठ गई। रघुबर उसी के पासही—अपनी टोपी को टेबुल पर रखता हुवा—बैठ गया। कमरा बहुत बड़ा नहीं था मगर हर एक देशके सामानों से सजा हुवा था। रघु-बर ने बैठतेही एक नज़र चारों तरफ़ घुमाकर देखा। आस-मानी ने उसके भावों को कनखियों से देख अपने पीले चेहरे

को पोंछती हुई—रूँधे हुए गले से कहा—रघुबर! मैंने तुम्हारी बातें मञ्जूर करली,—तुम इस वक्त मेरे साथ एकान्त में आए हुए हो,—यह कमरा हम दोनों की बातों को हमारे कानोंही तक रखने का चोंगा होरहा है,—अब कहो,—तुम क्या कहने वाले थे और मुझ आफ़त में पड़ी हुई अबला से क्या चाहते हो?

रघुबर—मेरी बातें तुम सब सुन चुकी हो, मुझे कुछ कहना नहीं है आसमानी,—मुझे फ़क़त तुमसे एक प्रार्थना करना है,—मेरी तुम्हारी क़दमों में एक आरज़ू है,—मेरा तुम्हारे पास एक निवेदन है। मैं हाथ जोड़ कर तुमसे एक मिन्नत करता हूँ।

आसमानी—तुम क्यों मुझे इस तरह से लज्जित करते हो रघुबर,—मैं इस वक्त तुम्हारे कब्जे में हूँ—तुम जो चाहे मुझसे कह सकते हो। कहो—क्या कहना है?

रघुबर—तुम इस तरह से क्यों छेड़ती हो आसमानी,—तुम मेरे क़ाबू में नहीं, मैं तुम्हारे क़ाबू में हूँ।

आसमानी-ख़ैर अपने दिल में जो कुछ भी समझो—मगर—तुम्हे जो कुछ भी कहना हो जल्द कहो। मैं देर तक—यहां तुम्हारे साथ इस तरह अकेले—रह नहीं सकती। लोग क्या कहेंगे? मुझे महारानी की ख़िदमत में भी जाना है। मुझे इस तरह गप मार कर बैठे रहने की फुरसत नहीं है। कहो—क्या चाहते हो?

रघुबर—ठीक है आसमानी—तुम्हे इस वक्त ज़रा भी फुर्सत नहीं है। मैं सब कुछ जानता हूं—तुमसे कह भी चुका हूँ,—मुझे एक—एक हाल भी मालूम है।

आसमानी–तुम्हे कुछ भी मालूम नहीं है। तुम फ़क़त धमका रहे हो?

रघुबर—नहीं आसमानी—मैं इस तरह का दग़ाबाज़ नहीं हूं। मैंने साफ़ साफ़ तुमसे कह दिया,–तुम्हे इस वक्त हर तरह की फ़ुर्सत है,–तुम बहाना करती हो,–तुम्हे मेरे पास रहना भारी मालूम पड़ रहा है,—तुम उसी ख़ूबसूरत नौजवान की सोहबत में जाने की जल्दी मचा रही हो–तुम्हे उसी बातकी जल्दी पड़ी हुई है--जिसको तुमने अपनी आराम-गाह में..............

आसमानी—(गुस्से से बात काट कर) रघुबर,–मुझे ज़बर्दश्ती दबाकर एकान्त में ले आने वाले रघुबर,–तुम फिर उसी बात पर उतर रहे हो! क्या तुम्हे एक लाचार औरत के ऊपर और भी ज़ुल्म करने का इरादा है?

रघुबर–नहीं आसमानी–यह तुम सरासर भूल करती हो!

आसमानी–तो फिर क्या तुम इन्ही सब फ़ज़ूल की बातों को मेरे कान के ज़रिए से ज़हर बना कर पिलाने के लिए–एकान्त कमरे की मुलाक़ात के इच्छुक हुए थे? क्या इसी तरह मेरे कलेजे पर तीर चलाने का इरादा था!

रघुबर – नहीं आसमानी, – मैं इन सब बातों को सुना, तुम्हें तकलीफ़ देने के लिए तुम्हें इस समय अकेले में विवश कर नहीं लाया हूँ। यह तो ज्यादे देर ठहरने का वक्त न होने के बहाने मे आई हुई बातों के सिलसिले को तोड़ने का एक औज़ार था। मैं जो कुछ भी कहना चाहता हूँ वह इससे कहीं दूर है। वहां तक तुम्हारी पहुँच होते हुए भी मैं इस वक्त कह सकता हूं कि नहीं, तुम्हारी पहुँच नहीं के बराबर है।

आसमानी—ख़ैर होगी। मुझे उससे क्या मतलब? मगर अब तो तुम उस बातको जहाँ तक जल्द हो सके एक दम ही कह डाला। नहीं तो तुम देखते ही हो,—तुम्हारा दिमाग़ भी गवाही देरहा होगा, मैं इस वक्त।

रघुबर—(जल्दी से) हाँ आसमानी, मैं सब कुछ समझता हूँ, तुम अपनी कार्रवाई से बेहद घबरा रही हो,—तुम्हारा जी तुम्हारे ठीकाने नहीं है, तुम्हारे चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही है बेशक घबराने की बातही है। ऐसे वक्त पर भी घबराहट न हो तो कैसे वक्त पर घबराहट हो सकती है। तुम्हारी छाती धड़क रही है, तुम्हारा कलेजा हिल रहा है।

आसमानी—हां हां सब कुछ हो रहा है, मगर क्यों नहीं तुम अपने मतलब पर आते?

रघुबर—घबराओ मत,—तुम्हें मैं हरतरह से बचाऊंगा, मगर जल्दी मत करो,—मैं जल्दी करने के लिए नहीं आया हूँ। इस वक्त महारानी रात भर की खुमारी में पड़ी हुई—मुर्दे से बाज़ी ले रही होंगी। अच्छा—सुनो, आसमानी मैं अब जो कुछ तुम्हें कहने के लिए आया हूँ,—उसके रास्ते से आगे बढ़ता हूँ।

आसमानी—हाँ, ऐसाही करो, मगर बहुत जल्दी, अपनी बातों को बिना तूल दिए ही, जहां तक मुमकिन हो दोचार लफ्ज़ों ही में। मुझे इस वक्त किसी भी बातों के सुनने का शौक़ नहीं। मेरा गला सूखा जा रहा है, ज़बान तालू से लग रही है। मुझे बड़े ज़ोर की प्यास मालूम पड़ रही है। इसके जवाब में रघुबर कुछ कहाही चाहता था—इतने में सामने की दीवार पर जड़ी हुई एक खूबसूरत घण्टी बोल उठी, जिसको सुनतेही आसमानी चौंककर उठ खड़ी हुई।

## ❀ चौथा बयान ❀
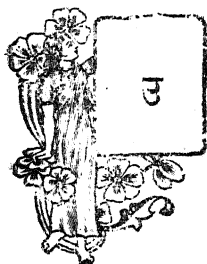
उस औरत के घूंघट खोलतेही सावित्री की सूरत देख, उसे पहचान कर बड़ी मुहब्बत के साथ कुमार रणधीरसिंह ने उसे गले लगाया, मगर उस औरत ने जल्दी में उनके दोनों हाथों को अपने गले से छुड़ा-कर दो क़दम पीछे हटते हुए उनसे कहा—ऐ ! आपका क्या होगया है ? मालूम होता है आपके दिमाग़ में गर्म्मी घुस गई है ? मैं सावित्री हूँ, आपकी आंखें मुझे सावित्री देख रही हैं ? आप होश में तो हैं, ज़रा होशमें आइए कुमार ! आपकी बातें सुनकर मुझे भय मालूम देरहा है। मैं आपके पास अब अकेली नहीं रह सकती,—ज़रा हट जाइए,—मैं लौड़ियों को बुलाती हूं।

कुमार—( बेचैन होकर ) क्या तुम सावित्री नहीं हो ? मगर तुम्हारी सूरत तो साफ़ साफ़ सावित्री ही बता रही है।

वह—मेरी सूरत मुझे सावित्री बता रही है ? झूठ—बिल कुल झूठ ? आप इतने बड़े राजकुमार होकर इस तरह झूठ बोलते हैं आपको ऐसी बातें शोभा नहीं देती। देखिए—ग़ौर करके देखिये, ज़रा अच्छी तरह आंखें मलकर देखिये,—मैं न सावित्री ही हूँ, न मेरी सूरत सावित्री ही की तरह है।

कुमार—क्या तुमने कभी सावित्री को देखा है ?

वह-उसी सावित्री को, जिसकी एक चिट्ठी पाकर आप घर-द्वार, मा-बाप, भाई-बहन की मुहब्बत छोड़ आप अकेले निकल आए थे उसी सावित्री को, जिसने प्रेमके बन्धन में आपको बाँध लिया है? उसी सावित्री को जिसने आपके लिए अपने बाप से भूपालसिंह से शत्रुता मोल लेकर सरला और चपला के साथ एक खण्डहर की शरण लीथी। उसी सावित्री को – जिसके ऊपर कई एक राजे महाराजे के लड़के पागल होरहे हैं? उसी सवित्री को, जो अभी हालही में रायगढ के महाराज शिवप्रसादसिंह के महल से छुटकारा पाकर यहाँ आई है?

कुमार – हां, उसी सावित्री को–जिसके बिना मेरा जीवन कष्टमय होरहा है!

वह – जी हां, मैंने उस सावित्री को – एकबार नहीं पचासों बार देखा है और सैकड़ों बार उससे बातें चीतें भी भयी हैं। कल मेरी शादी होने के बाद मेरे साथ उसने कुछ ऐसी दिल्लगी भी कीथी – जिसके जवाब में मैंने उसे कहा था कि – किसी दिन तुम्हें ऐसा छकाऊँगी – जो जिन्दगी भर भूलने का नाम न लोगी।

कुमार – तो क्या यह तुम्हारी सूरत उसकी तरह नहीं?

वह-नहीं, हर्गिज नहीं बिलकुल नहीं, एक रत्ती भर नहीं-मेरी और उसकी सूरत में ज़मीन और आसमान का फ़र्क है।

कुमार – तब तो तुम सरासर झूठ बोल रही हो।

वह – (चिढ़कर) मैं क्यों झूठ बोलूगी, झूठ बोलें आप, मुझे झूठ बोलने से फ़ायदा! आप अपने होश में तो हैं नहीं – अगर अपने होश में होते तो ऐसी बहकी बहकी बातें करते?

कुमार-तुमने अपनी सूरत तो देखी है नहीं, नाहक मेरी निन्दा करती हौ।

वह-( खिलखिलाकर ) मैंने अपनी सूरत देखी नहीं है, मुझे ऐसी हालत में भी हंसी आए विना नहीं रहती,--अगर मैंने अपनी सूरत नहीं देखी है तो किसने मेरी सूरत देखी है!

कुमार-ज़रा इस आइने में तो अपनी सूरत देखो!

वह-क्या मैं कोई औरही हो गई हूँ-या जैसा आप कह रहे हैं सावित्री होगई हूँ जो अपनी सूरत आइने में देखूं। मैं नहीं देखूंगी,-मैं काली हूँ गोरी हूँ जैसी थी वैसीही ठीक है। मगर जनाब, आपने मुझे तो बर्बादही किया।

कुमार-फिर वही बात! तुम आइने में अपना मुंह देखकर क्यों नहीं अपना परिचय मुझे देती।

वह-तो क्या ऐसा करने से आप बिगड़ जायँगे! आपकी खुशी बिगड़िए चाहे खुश होइए मगर-मेरा तो पूरी तरह से सत्यानाश होगया। अफ़सोस! मैं कहीं की भी न रही अब मैं कहाँ जाऊंगी,-किसकी होकर रहूँगी। मुझे लोग क्या कहेगें, सब छोड़-सावित्री ही मुझे क्या कहेगी? मैं उसके ताने से कैसे बची रहूंगी। कुमार, आपने एक भोली-भाली अबला को छल कर अपना मतलब साध लिया। आप इतने बड़े प्रतापी होकर एक मक्कारही निकले!

कुमार-तुम तो भाई अपनी हो कही जाती हौ, कुछ मेरा भी सुनोगी या नहीं।

वह-उसी सावित्री को, जिसकी एक चिट्ठी पाकर आप घर-द्वार, मा-बाप, भाई-बहन की मुहब्बत छोड़ आप अकेले निकल आए थे उसी सावित्री को, जिसने प्रेमके बन्धन में आपको बांध लिया है ? उसी सावित्री को जिसने आपके लिए अपने बाप से भूपालसिंह से शत्रुता मोल लेकर सरला और चपला के साथ एक खण्डहर की शरण लीथी। उसी सावित्री को - जिसके ऊपर कई एक राजे महाराजे के लड़के पागल होरहे हैं ? उसी सवित्री को, जो अभी हालही में रायगढ के महाराज शिवप्रसादसिंह के महल से छुटकारा पाकर यहाँ आई है ?

कुमार - हां, उसी सावित्री को-जिसके बिना मेरा जीवन कष्टमय होरहा है !

वह - जी हां, मैंने उस सावित्री को - एकबार नहीं पचासों बार देखा है और सैकड़ों बार उससे बातें चीतें भी भयी हैं। कल मेरी शादी होने के बाद मेरे साथ उसने कुछ ऐसी दिल्लगी भी कीथी - जिसके जबाब में मैंने उसे कहा था कि - किसी दिन तुम्हें ऐसा छकाऊँगी - जो जिन्दगी भर भूलने का नाम न लोगी।

कुमार - तो क्या यह तुम्हारी सूरत उसकी तरह नहीं ?

वह-नहीं, हर्गिज़ नहीं बिलकुल नहीं, एक रत्ती भर नहीं-मेरी और उसकी सूरत में ज़मीन और आसमान का फ़र्क है।

कुमार - तब तो तुम सरासर झूठ बोल रही हो।

वह - ( चिढ़कर ) मैं क्यों झूठ बोलूगी, झूठ बोलें आप, मुझे झूठ बोलने से फ़ायदा ! आप अपने होश में तो हैं नहीं - अगर अपने होश में होते तो ऐसी बहकी बहकी बातें करते ?

कुमार-तुमने अपनी सूरत तो देखी है नहीं, नाहक मेरी निन्दा करती हो।

वह-( खिलखिलाकर ) मैंने अपनी सूरत देखी नहीं है, मुझे ऐसी हालत में भी हंसी आए बिना नहीं रहती,--अगर मैंने अपनी सूरत नहीं देखी है तो किसने मेरी सूरत देखी है!

कुमार-जरा इस आइने में तो अपनी सूरत देखो!

वह-क्या मैं कोई औरही हो गई हूँ-या जैसा आप कह रहे हैं सावित्री होगई हूँ जो अपनी सूरत आइने में देखूं। मैं नहीं देखूंगी,-मैं काली हूँ गोरी हूँ जैसी थी वैसीही ठीक है। मगर जनाब, आपने मुझे तो बर्बादही किया।

कुमार-फिर वही बात! तुम आइने में अपना मुंह देखकर क्यों नहीं अपना परिचय मुझे देती।

वह-तो क्या ऐसा करने से आप बिगड़ जायँगे! आपकी खुशी बिगड़िए चाहे खुश होइए मगर-मेरा तो पूरी तरह से सत्यानाश होगया। अफ़सोस! मैं कहीं की भी न रही अब मैं कहाँ जाऊंगी,-किसकी होकर रहूँगी। मुझे लोग क्या कहेंगे, सब छोड़-सावित्री ही मुझे क्या कहेगी? मैं उसके ताने से कैसे बची रहूंगी। कुमार, आपने एक भोली-भाली अबला को छल कर अपना मतलब साध लिया। आप इतने बड़े प्रतापी होकर एक मक्कारही निकले!

कुमार-तुम तो भाई अपनी हो कही जाती हो, कुछ मेरा भी सुनोगी या नहीं।

वह–इस तरह से तो आपने कई बार कहा–कई बार और भी कहेंगे मगर हाय ? मर्द की जात भी पाया तो आखिर बेरहमही पाया ?

कुमार–तुम क्या पागल की तरह बातें करती हो, देखो इस शीशे में अपना मुँह देखो तब मुझसे कहो ?

वह–खैर–थोड़ी देर के लिए शीशा में अपना मुंह देखे बिना ही मैं मानलूँ कि मेरी सूरत सावित्री की तरह ही है,–मगर यह तो बताइए कृपानिधान,–आप क्या रातको मुझे सावित्री ही समझ कर मेरे पास सोने आए थे ?

कुमार—मैं अपने होश में कब था जो तुम्हारे पास सावित्री समझकर सोने आता ? तिसपर सावित्री का ब्याह मेरे साथ कब हुवा है जो मैं ऐसी नीचता करता ?

वह–यह तो आप जानें आपका काम जाने, मगर यहाँ तो अपना सब कुछ गया, अब मैं अपनी हमजोलियों के साथ किस बात की शेखी बघारूँगी।

कुमार–तुम्हारा यह रोना तो मैं देखता हूं प्रलय तक खतम नहीं होने का है, मगर मेरी भी तो इस बीच में कुछ सुनो,–तुम शीशे में सब से पहले अपना मुँह देख लो, इसके बाद बताओ,–तुम्हारी सूरत सावित्री की तरह कैसे हुई ? मालूम पड़ता है हम लोगों के साथ किसी ने ज़रूर दग़ाबाज़ी की ?

वह–दग़ाबाज़ी की ? अच्छा लाइए, दग़ाबाज़ी का नाम लेकर आपने मुझे एक औरही तरफ़ खैंच लिया। अब मैं आइने में अपनी सूरत देखूंगी इतना कहकर उसने कुमार के हाथ से शीशा लेकर अपना मुंह देखा, साथही उसने चौंककर कहा ओफ़, ओह! यहाँ तो सचमुच बड़ी भारी दग़ाबाज़ी होगई।

आप ठीक कहते थे, —बेशक मैं इस वक्त हूबहू सावित्री ही की शकल की दिखलाई पड़ रहूँ। जरूर किसी पाजी ने हमलोगों के साथ पाजीपन कि, हाय हाय सावित्री भी बर्बाद होगई होगी, —उसके साथ भी ज़रूर ऐयारी खेली गई होगी, वह भी ज़रूर धोके में आगई होगी? माफ़ कीजिएगा, कुमार! मालूम पड़ता है आप बिलकुलही बेक़सूर हैं। यहाँ किसी ने हमलोगों के साथ चाल बाज़ी खेली! कुछ नहीं तो विचारी सावित्री धोके में आकर —किसी का आप समझ, —पैताने की तरफ़ बैठ पंखा झलती होगी।

कुमार—(गुस्से से) क्या कहा? सावित्री धोके में आकर किसी को पंखा झलती होगी? क़िसकी मजाल है जो मेरे रहते हुए उससे ऐसा करावे। मैं इसी दम उसको दो टुकड़े कर डालूंगा। तुम बतावो, —सावित्री इस समय कहाँ, किसके पास बैठी हुई होगी?

वह—ख़ामोश, कुमार ख़ामोश! इस तरह गुस्से से उतावला होकर पैर मत पटकिए, —यहाँ आप से कमज़ोर और दब्बू होकर कोई बैठे नहीं हैं। तिस पर आप सोच सकते हैं कि, —यह कार्रवाई किसीने जानबूझ कर तो की नहीं है। धोके में आगए हैं। आप भी धोकेही में पड़कर मेरे पास सोने आए होंगे, —मैं भी धोकेही में पड़कर आपके साथ सोने बैठी थी। सावित्री ने भी धोके ही में पड़कर वैसा किया होगा, —उस मर्द ने भी धोकेही में पड़कर उसके साथ वैसा बर्ताव किया होगा। जहाँ ऊपर से लेकर नीचे तक धोका ही धोका है वहां किसको क्या कहा जाय। मालूम पड़ता है मेरे पतीही की सूरत आपकी तरह रङ्ग दी गई होगी और सावित्री

की सूरत मेरी तरह बनाई गई होगी। नहीं तो मेरी सूरत सावित्री की तरह और आपकी सूरत मेरे पतिकी तरह कैसे होती ?

कुमार—(बिगड़ कर) मैं तो तुम्हारे पतिको चाहे जो भी हो बिना मारे हर्गिज़ नहीं छोडूंगा ?

वह-यह क्यों ! उनका इसमें कौनसा कसूर है, उनको कौनसा इलज़ाम लगाकर मार डालेंगे । फिर आप समझ सकते हैं कि उनको भी अपनी औरत का इस तरह धोके में आकर अकेले किसी ग़ैर के पास रात बिताने का कुछ कम रञ्ज न होगा। वे भी आपकी तरह बहादुर हैं, और इस हीरे के तिलस्म का राई रत्ती हाल जानते हैं आप तिलस्म नाशक हैं तो वे तिलस्म रक्षक हैं। वे अवश्य आपही की तरह बिगड़ते हुए आपकी खोजमें निकले होंगे।

कुमार – मैं इस बातकी कुछ भी परवाह नहीं करता,-मैं उससे ज़रूर लड़ूँगा और जिस तरह से भी हो उसकी जान लिए बिना हर्गिज़ चुप न रहूँगा। आज उसने मेरे आशा के प्रदीप को बुझा दिया।

वह—और आपने उनकी खुशी के चिराग़ को गुल नहीं कर दिया ?

कुमार—नहीं, मैंने अपने होश में कुछ भी नहीं किया। न मुझे इस बात का दोष दे सकता है ? क्या तुम कह सकती हो कि वह भी मेरी ही तरह बेहोश होकर उसके पास गया था ?

वह-यह मैं कैसे कह सकती हूं,-अगर मुझे यह सब बातें मालूम होती तो काहे को आपके पास फटकने आती ?

कुमार-तुम अपना मुंह तो साफ़ कर डालो।

वह–हाँ हाँ, मैं भी यही तो चाहती थी,–( मुंह धोकर ) लीजिए,–जान बूझकर किसी ने भी यह कार्रवाई नहीं की है। इतना कहकर उसने जल्दी से खिड़की खोल, अपना मुंह कुमार के सामने कर दिया। उन्होने देखा वह एक निहायत ही हसीन कमसीन औरत है। उसकी भोली–भाली लाजवाब खूबसूरती को देख वे सहम गए। उनके दिलमें एक तीर बैठ गया। वे कुछ देर के लिए अपने को भी भूल गए। यह देख उस कामिने कुछ दबी हुई मुस्कराहट के साथ कहा–देखा–कुमार! यह सब किसी के पाजीपन का नतीजा है,–अब आपही बताइए,–इसमें हम चारों का क्या क़सूर है?

कुमार–( लम्बी सांस लेकर ) ठीक है मगर अफ़सोस! अब मुझसे कुछ भी नहीं किया जा सकेगा?

वह–क्यों क्यों,–क्या आप एक सावित्री के बर्बाद होने से इस तरह हिम्मत को छोड़ देते हैं? आपके लिए अभी किरणशशी मौजूद है,–माधुरी तैय्यार है,–इसके अलावे न जाने और भी कितनी ही नाजनी जान दिए बैठी हैं,–आपको किस बात की परवाह है? अफ़सोस है बिचारी सावित्री को,–वह अब लाख भी बची हुई हो मगर आप हर्गिज़ नहीं अपनावेंगे। रञ्ज है मुझे, जो इस तरह से आपके पास रहकर रात बिताने पर भी आपकी नहीं हो सकती? इसके जवाब में कुमार कुछ कहा ही चाहते थे, इतने में खटके के साथ सामने का दरवाज़ा खुला और सरस्वती के साथ सावित्री आती हुई दिखलाई पड़ी। उसका चेहरा इस समय खुशी से चमक रहा था। वह हर तरह से खुश मालूम पड़ती थी। उसने आतेही कुमार को प्रणाम किया। यह देख उस औरत ने सावित्री की तरफ़ देख

कर हँसती हुई कहा-लो कुमारी,-आज तो मैंने तुम्हारे आशक़ को अच्छी तरह से छकाया, अब ये औरतों से शरारत करने का भूलकर भी कभी नाम नहीं लेंगे। खूब छके,-जैसा चाहिए वैसेही छके। अगर तुम सब क़िस्सा सुन पावोगी तो हँसते हँसते लोटन कबूतर बन जावोगी।

सावित्री—यह सब तुम्हारी ही कारिश्तानी है।

वह-मेरी कारश्तानी मत कहो, सरस्वती की बदमाशी है।

सरस्वती—लो मेरे ऊपर सब इल्ज़ाम थोप कर आप दोनों किनारे हुवा चाहती हो। मैंने क्या किया? कुमार,—आप इन लोगों की बातों का हर्गिज़ विश्वास न कीजिएगा?

सावित्री-( कुमार से हाथ जोड़कर ) जो कुछ भी हम लोगों ने बेअदबी किया हो, उसके लिए आप ज़रूर माफ़ करेंगे।

वह-माफ़ न करेंगे तो और क्या करेंगे-क्या काट खायँगे?

सावित्री—अब मज़ाक़ को रहने दो वासन्ती!

वासन्ती-मैं क्यों रहने दूँगी, रहने दो तुम : मैंने तो अनायासही आज वह चीज़ पाया जिसके लिए तुम सालों से परेशान होरही थी। मेरा हृदय इस समय खुशी से बाँसों उछल रहा है, मैं मज़ाक न करूँगी तो कौन करेगा? उन तीनों की बातें सुन कुमार को बड़ाही ताज्जुब हुवा,-उन्होंने अपने दिल को सँभाल कर सावित्री से पूछा,-'क्यों' सावित्री! यह कैसी बात है और ये कौन हैं?

वासन्ती – आप इन से क्यों पूछते हैं, मुझसे पूछिए, क्या मैं बोलना नहीं जानती हूँ? क्या मुझे जवाब देना नहीं आता है?

कुमार—ख़ैर तुम्हीं बतलावो, तुम कौन हो?

वासन्ती—आपने मेरा नाम तो सुनही लिया,-मैं वासन्ती हूँ,—मेरी गिन्ती महारानी महामाया की बारह सहेलियों में से एक की है। मैंने ही सावित्री को रायगढ़ के महाराज शिवप्रतापसिह के महल से बचाकर यहाँ लाया है। मेरी ही कार्रवाई से सरस्वती भी यहां तक आसकी है। मेरी ही बदमाशी से-आप बेहोश होकर सुलोचना के रङ्गमहल से यहां तक आए हैं। मेरीही बेअदबी ने आपकी सूरत बदल डाली थी। मैंने ही गुस्ताख़ी करके अपनी सूरत सावित्री कीसी बना ली थी। सब से बढ़कर मैं ही क़सूरवार हूँ,-अतएव जो मुनासिब समझ में आवे वह मुझे सज़ा दीजिए?

कुमार—तो क्या तुम्हारी शादी की बातें बिलकुल झूठ है?

वासन्ती—अजी, कृपानिधान, कहाँ की शादी और कहाँ का व्याह? मगर हाँ, एक बात तो ज़रूर मैं कहूँगी,—सावित्री भी इस बात को क़बूल करेगी, सरस्वती भी निष्पक्ष हो कर गवाही देगी। मैं रातभर सोई तो आपही के पास, और जान में हो चाहे अञ्जान में हो मेरी शरीर स्पर्श किया तो आपही ने,-अब इसको शादी कहिए चाहे जो कुछ भी कहिए हुवा ऐसाही है। मैं मौके पर बातें छिपाकर कभी न कहूंगी। उसकी ऐसी बातें सुन दोनों हँसने लगीं। कुमार भी प्रसन्न हुए। उनके दिलमें जो कुछ भी रञ्ज था निकल गया,—उन्हो ने मुहब्बत से वासन्ती की तरफ़ देखा। इसके बाद उसने कुमार को एक मख़मली गद्दे पर बैठाया और सावित्री को उनके पासही बैठाकर, सरस्वती के साथ आप कुछ दूर हटकर बैठी। कुछ देर तक उसी तरह की हँसी दिल्लगी की बातें होती रही, अन्त में सरस्वती ने अपना हाल बयान किया,-सावित्री

ने अपनी बीती सुनाई। कुमार ने भी अपनी बेचैनी को कह डाला। इसके बाद सावित्री ने वासन्ती की तरफ़ देख कुमार से कहा,–'मैं आपसे एक बात कहना चाहती हूँ'।

कुमार—मैं समझ गया सावित्री, तुम्हारे कहने की कोई ज़रूरत नहीं यदि मैं पवित्र पाऊँगा तो अवश्य तिलस्म तोड़ने के बाद कबूल करूंगा।

वासन्ती—अगर कसौटी में खरा सोना न होगा तो यह हर्गिज़ आपके चरणों को अपवित्र करने न आवेगी।

कुमार—तब मुझे भी किसी बात का उज्ुर न रहेगा,–मैं खुशी से सावित्री की बातों को अपना सौभाग्य समझ कर पूरी करूंगा। मगर यह तो बतावो—आज महीनों से भाई के साथ मेरी मुलाकात नहीं हुई है। मेरा जी उनसे मिलना चाहता है,-यदि तुम उनसे मिला सको तो मिलावो?

वासन्ती—मैं मिला तो सकती हूँ मगर इससे तिलस्म तोड़ने में हानि पहुँचने की सम्भावना है। आप घबड़ाइए मत, जब केशरीसिंह और मनोहर से वे तिलस्मी अंगूठी मिल जायंगी तब आप दोनों भाई एक एक अंगूठी को लेकर तिलस्म के रास्ते से मिल सकेंगे। मैं उसीके फेर में पड़ी हुई हूँ,–और आज सबेरे इसी लिए तो कुमारी की सखी चपला को मैंने माधुरी के पास भेज दिया है।

कुमार—वे सब इस समय कहां हैं?

वासन्ती—थे तो नील नगर में, मगर मैं सुनती हूँ,–एक तिलस्म में आने के लिए बना हुवा देवमन्दिर के रास्ते से होते हुए इसी तरफ़ चले आए हैं। मैंने चपला को सब बातें समझा बुझाकर भेजा है।

कुमार–तुमने क्यों नहीं उन सबों को यहीं बुलवा मँगाया ?

वासन्ती—अभी नहीं, ज़रा सब बातों की थाह तो लेने दीजिए, तब खुदही चलकर मैं बुलवा ले आऊँगी। अब उठिए सब कामों से निपट कर भोजन कर लीजिए तब बैठकर आगे की कार्रवाई सोची जायगी। मैं अब अपनी लौंडियों को बुलाकर इसका इन्तज़ाम कर देती हूँ। इतना कहकर वह उठाही चाहती थी,—इतने में नंगी तरवार खींच, कई एक नाटे क़दके नक़ाबपोश धड़धड़ाते हुए अन्दर घुस आए और सबसे पहले वासन्ती को पकड़—उन तीनों को भी गिरफ्तार करने के लिए आगे की तरफ़ लपके। उनलोगों को इस तरह से आते हुए देख सावित्री का कोमल कलेजा सूख गया, और कुमार के रहते हुए भी डरके मारे उसके मुंह से एक गहरी चीख़ निकल पड़ी।

## पाँचवाँ बयान
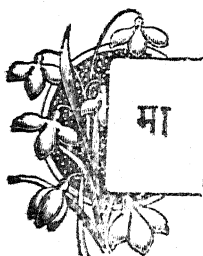
मानिनी के जनाने सराय में जाकर ठहरने से कुछ अफ़सोस करते हुये कुमार केशरीसिंह, मर्दाने सराय में आकर ठहरे। दलीप अपने तीनों घोड़ों को अस्तबल में पहुँचा कर उनके दाने—घांसकी फिक्र में लगा। अनन्त, कुमार के साथ ऊपर के कमरे में आ, उन्हे वहां छोड़ सराय वाले को खानालाने के लिये कहने को बगल वाली कोठरी में चला गया। कुमार मानिनी के उस तरह ज़िद्कर जनाने सराय में जाने के रञ्ज से एक कुर्सी पर बैठकर कुछ सोचने लगे। इतने ही में घबड़ाई हुई सूरत से दलीप ने आकर कहा—'कुमार'—गज़ब होगया,—वे तीनों औरतें तो उस सराय से भाग गईं। मैंने उन्हे उस तरह भागते देखा तो,—कुछ आगे बढ़कर उन्हे रोका मगर मेरी आवाज़ सुनकर रुकने के बदले और भी बेतहाशा घोड़ा फेंका नज़रों से ग़ायब हो गई। क्या करूं,—अपने घोड़े का सामान उतर चुका था, नहीं तो मैं उनका पीछा ज़रूर करता!

कुमार—अफ़सोस! कलेजेपर ज़ख्म लगाकर वह निकल गई। मालूम होता है उसी सराय वाली ने उसे भड़का दिया है। अनन्त कहां है,—चलो उस हरामज़ादी से दरयाफ्त कर लें? इतने में अनन्त भी आगया, उसने वे सब बातें सुनकर लापरवाही के साथ कहा-'अच्छा हुवा, भाग गई-भाग जाने

दीजिए,—यह भी मनोहर ही के गरोह की मालूम पड़ती थी। समझ गई,—यहां अब इसकी दाल नहीं गल सकती है—इस लिए आपही खसक गई। अब उसके लिए इस समय दरयाफ्त करते फिरने की क्या ज़रूरत है ?

कुमार—तुम तो अनन्त ! कभी-कभी बेसमझे बूझे भी बातें किया करते हो ? अगर वह मनोहर के दलकी होती तो हर्गिज़ हमलोगों से अलग हो जनाने सराय में न बैठती,—न इस तरह चुपचाप कुछ किए बिना भाग खड़ी होती। वह कभी उस डाकू के मेल की नहीं है। मैं जहाँ तक समझता हूं वह अवश्य कुमारी मानिनी होगी। चलो—एक मर्तबः उस सराय वाली से कुछ दे दिलाकर पूछलें। उनकी बातें सुन अनन्त झुंझलाया और कहने लगा,—'अगर मानिनी ही होगी तो भी इस समय परेशान होने की क्या आवश्यकता है ? कटक पहुँच कर मिल लीजिएगा। चन्द्रानना की बातें आप भूल गए ? अबकी यह सफ़र हमलोगों के लिए ठिकाने न पहुँचने तक बड़ी ख़तरे की होरही है। कुमार को बेतरह चोट लगी। उन्होंने कहा—अनन्त ! अगर वह मानिनी होगी तो इस रातके समय उसे इस तरह जंगल में भटकने नहीं देना चाहिए ? मेरा जी नहीं मानता है। तुम एक मर्तबः मेरे साथ सरायवाली के पास तक तो चलो। कुमार के इस तरह कहने पर आखिर बकता-झकता अनन्त वहाँ तक जाने के लिए तैय्यार होगया। तीनों उसी दम उतर कर उसके पास पहुँचे।

सरायवाली—एक अधेड़ लालची औरत थी। उसका नाम पर्वतिया था। उसकी एक चौदह पन्द्रह बरस की लड़की भी थी। उसका नाम लीला था। पर्वतिया अपनी लड़की को

दुनियां भर में सब से बढ़कर हसीन समझती थी। इस समय वह लीला के साथ फाटक के बग़ल ही की एक बड़ी कोठरी में बैठ,—मानिनी की दी हुई अशर्फियों को बड़ी चाह भरी आंखों से देखती हुई—दोहरा, तेहराकर गिन रही थी। कुमार केशरी सिंह अपने दोनों ऐयारों के साथ उसी कोठरी में पहुँचे। वह उन्हे देखतेही पहले तो चौंककर कुछ घबड़ा गई, फिर गुस्से में आ लीला की तरफ़ देखती हुई केशरीसिंह से कहा—'तुम लोग कौन हो जो' जो इस तरह इत्तलाय किए बिना इस लड़की के सामने बेधड़क चले आए? तुमलोगों को मालूम नहीं, इसकी शादी एक बड़े भारी ताल्लुक़ेदार के लड़के से होनेवाली है। अब मैं उनके बड़े भारी रूतबे का खयाल कर इसको किसी ऐरे ग़ैरे मर्द का सामना नहीं करने देती ?'

कुमार—ठीक है, तुमको ऐसाही करना उचित है। मगर हमलोग कुछ बुरी नीयत से आए नहीं हैं, फ़क़त तुमसे उन तीनों औरतों के बारे में पूछने आए हैं,—जो शाम को आकर यहां ठहरी हुई थीं ?

पर्वतिया—उनलोगों के बारे में पूछने वाले तुम कौन होते हो ?

कुमार—हमलोग उन्ही लोगों के साथ—साथ आए हुए थे,—इसीलिए पूछने की ज़रूरत आपड़ी? तुम कह सकती हो, वे लोग क्यों इस तरह निकल चली।

पर्वतिया—(लाल लाल आंखें करके) बस बस मैं समझ गई,—तुमलोग इसी दम इस कोठरी के बाहर निकल चलो, मैं बहुत से आदमियों को इकट्ठा करके तुमलोगों की शैतानी का मज़ा चखा दूँगी। मुझे अब कोई सरायवाली ही मत सम-

झना। मैं एक बड़े भारी रईश की समधिन होरही हूं। मेरे मददगार अब बहुत से होगए हैं।

अनन्त—होरहे, मगर तुम ज़बान सँभाल कर बातें करो। पहचानती नहीं हो, हमलोग कौन हैं? फिर अगर इस तरह बेहूदगी का लब्ज़ निकालोगी तो ज़बान पकड़ कर खींच लूंगा।

पर्वतिया—( चिल्लाकर ) मेरे घरके अन्दर आकर तुम मुझसे लड़ना चाहते हो। तुम लोग डाकू हो, बदमाश हो, शोहदे हो, गुण्डे हो, उचक्के हो, पाजी हो, अगर ऐसा न होता तो तुमलोगों के मारे कुमारी इस तरह रातो—रात यहां से भाग खड़ी न होती। जावो, निकल जावो,—ऐसे ज़बान पकड़ कर खींचने वाले बहुतेरे आए। उसकी बातें सुन अनन्त से बर्दाश्त न हो सका,—वह उसकी शरारत का मज़ा चखाने के लिए लपक कर आगे बढ़ाही चाहते थे, इतने में कुमार ने उन्हे रोक कर पर्वतिया से कहा,—'देखो, तुम अपने होश में आकर बातें करो, हम लोग गुण्डे, शोहदे, उचक्के कुछ भी नहीं हैं। अगर ऐसे होते तो अब तक तुम्हार सामने पड़ी हुई अशर्फियां और—उसी के सामने बैठी हुई तुम्हारी खूबसूरत लड़की कभी बची न रहती। सुनो,—जैसा तुम खयाल करती हो वैसा हम लोग हर्गिज़ नहीं हैं। उन्हे धोका हुवा होगा,—उन्हे हमलोगों के ऊपर भ्रम हुवा होगा—इसलिए चली गई होंगी? बतावो—वे सब क्या कहकर गईं?

अनन्त—आप फजूल इस शैतान की बच्ची से पूछ रहे हैं। यह कभी हमलोगों को सीधी तरह से न बतावेगी।

पर्वतिया—मैं शैतान की बच्ची? चल निकल शोहदे,—अगर मैं शैतान की बच्ची होती तो तुझे कच्चाही चबा जाती।

मुझे मेरेही घरमें डाकू की तरह बे कहे सुने घुस आकर इस तरह धमकाते हो, — तुम लोग बदमाश नहीं तो और क्या हो। बिचारी राजकुमारी फँसही चुकी थी। उसने बहुत ही अच्छा किया, — और बहुत ही जल्द तुम्हे पहचान कर — अपने को इस जगह से अलग किया-नहीं तो इस वक्त बड़ी मुसीबत में पड़ती। क्यों लीला! उसका कहना ठीकही न उतरा। जावो, चुपचाप चले जावो, नहीं तो कान पकड़कर बाहर कर देती हूँ।

दलीप-अबे हरामी की पिल्ली, ज़रा आंखें खोलकर देख, और अपनी बड़बड़ को कमकर,—ये श्याम नगर के राजकुमार केशरीसिंह हैं ?

पर्वतिया—झूठ, सरासर झूठ! अगर कुमार केशरीसिंह होते तो बिचारी राजकुमारी कभी भागती वक्त-अपनी सखियों से भागो, जान बचावो, यह वही मनोहर है-जिसने उस सराय से मेरी अंगूठी उतार ली थी कहकर घबड़ाती हुई अपने घोड़े को हर्गिज़ न भगाती।

कुमार-इसी से तो मैं तुम्हे कह रहा हूं, — उसने भी हम लोगों को पहचानने में धोका खाया और तुम भी बिना समझे बूझे धोका खारही हो। मैं क़सम खाकर कहता हूँ — तुम सच मानलो, मैं मनोहरा डाकू नहीं हूँ, — केशरीसिंह ही हूँ।

पर्वतिया-चाहे तुम लाख क़सम खावो, — शिरही क्यों न फोड़ो मगर मैं हर्गिज इस बातको मान नहीं सकती? भला तुम्हीं बतावो,-तुम्हारे पास राजकुमार केशरीसिंह होने का सबूत क्या है?

कुमार — तुम अगर मुझे केशरीसिंह नहीं समझती हो तो,

उस सरायवाले से भी पूछ सकती हो उसके अलावे और भी बहुत से तुम्हे बताने वाले मिलेंगे। इतना कहकर उन्होने उसे एक थैली अशर्फ़ी की दी और कहा–तुम ठीक ठीक बतावो,— वह कौन है ? तुमसे क्या कहकर चली गई ? उनके साथ के सिपाही कहाँ गए ? तो मैं तुम्हे तुम्हारी लड़की की शादी के लिए इन दोनों अशर्फियों के ढेर से दूनी अशर्फियां दूँगा। पर्वतिया लालची तो थी ही,–उनसे उतनी अशर्फी को पा– उनकी बातें सुन उसका मिज़ाज ठण्डा होगया। उसने कुछ नर्मियत के साथ कहा–क्या तुम सचमुच श्यामनगर के कुमार केशरीसिंह हो ? मुझे अब भी विश्वास नहीं होता। अगर यह बात होती तो कुमारी मानिनी उस तरह डरकर कभी भाग खड़ी न होती। इसके जवाब में कुमार कुछ कहा ही चाहते थे इतने में–एकाएक बदहवास की तरह गुलाब ने आकर, बड़ी घबड़ाई हुई आवाज़ से कहा—'कुमार—कुमार, आप जल्द चलिए,–सारा खेल बर्बाद होगया, कुमारी मानिनी दुश्मन के पञ्जे में चलो गई। हमलोगों ने आपके पहिचानने में पूरा धोका खाया। अब एक मिनट की भी देर न कीजिए ? नहीं तो–आप उसको फिर कभी न पासकेंगे ? उसकी बातें सुन सबके सब घबड़ा उठे। कुमार ने उसको ढाढस देकर दलीप से जल्द घोड़ा लाने के लिए कहा। वह तेज़ी के साथ बाहर चला गया। उसके जाने के बाद कुमार ने गुलाब से पूछा— 'कहो,–कुमारी किसके पञ्जे में पड़ गई, बेला कहाँ है, तुम कैसे बचकर आई ?

गुलाब–कुमारी को आपके ऊपर मनोहर होने का शक़ हो आया था इसलिए हमलोग चुपचाप यहाँ से कटक की तरफ़

मैदानदिखलाई पड़ा जिसके बीचो-बीच एक बहुत बड़ा मकान बना हुवा था। जिसको देखतेही गुलाब ने कहा-बस, इसी खण्डहर के अन्दर मेरी प्यारी सखी को लेकर मनोहर आया है,—अब आप लोग होशियार होकर चलिए । उसकी ऐसी बातें सुन अनन्त आगे हो लिया और धीरे-धीरे लोग उस मकान के पास पहुँचे।

वास्तव में गुलाब ने जैसा कहा था-वह मकान नहीं खण्डहर निकला। उसके कई एक हिस्से-बहुतही पुराना होने की वजह से-बर्बाद हो गए थे। उसके इर्द-गिर्द ईंटो के ढेर लगे हुए थे। एक तरफ़ की दीवारही नहीं थी,—मगर तब भी उसके कई एक हिस्से अबतक साबूत थे। पास आने पर चारो आदमी घोड़े से उतर पड़े और अपने—अपने हाथ में ख़ञ्जर ले दबे पैर खण्डहर के अन्दर घुसे। इस समय कुमार का ध्यान किसी तरफ़ नहीं था, वह सिर्फ मानिनी को बचाने के लिये अपने को ख़तरे के मुंह में डाल रहे थे। अनन्त चौकन्ना हो इधर उधर देखता हुवा जा रहा था। उसको इस तरह गुलाब के कहने सेही जल्द बाज़ा के साथ बिना सोचे समझे आनेका अफ़सोस भी होरहा था। अभी ये लोग उस टूटे-फूटे खण्डहर के बीचो-बीच पहुँचे भी नहीं थे इतने में ऊपर से किसी औरत के चिल्लाने की आवाज़ आई, जिसको सुनते ही गुलाब ने बड़ी बेचैनी से घबड़ाकर कहा-हाय, यह तो मेरी प्यारी सखी के चिल्लाने की आवाज़ है,-मालूम पड़ता है वह दुष्ट उसके साथ कुछ ज्यादती करना चाहता था। यह सुनतेही कुमार अपने को सँभाल न सके-तेजी के साथ लपके हुए अन्दर की तरफ़ गए। चिल्लाने की आवाज़ बढ़ती

ही जारही थी। कुमार को इत्तफ़ाक़ से ऊपर चढ़ने की सीढ़ी मिलगई। फूर्त्ति के साथ उसी रास्ते ऊपर चढ़कर जहां से वह करुणाक्रन्दन आरही थी उसी के दरवाज़े पर पहुँचे। भीतर एक लम्बा चौड़ा कमरा था। उसके एक कोने में धुँधली सी रोशनी होरही थी। तीन चार टूटी-फूटी चारपाइयां इधर उधर पड़ी हुई थी। ज़मीन पर एक फटी हुई लम्बी दरी बिछी हुई थी। एक चारपाई के ऊपर हाथ-पैर बंधी हुई बेला पड़ी छटपटा रही थी ज़मीन के नीचे कुमारी मानिनी बदहवास की तरह पड़ी हुई थी-और उसका बाल पकड़े एक नौजवान उसे धमका रहा था। वह बिचारी उसी बदहवासी की हालत में चिल्ला चिल्ला कर—हाय, कुमार तुम्हारे ऊपर शक करने का मज़ा पा रही हूँ-कह रही थी उन तीनों के अलावे उस कमरे में और कोई नहीं थे।

यह देखते ही कुमार अपने को बर्दाश्त के भीतर रख न शके, उछल कर अन्दर चले आए-और उस नौजवान की गर्दन पकड़ जोर से एक धक्का दिया। वह नौजवान बड़ी मुश्किल से गिरते-गिरते बचा और उनसे लड़ने के लिए मुस्तैद होगया मगर-उनके पीछे-पीछे आए हुए उनके तीनों साथियों को देखतेही—घबड़ाकर दूसरी तरफ़ का दर्वाज़ा खोल उसके अन्दर घुसकर ग़ायब होगया। उसके अन्दर जातेही वह दरवाज़ा भी अपसे आप बन्द होगया। कुमार ने उस बात की कोई परवाह न की, उन्होंने जल्दी से मानिनी को अपनी गोदी में उठा लिया। मगर वह उस समय बिलकुल बेहोश थी। गुलाब ने जल्दी से बेला का हाथ-पैर खोल दिया-परन्तु वह भी अपने होश में नहीं थी। कुमार ने अनन्त की तरफ़ देखकर कहा-

मालूम होता है बेला भी बेहोश होगई है। तुमलोग उसे उठाकर ले चलो, मैं कुमारी को उठाए हुए चलता हूँ। अब यहां एक मिनट भी ठहरना ठीक नहीं है। दलीप, तुम मोमबत्ती जलाकर आगे आगे चलो। दलीप ने एक मोटे पलीते की मोमबत्ती जलाई। और सीढ़ी की तरफ़ बढ़ा। गुलाब और अनन्त ने बेला को उठाया। केसरीसिंह कमारी को उठाए हुए दलीप के पीछे-पीछे चले सीढी से उतर कर ये सब जहाँ घोड़ा छोड़ गए थे वहां गए, मगर चारो नदारत थे। दलीप ने खण्डहर के चारो तरफ़ घूमकर खोजा-परन्तु उनका कहीं भी पता न चला। आख़िर को अनन्त ने कहा-यह सब उसी मनोहर की शैतानी है,-अब यहाँ उन घोडों के पीछे बिलम्ब करना ठीक नहीं है-इसी तरह चले-चलें। किसी गांवमें पहुँचकर घोड़े किराये कर लेंगे। कुमार ने भी मंजूर करली, वे मानिनी को गोद में उठाकर आगे की तरफ़ बढ़े। अनन्त ने बेला को !उठा लिया। गुलाब के साथ-साथ दलीप मोमबत्ती हाथ में लिए हुए चलने लगा। थोड़ी देर में इन लोगों ने मैदान पारकर लिया-और जङ्गल पार करने का रास्ता खोजने लगे। संयोग से उन्हें एक छोटी सी पगडण्डी मिल गई। कुमार ने प्रसन्न हो कर दलीप से आगे चलने के लिये कहा और चारो आदमी बड़ी तेज़ी के साथ उसी रास्ते से चलने लगे। भूखे—प्यासे रात भर उसी तरह चलने के बाद वह जङ्गल तै हुवा, और सामने एक खूबसूरत कस्बा दिखाई पड़ा। उसे देखतेही कुमार ने कहा—बस, अब हम लोगों को वहां सवारी मिल जायगी। अभी उनके मुंह से इसका अन्तिम शब्द निकल भी नहीं पाया था, इतनेही में बाईं तरफ़ से किसी के-और साथही इस ढिठाई की सज़ा भी मिल

जायगी—कहने की आवाज़ आई। जिसको सुनतेही चारों ने चौंक कर उस तरफ़ देखा,—साथही नीली पोशाक से अपने तमाम बदन को छिपाया हुवा एक आदमी तेज़ी के साथ जंगल के भीतर भागता हुवा दिखलाई पड़ा।

# छठवाँ बयान ।
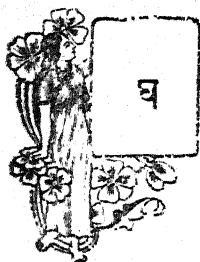
घण्टी के बजतेही घबराहट से उठ खड़ी हो रघुबर की तरफ़ देख कर आसमानी ने कहा—बस, अब मैं यहां एक मिनट भी ठहर नहीं सकती । महारानी ने मुझे याद किया है-मैं इस वक्त वहां न जाऊँगी तो हम दोनों के हक़में किसी क़दर भी अच्छा नहीं होगा ।

रघुबर-( हंसकर ) आसमानी,-तुम मुझे एक बच्चा समझती हो,-मैंने बहुतों को चरा देखा है, मुझे तुम चरा नहीं सकती हो, यह सब तुम्हारे इसारे से मैना की की हुई शैतानी है । महारानी इस समय किसी तरह से भी जाग नहीं सकती । अभी उनके जागने में चार घण्टे की और देर है । तुम बैठो, घबड़ावो मत, —मैं तुमसे अपने दिलकी दो एक बातें कहकर चला जाऊंगा ।

आस—नहीं, रघुबर मुझे मत रोको ! मैं इस समय रूक नहीं सकती । मेरा कलेजा जल रहा है । मैं सत्य कहती हूँ—कोई चालाकी करके तुम्हे धोका नहीं दे रही हूँ ?

रघु—माना: मैंने तुम्हारा कहा माना,—मगर तुम्हे इस वक्त घबड़ाने की कोई ज़रूरत नहीं है । मैं तुम्हे हरतरह से बचा लूंगा । मगर मेरे दिलकी बातों को कुछ देर के लिए और बैठकर सुनलो ।

आस—मैं हाथ जोड़ती हूँ रघुबर, किसी दूसरे वक़् फ़ुर्सत देखकर आजाना, मैं खुशी के साथ तुम्हारी बातें सुन लूंगी। इस वक़् मुझे मत रोको,—मुझे एक विवश अबला जानकर छोड़ दो।

रघु—मैं इस वक़् तुम्हे छोड़ दूं आसमानी,—तब तो मैं अपना काम बना चुका, अपने दिलकी बातें सुना चुका। नहीं-इस समय मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता। आज सालों के बाद यही तो एक अच्छा मौक़ा मिला है। तुम मुझसे नफ़रत करती थी, तुम मुझे फूटी आंखों से भी नहीं देखती थी। तुम्हे मेरी बातें सुनना पसन्द नहीं था,—तुम्हे मेरी खूबसूरती और नौजवानी का ज़रा भी ख़याल नहीं था। आज मैंने पाया है,—मैं अपने हृदय की बातें सुनाकर—अन्दरही अन्दर सुलगती हुई आगको बुझाना चाहता हूँ। बैठो अगर तुम बैठकर मेरी दो चार बातें न सुनोगी तो तुम्हारा मण्डा फोड़ दूंगा। फिर तो जानती हो,—तुम्हारी क्या हालत होगी? तुम्हारा वह प्रेमी किस मौत से मारा जायगा। आसमानी हतास होकर सामने की एक छोटी सी कोचपर बैठ गई। रघुबर ने फिर कहा—हां, जरा खुशी के साथ बैठो, यह हवाइयां मुँहपर क्यों उड़ाती हो मेरे दिल को खुश कर दो,—मैं तुम्हें साफ़ बचालूंगा।

आस—( रूंधे हुए गले से ) तो बतावो, तुम क्या चाहते हो?

रघु—क्या तुम्हे मालूम नहीं, मैं अपनी ज़बान से बताऊँ?

आस—हाँ हां, तुम अपनी ज़बान से बतलाओ, मुझे कुछ भी मालूम नहीं है।

रघु-तो सुनो, तुम्हें मैं साफ़ साफ़ बताता हूं। मगर-तुम्हारी घबड़ाहट देख कर मुझे रञ्ज होता है। इस तरह अपनी बातें सुनाने में तबीअत कैसे लग सकती है। तुम अपने चाँद से मुखड़े पर परेशानी का बादल मत आने दो।

आस-मैं घबड़ाई हुई नहीं हूँ रघुबर, तुम अपनी बातों पर आजाओ।

रघु-खैर, सुनो, तुम्हारी उमर इस समय सोलह सत्रह बरस की होगी,-जिस समय मैंने तुम्हें देखा था उस समय तुम ठीक पन्द्रह बरस की थी। तुम्हारी ग़जब ढानेवाली खूबसूरती को देख मैं पागल होगया, मगर लाचार, तुम्हें हासिल करने का कोई उपाय नहीं था। मैं अपना कलेजा थामकर रह गया। मैं लैला का मजनू बनकर अकेले तड़पने लगा।

आस-तुम अपनी बातों को जल्दही ख़तम करो, रघुबर!

रघुबर-मेरी बातें इस तरह जल्दी में ख़तम नहीं होसकती तुम कुछ देर के लिए जल्दी को ताक़ में रखकर सुनो,—यह एक दिल जले आशक की बातें हैं। हाँ-तो आसमानी! मैंने तुम्हे महारानी के साथ गाड़ी पर हवा खाते हुए देखा था। तुम्हारे साथ उनकी और भी कई एक सहेलियाँ थीं, मगर मेरी नज़र तुम्हारेही ऊपर लग गई, तुम्ही ने अपनी खूबसूरतो से मुझे पागल बना दिया। तुमने अपनी सूरत से बरसते हुए ग़ज़ब के नूर से मेरे ऊपर क़यामत ढा दिया। फिर तो मैं किसी काम का भी नहीं रह गया।

आस-अफ़सोस! तुमने तो अपनी दास्तान को बड़ी लम्बी चौड़ी करदी।

रघुबर-बरसों से दिलमें जमी हुई बातें लम्बी चौड़ी न होगी तो और क्या होगी। तुम उकतावो मत, उकताने में कुछ भी मज़ा नहीं है। हां तो आसमानी! उस तरह तुमने मुझे घायल कर दिया और मैं कोई तरकीब न देखकर भीतरही भीतर तड़पने लगा। तुम जानतीही हो-तुम तब भी अब भी बहुत बड़े रूतबे में हो। तुम्हें महारानी बहुत मानती हैं। मगर अफ़सोस, तुमने उन्हीं के साथ दग़ा किया। ख़ैर-मेरे दिल में रोज़ही वह आग भड़कती थी,-और मैं रोज़ही तुम्हे देख कर उस आगको बुझाने के लिए सदर फ़ाटक पर आया करता था इस तरह कई महीने बीत गए-मगर तुमने मेरी तरफ़ नज़र उठाकर नहीं देखा। आख़िर-जानतीही हो आसमानी,—इश्क़ की चक्की में पीसे हुए आदमी क्या नहीं कर डालते। मैंने अद्भुतनाथ से अपनी जान-पहचान बढ़ाई और कई महीने तक उसी की ख़िदमत में रहकर ऐयारी सीखी। अन्त को उसके कहने सुनने से मदनमोहनी ने मेरी पहुँच महारानी मायादेवी तक कराई।

आस—अब मेरी तबीअत इससे आगे सुनना नहीं चाहती।

रघु—तुम रञ्ज मत हो आसमानी,--अपने आशक़ की बातों में तो बड़ाही मज़ा आता है तुम क्यों विरक्त होती हो? सुनो,-मैंने महारानी की नौकरी क्यों की, सिर्फ़ तुम्हारे लिए,-मैं होते—होते महारानी का प्रेमी क्यों बना,—फ़क़त तुम्हारे लिए। इश्क़ ने—तुम्हारे इश्क़ ने मेरे दिमाग़ को ऊँचा पहुँचा दिया था,-मैं तुम्हे पाने के लिए हर तरह की तरक्क़ी कर रहा था। मैंने महारानी को अपने क़ब्जे में किया,-मगर अफ़सोस,

साल भर से लगातार मेहनत करने पर भी तुम्हे न पासका। तुमने भूल कर भी मेरे ऊपर मेहरबानी की निगाह न डाली। आज मुझे यह सुयोग मिली। आज मैं तुम्हारे पास अपने इश्क़की बातें सुनाने के लिए आसका। तुम रहम करो आसमानी, तुम मेहरबान बनो आसमानी, मैं तुम्हारे पर जीजान से मरता हुवा आशक़ हूं,-मैं तुम्हारे इस अलौकिक सौन्दर्य से भरे हुए मुखचन्द्र का एक सब तरह से वश में पड़ा हुवा चकोर हूं। तुम मेरे हृदय में धधकती हुई आग को बुझादो आसमानी!

आस—( घृणा से ) तुम अपने होश में भी हो रघुबर!

रघुबर—नहीं आसमानी मैं अपने होश में नहीं हूँ। मैं तुम्हारी लामिसाल खूबसूरती के नशे से बेहोश हूँ। तुम घृणा की नज़र से मत देखो,—गुस्से की लाली चेहरे पर आने मत दो,—मैं तुम्हारा चाहने वाला हूं। मैं तुम्हारी मालिकनी महारानी मायादेवी की मुहब्बत को लात मार कर तुम्हारी एक अदा के लिए जान न्यौछावर करने वाला हूँ। मुझे ज़बर्दस्ती अपने में घुलाकर जिस प्रेम ने मेरी आँखों पर—ज़बर्दस्त पट्टी बाँध दी है वह तुम्हारी घृणा, वह तुम्हारे गुस्से, वह तुम्हारी फिटकार से अपने को किसी तरह से भी अपनी जमी हुई जगह से हिला नहीं सकता। प्रेम को तुम भी जान गई हो,—मैं भी अच्छी तरह से जान गया हूँ। इसको जितना तुम दुतकारोगी उतनाही गहरा होकर अपने पास चिपकता जायगा। इसको पुचकारो, इसपर दया करो, इसको अपनावो। तुम्हे हर तरह का आराम मिलेगा। तुम तिलस्म में एकही कहलावोगी। तुम्हारा मुक़ाबला करने वाला कोई नहीं रह जायगा।

आस—मैं यह सब बातें बिलकुलही नहीं चाहती। तुम अब मेहरबानी करके इस वक्त मेरा पिण्ड छोड़कर अलग हो जावो।

रघुबर—तुम जल्दी मत करो आसमानी, मैं अलग हूंगा, जरूर अलग हूँगा, मगर—देखो मैं हाथ जोड़ता हूँ, पैर पड़ता हूँ,—मेरी दो एक बातें सुनलो,—मुझे जी भरके देख लेने दो तब तुम मुझे अलग करो। यों घता बताकर मुझे घुला घुलाकर मत मारो। मैं मर रहा हूँ, मुझे महारानी की बदौलत सब कुछ आराम है, मगर वे आराम मुझे तुम्हारे बिना कांटे की तरह खटकते हैं। सुना, यारी आसमानी! जब तुम मेरे हाथ किसी तरह से भी नहीं चढ़ी तो मैं तुम्हारे पीछे पड़कर मौक़े को ढूँढने लगा। अन्त में कल तुम्हे चन्द्रसिंह को देखने जाकर उसके ऊपर आशक हो, अपनी चालाकी से अपनी ऐयाराओं के हाथ उठाकर ले आते देखा। मुझे उससे चोट तो बड़ी गहरी लगी,—मैं कुछ देर के लिए रञ्ज, गुस्सा, घृणा से बदहवास सा हुवा मगर उसी दम मुझे खुशी भी बड़ी भारी हुई। तुम्हारे पाने की वह गहरी हवस,—जिसके कारण मैं रात दिन अन्दरही अन्दर घुला जाता था—अब एकाएक निकल सकने की उम्मीद हो आई। मेरा हवास दुरुस्त हुवा। मुझमें दूनी फूर्त्ति चली आई। मैंने समझा—अब तुम मेरे इश्क़ के जाहर होने पर जरूर मुझ से प्रेम करोगी।

आस—( झुंझलाकर ) यहाँ तुमने और भी ग़ल्ती का रास्ता पकड़ा रघुबर!

रघु—नहीं आसमानी, मैं इस वक्त बहुत ही ठीक रास्ते पर हूँ। तुम इस वक्त अपने बचाव को सिवाय मेरी मेहरबानी

के और कुछ भी नहीं कर सकती। मैं तुम्हारा पक्का आशक् हूं—मगर अपने काम में कभी भूल नहीं करता। मेरी प्यारी आसमानी! मैं अच्छी राहको पकड़ तुम्हारे पास आया हूं—अब तुम अपनी सोहबत में मुझे रखकर इतने दिनों से मेरे दिलके अन्दर जलती—बलती आगको—बुझा दो। दया करो, अपने आशक को बे मौत मत मारडालो। मुझे अपनी अनुपम रस भरी मुलाक़ात से तर कर दो, खुश करदो, जीवन दान दो। मैंने कल जो कुछ देखा,—इस कोठरी की बग़ल में जो कुछ है,—मेरे हृदय के अन्दर जो कुछ तुम्हारा भेद छिपा हुवा है—जिसके ज़ाहर होतेही तुम ज़रूर-ज़रूर तवाह हो जावोगी—उसको—उसकी बू तक को अच्छी तरह बन्द करदेने के लिए तुम मेरी प्रार्थना को, तुम मेरी कामना को, तुम मेरी अभिलाषा को खुशी—खुशी पूरी कर दो। मैं तुम्हे प्यार करूंगा, मैं तुम्हे कलेजे के अन्दर, छिपाऊँगा, मैं तुम्हे आंखों में बिठाऊँगा,—मैं तुम्हे इस तिलस्म में रत्ती भर भी तकलीफ़ होने नहीं दूँगा।

उसकी ऐसी बातें सुन आसमानी घवड़ा गई,—उसका बदन सिर से पैर तक कांप उठा,—ललाट पर पसीने की बूँदे झलकने लगी। होंठ थर थराने लगे। कलेजे पर धड़कन होने लगी। चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी। उसके हाथ पैर ढीले होगए,—वह सोचने लगी—हाय, आज मेरी किशमत ने मुझे किस दुष्ट, शैतान की ऐसी ओछी बातें—इस तरह सुनने पर लाचार कर दिया,—मैं इसके हाथ से अपने अमूल्य रत्न को कैसे बचा सकूँगी। यह मुझे विवश कर अपनी घृणित कामना को पूरा करना चाहता है। मैं ऐसा अब मरते दमतक भी नहीं कर सकती। कुमार घड़बाते होंगे,—सबेरे यह मेरे ऊपर कैसी

बला सवार हुई। वह इसी तरह बहुत सी बातें सोचकर चुप हुई। अपनी बातें खतम होने पर भी जब आसमानी ने कुछ जवाब नहीं दिया,—तब उसने बड़ी मुहब्बत से उसकी कमल की तरह कोमल हाथ को थाम,—धीरे—धीरे कहा,—आसमानी, मेरे हृदय की अधिष्ठात्री देवी आसमानी, क्या अब भी तुम मुझे मुहब्बत की निगाहों से न देखोगी? क्या अब भी तुम्हारे दिलमें रहम ने जगह नहीं पाई! देखो, मेरी तरफ़ देखो,—मेरी हालत पर ख्याल करो। मैं देखने में बुरा नहीं हूं, मैं चन्द्रसिंह से कम बहादुर नहीं हूँ। तुम कुसुमलता के आशक को एकदम अपने दिल से भूलजावो। उसे जहां तक होसके महारानी माया देवी के पास पहुँचा दो। वह तुम से खुश होंगी, वह तुम्हें इससे भी बढ़कर मानने लग जायँगी। वह उसे पाकर हमें भूल जायँगी। फिर तो हम दोनों आनन्द से जिन्दगी को किसी दूसरे मुल्क में जाकर बितावेंगे।

आसमानी—मैं ऐसा क्यों करने जाऊँगी।

रघु—इसके लिए आसमानी, इस तुम्हारे गुलाम के लिए आसमानी,—तुम अपने दिल से उसकी सोहबत का खयाल छोड़ दो। वह बहुत ख़तरे का मुकाम है। जान बूझकर अपने को आग के भट्ठे में गिराना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

आसमानी—मुझे क्यों तुम इस तरह से डराते हो?

रघुबर—मैं तुम्हें नहीं डराता आसमानी, मैं तुम्हारी भलाई की बातें कह रहा हूं। इतना सब कुछ मैं बक गया मगर तुम किस फेर में पड़ी हुई हो, क्या तुम्हारी अक्ल ने सब कुछ जानते-बूझते भी इस बारे में—अभी तक किसी तरह का फ़ैसला नहीं कर पाया है? तुम क्यों नहीं साफ़ साफ़ बोलतीं।

देखो-आसमानी, ! मेरी बातों को मानने में तुम्हे सब तरह का आराम है, मेरी बातों को इन्कार करने में तुम्हारी सब तरह की तबाही है। एक ओर का रास्ता पकड़तेही तुम्हे इस संसार में सच्चे आशक़ का प्यार मिलेगा, दूसरी ओर का रास्ता थामतेही तुम इस हीरे के तिलस्म तमाम निगाहों में ज़लील होगी, बेइज्ज़त होगी, तुच्छ समझी जाने लगोगी। वही महा-रानी,-वही मायादेवी जो रात-दिन तुम्हे अपनी बहन से भी बढ़कर मान, बड़ी मुहब्बत और बड़ी क़द्र तुम्हारे साथ पेश आती थी, तुम्हारी ज़रासी भी उदासी से अपने को फ़िक्र में डुबाती थी, तुम्हे ज़रा भी तकलीफ़ होने से वह तिलस्म को शिर पर उठाती थी, वही मफ़ली महारानी तुम से बुरी तरह पेश आवेंगी, तुम्हे गालियां देने लग जायँगी, तुम्हे एक अदनी अदनी लौंड़ियों से पिटवाने में भी न चूकेंगी। तुम्हारे सिर पर काले-काले भयंकर जल्लाद की शानपर चढ़ी हुई चमचमाती तरवार तुम्हारी गरदन के पीछे चमक उठेगी।

आस-हाय, मेरी क़िस्मत ने आज मुझे क्या दिखाया?

रघु-ज़रूर, आसमानी! तुम्हारी क़िस्मत ने आज तुम्हे एक अजब तमाशा दिखाया,-तुम इस समय बिहिश्त और जहन्नुम के दरवाज़े पर खड़ी हो। तुम अपनी खुशी से आराम भी भोग सकती हो और तकलीफ़ भी उठा सकती हो। हां! तो आसमानी सुनो, तुम अगर मुझ ऐसे आशक़ की बातों पर लात मार दोगी तो तुम्हारी यह कोमल बदन, जिसने होश सँभालने के बाद गुलाब के फूलों की भी मार खाई होगी, कठोर जल्लाद की फौलादी तलवार,-रात दिन शानपर चढ़ी हुई

तेज़ तलवार का झटका खाएगा,-जिससे तुम्हे सिर्फ तकलीफ़ ही नहीं, दर्दही नहीं, रञ्जही नहीं, अफ़सोसही नहीं, दुःखही नहीं पहुँचाएगा, बल्कि प्यारी आसमानी, सुनती हो, तुम्हें उस बेहद तकलीफ़ का अन्दाज़ा कराएगा जिसको इस संसार के समस्त पैदा होनेवाले मौत कहते हैं, काल कहते हैं, नेश्त नामूद कहते हैं, कज़ा कहते हैं, फ़ौत कहते हैं, मृत्यु कहते हैं, दुनियां से कूँच कर जाना कहते हैं।

आस-( कांपकर ) अफ़सोस, मेरे किस जन्म का पाप इस समय मेरे शिरपर सवार होता है।

रघु—तुम डर गई आसमानी ! हाँ यह डरनेही की बात है, यह ख़ौफ खानेही का माजरा है। यहां ख़तरेही का काम है। यह कँपकँपी पैदा कर देनेही का ख्याल है। यह जहर है, जहर से भी बढ़ कर हलाहल है। तुम कामलाङ्गी आसमानी, तुम चन्द्रमुखी आसमानी, तुम नाजुक बदन आसमानी तुम उस मौत की बे इन्तहा तकलीफ़ को किसी तरह से भी, किसी हालत से भी बर्दाश्त नहीं कर सकोगी। तुम्हारा दम उस जगह पहुँचने के पहलेही घुटने लग जायगा। तुम चिल्ला उठोगी -तुम्हारी आँखें आपसे आप बाहर होने लग जायँगी। तुम सख्त--पत्थर की तरह मुसीबत झेलोगी। मगर नहीं, अगर तुमने मुझे अपना आशक़ समझ कर मेरी बातें मञ्जूर करली तो तुम सब तरह से सुखी होगी। तुम्हारा कोई बाल भर भी नोक़शान नहीं कर पावेगा। तुम चैन से रहोगी, तुम्हारा यह प्रेमी भी, तुम्हारे ऊपर मरने वाला यह आशक भी इस तिलस्म में अपनी ऐयारी की शानी न रखने वाला यह मजनू भी हमेशा के लिए, तुम्हारी ताबेदारी

बजाने वाला गुमनाम हो जायगा। तुम्हे खुश करने के लिए कोई बात उठा नहीं रक्खेगा। क्या तुम अब भी, मेरी दिलवर आसमानी,—मेरी आरजू को पूरी न करोगी ? मेरी बातों को क़बूल न करोगी ? करो, आसमानी ! मेरे लिए नहीं तो भी अपनी जवानी के लिए, अपनी ज़िन्दगी के लिए क़बूल करो ?

आस-( रुखाई से उसकी तरफ़ देखती हुई ) लेकिन रघुबर ! अगर तुम्हारी कही हुई इन सब वाहियात बातों को इंकार कर दूँ तो ? तुम्हारी आरजू मिन्नत को नफ़रत की ठोकरों से हटा दूँ तो ? तुम क्या करोगे ?

रघु—क्या करूँगा ? मैं जहाँतक समझता हूँ प्यारी आसमानी ! तुम अपनी खिलकर सुवास से भरी हुई कोमल जिन्दगी के लिए ऐसा हर्गिज नहीं कर सकती।

आस-अगर मैं इसकी कुछ भी परवाह न करूँ तो तुम मेरे साथ कैसे पेश आवोगे ?

रघुबर—मैं कैसे पेश आऊँगा ? अगर तुमने मेरी बातें इनकार की ठोकरों से हटा दी तो—बेरहम आसमानी ! मैं भी तुम्हारे साथ बेरहम बनूँगा। मैं भी लाचार होकर तुम्हे और तुम्हारे उस मुहब्बत की चीज़ को बर्बाद करने के लिए कमर कसूँगा और फिर तुम्हे वही मुसीबतें झेलनी होगी जिसके सदमे को बर्दाश्त करने की ताक़त तुम में ज़रा भी नहीं है।

आस—( नफ़रत से पैर पटककर ) क्या, रघुबर ! तुम इसी बीरते पर इसी तरह के घृणित व्यवहार के भरोसे पर—मेरे घर में, मेरे इस एकान्त कमरे में घुस आए थे—इसी नीच विचार को अपने दिल में—जगह देकर मेरी सोहबत की इच्छा

रखते थे ? इसी ख्याल को, इसी बूरे ख्याल को अपने हृदय में भरकर तुम मुझे बार बार मेरा आशक होना कहते थे। तुम्हे ऐसा कहते शरम नहीं आती है। इसी दुष्टता को साथ लेकर मेरे प्रेमी होने का दम भरते थे ! अफ़सोस— रघुबर ! बड़े अफ़सोस की बात है । रघुबर ! तुम इश्क़ को इज्ज़त नहीं करते हो, तुम इश्क़ के नाम पर धब्बा लगाते हो तुम इश्क़ को बुरी तरह बदनाम करते हो।

रघुबर—( कुछ झेंपता हुवा हाथ जोड़ कर ) नहीं आसमानी, ! नहीं, मैं इश्क़ को ज़लील नहीं करता । मैं इश्क़ की इज़्ज़त रखना जानता हूं, मगर माफ़ करना मेरी दिलवर, — मैंने यह बातें सिर्फ़ तुम्हे अपने ऊपर मेहर्बान बनाने के लिए कहा था। मैं सब कुछ तदबीर करके हार गया, — मेरे पास यही एक औज़ार अनायास आगया, इसी लिए इसको काम में लाकर मैंने तुम्हारे ऊपर कामयाब होना सोचा। तुम रञ्ज मत हो, ? मैं तुम्हे भूलकर भी किसी तकलीफ़ में पड़ने न दूंगा। मेरा विचार ऐसा नीच नहीं है । मैं बुरे के सङ्ग बुरा हूँ और अच्छे के सङ्ग अच्छा भी हूँ । तिसपर जानी तुम तो मेरी जान हो। मैंने जो कुछ भी कहा, उसे भूल जावो और मुझे अपने पतले पतले लाल होठों का रस पान करने देकर अमर बनावो ! उसकी ऐसी बातें सुन आसमानी एक गहरे सोच में पड़गई। उसको कुछ देर के लिए अपने तनोबदन की भी ख़बर नहीं रही। उसकी पलकें बार बार गिरने से रूक गई। कुछ देर के बाद उसके दिलमें अनायासही एक बात आगई जिससे उसने चौंककर अपने सिर को उठाकर रघुबर की तरफ़ देखा । उसकी नज़रों में इस समय

हलकी हंसोके साथ-एक गहरी गुलाबी की रेखा आई हुईथी इसका चेहरा एक भयानक छिपी हुई चमक से चमक रहा था। उसने इन सबों को दबाने को कोशिश करते हुये, कुछ मुस्कुरा कर कहा—रघुबर, मैं इस समय सब तरफ़ से देखती हूं, रघुबर। मैं मुसीबत में हूं, मेरा बचाव किसी तरह से भी नहीं है इसलिए। फ़क़त इसलिए, मुझे तुम्हारी सब कुछ बातें माननी पड़ेगी। मैं खुशी से नहीं तो भी किसी तरह से मानूंगी। कहो, तुम इस समय क्या चाहते हो ? उसकी ऐसी बातें सुन, रघुबर मारे खुशी के उछल पड़ा और मस्ती में आकर आसमानी के दोनों हाथों को दबाता हुवा कहने लगा—अहा ! आज मैं दुनियाँ में सबसे बड़ा भागवान् हुवा। प्यारी तुमने आज इस अमृत से सनी हुई बातों को कहकर एक सच्चे आशीक़ की जान बचाई। अब मुझे किसी की परवाह नहीं है। मेरी सालों की मुराद बर आई इतना कहकर वह उसी के पास बैठ गया और बैठतेहीं एक हाथ उसकी गरदन पर डालकर उसे बड़ी मुहब्बत के साथ अपनी तरफ़ खींचा। उसके ऐसा करते ही आसमानी का दम घुटने लगा। वह अपने को उसके पञ्जे में देरतक रख न सकी, बिजली की तरह उसकी गोद से तड़प—उससे कुछ दूर जा खड़ी हुई।

# सातवाँ बयान

कुमार महेन्द्रसिंह को उस तरह तलवार छीन—छोटी महारानी कुमुदिनी के सामने ललकार कर खड़े होते ही एका एक कमरे भरकी रोशनी गुलहोगई। साथही चारो तरफ़ से ठठाकर हंसने की आवाज़ आई। कुमार ने हाथ बढ़ाकर कनकलता को टटोला—मगर वह उस जगह मिली नहीं। उन्होने ज़ोर से उसका नाम लेकर पुकारा—लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। आख़िर को वे उसी अंधेरे में टटोलते हुए—कुमुदिनी के कोच का तरफ़ बढ़े। अभी अन्दाज़न दो कदम भी न बढ़े होंगे-इतने में उनके नीचेकी ज़मीन हिलती हुई मालूम पड़ी और एक खटके के साथ बड़े बेग से झुलगई। कुमार अपने को किसी तरह सँभाल न सके और लुढकते हुए नीचे अँधकार में गिरपड़े। नीचे गुदगुदेदार कोई चीज़ बिछी हुई थी—जिससे कुमार को किसी तरह की चोट न आई, मगर झोके से गिरने के कारण उनके हाथसे तरवार छटक कर दूर जा गिरी वे उसीको खोजने के लिए बैठकर इधर उधर टटोलने लगे परन्तु गहरा अन्धकार के कारण वह उन्हे नहीं मिल सकी। खोजते खोजते उनका हाथ एक ऐसी गोल चीज़ पर पड़ी जो पत्थर की तरह ठोस मालूम पड़ती थी। उन्होने उसको हिलाना चाहा इतने ही में एका एक उनके

बदनपर झनझनाहट मालूम पड़ी जिससे उन्होने उसको छोड़ दिया। इसके बाद फिर वे टटालते हुए आगे बढ़े। वह ज़मोन बहुत चौड़ी मालूम पड़ती थी। इसी तरह बैठे–बैठे घूमते हुए उनका हाथ एक सङ्गीन—चिकनी दीवार पर पड़ी। वे उसी के सहारे उठे और किसी तरफ़ निकलने का दरवाज़ा ढूंढने लगे। टटोलते—टटोलते उन्हे एक खुला दरवाज़ा मिला जिसके मिलतेही वे कुछ सोच विचार किए बिनाही उसके अन्दर घुस गए। अभी ये दोही चार क़दम भी आगे न बढ़ पाए थे,—इतने में दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ आई,-साथही छत पर एक तेज़ रोशनी होगई, जिससे वहां की हर एक चीज़ साफ़—साफ़ दिखलाई पड़ने लगी।

रोशनी के सबब से कुमार ने देखा-वे इस समय एक बहुत बड़े कमरे में थे। उसके तीन ओर दो दो दरवाज़े थे,—एक ओर एकही दरवाज़ा। उसकी दीवार सङ्गमरमर की बनी हुई थी और ज़मीन संगमूसा से पाटी गई थी। कमरा सामानों से खाली था। उसके संगीन दीवारों में बीसों जगह बड़े बड़े सूराख बने हुए थे—जिनमें से होकर बाहर की ताज़ी ताज़ी हवा आती हुई निकल जाती थी। जिस ओर एकही दरवाज़ा था, कुमार उसी ओर बढ़े। ज्यों ज्यों इनका क़दम ज़मीन पर पड़ता जाता था,-त्यों त्यों छतपर एक एक तेज़ रोशनी होती जाती थी। दरवाज़ा के पास पहुँचते बीसों रोशनी होगयी। दरवाज़े की कुण्डी में ताला लगा हुवा था। कुमार ने उसको ऐंठ कर तोड़ डाला और दोनों पल्लों पर धक्का देकर उसे खोला। उसके खुलतेही अन्दर से तबीअत को मस्त कर देने वाली एक तेज़ गुलाब की खुश्बू का झोंका आया। जिससे

कुमार की परेशानी कुछ देर के लिए उनसे दूर होगई। वे उसके अन्दर आए। उनके अन्दर आतेही वह दरवाज़ा आपसे आप बन्द होगया। कुमार ने उस कमरे के अन्दर से इस कमरे के भीतर अंधेरा सा देखा था मगर इनके अन्दर आकर दर-वाज़ा बन्द होतेही कई जगह से गैस की तरह रोशनी होकर कमरा जगमगाने लगा। उस रोशनी में उन्होंने देखा—वह कमरा पहले कमरे के बनिस्पत कुछ छोटा तो जरूर था मगर हर तरह के पेशकी चीज़ों से सजा हुवा था। चारों तरफ मेज़, कुर्सी, कौच क़रीने से लगे हुए थे। संगमरमर की चिक-नी दीवारों पर बड़ी—बड़ी क़द आदम तस्वीरें लगी हुई थीं। उसके नीचे चार चार हाथ छोड़ कर बड़े—बड़े हलब्बी आयना जड़े हुए थे। चारो तरफ़ बारह खिड़कियां थीं। बीचो बीच एक हाथी दांत का बना हुवा टेबुल पर एक निहायतही खूबसूरत हाथ भर की ऊँची सन्दूक़ रक्खी हुई थी,-जिसके सामनेही एक संग मरमर की चौकी पर एक बड़ीही खूबसूरत कमसीन औरत बैठी हुई ग़ौर से उस सन्दूक़ की तरफ़ देख रही थी।

उस औरत को देखतेही कुमार चौंक उठे, मगर वह ज्यों की त्यों उसी तरह से बैठीही रही। कुमार धीरे, धीरे उसकी तरफ़ बढ़ने लगे। अभी वे तीन चार क़दम ही बढ़ने पाए थे इतने में एक खटके के साथ उस सन्दूक़ का पल्ला खुला और उसमें से बहुतही सुरीली तानके साथ एक अजीब तरह का बाजा बजने लगा। जिसकी मीठी, दिलको लुभाने वाली आवाज़ ने कुमार को हद से ज्यादा मश्त कर दिया। वे उस फ़न के उस्ताद थे। उसके बँधे हुए ताल, स्वरों को सुन उनका

दिल उसकी तरफ़ खींचा गया। वे क़दम बढ़ाते हुए उस औरत के पास पहुँचे, मगर तब भी उसने उनकी तरफ़ नहीं देखा। उन्होंने उसको गौर से देखने के बाद–उसकी लामिसाल खूबसूरती पर मुग्ध होकर कहा–'माफ कीजिएगा मैं जान बूझ कर इस कमरे में नहीं आया हूँ, मुझे ज़बर्दस्ती फंसकर रास्ता खोजते हुए आना पड़ा है, होसके तो आप मुझे बाहर निकलने का रास्ता बता दीजिए ?' मगर उसने कुछ भी जवाब नहीं दिया। उन्होंने दुबारा पूछा, लेकिन तब भी वह कुछ न बोली अन्त को कुमार ने कुछ झुँझलाहट के साथ जरा जोर से कही क्यों आप बहरी और गूँगी तो नहीं हैं ? मगर इस पर भी वह उसी हालतही से बैठी रही, जिस हालत में पहले वह थी, उन्हे अब कुछ शक़ हुआ। इधर—उधर देख, उन्होने हाथ बढ़ाकर उसके हाथ को पकड़ा। पकड़तेही उन्हे मालूम होगया कि वह एक पत्थर की मूर्त्ति है। वे अपने धोके को ख्याल कर आपही हँसने लगे, और एकाएक उनके मुँह से उस संगतराश की तारीफ़ निकल पड़ी, जिसने इसको जान डालने के सिवाय सब तरह से सच्चा दिखला कर धोका दिलाने में कोई कोर कसर उठा नहीं रक्खी थी।

कुमार बाजे की सुरीली आवाज़ को भी सुनते जाते थे, और उसको भी जी भरकर देखते जाते थे। उन्होंने ऐसी खूबसूरत औरत कभी नहीं देखी थी। अभी वे बहुत देर तक उसी मूर्त्तिको देखते रहते मगर एकाएक उस बाजे की सुरीली आवाज़ बन्द होगई और उसमें से "कुमार,—मेरे प्यारे कुमार ! तुम मुझे याद कर यहां तक तकलीफ़ उठाते हुए आए हो, तो, एक मिनट के लिए सामने

की चौकी पर बैठ जावो, मैं तुम से अपने दिल में लगी हुई दो एक बातें करूंगी। अबला हूं, असहाया हूं, ग़रीब हूं,-मेरी बातें सुनकर अगर तुम्हे रहम आवे तो मुझे अपनावो" कहने की आवाज़ आई। कुमार को यह सुनकर बड़ाही ताज्जुब हुवा, उन्होंने इस मूर्ति की तरफ़ भी देखा, मगर वह ज्यों की त्यों बैठी हुई थी। उन्होंने फिर बाजे की तरफ़ देखा। उसके अन्दर से आवाज़ आई—कुमार, आपको ताज्जुब मालूम पड़ रहा होगा। मगर ताज्जुब करने की कोई ज़रूरत नहीं, यह तिलस्म है, यहाँ बड़ी-बड़ी असम्भव बातें हुवा करती हैं। आप बैठ जाइए,—उसी की बग़ल में बैठ जाइए, मैं आपको बहुत सी बातें सुनाऊंगी। कुमार बैठे नहीं, खड़ेही रहे। कुछ देर के बाद उसमें से फिर आवाज़ आई "कुमार आप मेरी प्रार्थना को स्वीकार नहीं करते, बैठ जाइए, बैठ जाइए, मेरी क़सम है बैठ जाइए।" कुमार तब भी न बैठे, अन्त में आवाज़ आई,-'कुमार आप इतने बड़े वीर होकर डर रहे हैं, डरिए मत, बैठ जाइए, अगर आप नहीं बैठते हैं तो मुझे लाचार होकर आपको ज़बर्दश्ती बैठाना होगा।' उसकी ऐसी बातें सुन कुमार को बड़ाही कौतूहल हुवा और वे उस चौकी पर मूर्त्ति के पास बैठाही चाहते थे इतने में सामने का दरवाज़ा बड़े ज़ोरों से खुला और उसमें से एक हसीन कमसीन औरत ने आकर बड़ी घबराहट के साथ कहा-कुमार, आप भूलकर भी इस चौकी पर न बैठिएगा, नहीं तो आप बड़ी भारी मुसीबत में फँस जायँगे।

उसकी बातें सुन कुमार सहम गए और उसको बड़े ग़ौर से देखने लगे। वह औरत अद्वितीय सुन्दरी थी। उसकी सुन्दर-

ताई के सामने उनकी आँखें झपकने लगी। वे बार बार लल-चाई हुई निगाह से उसकी तरफ़ देखकर दिलही दिलमें मुग्ध होने लगे। उस बेजोड़ हसीन नाज़नी की उमर इस समय सोलह सत्रह बरस से ऊपर की न होगी। उसकी सुघराई, उसका सुडौल पन, उसकी खूबसूरती उसका रंगढङ्ग, उसकी नज़ाकत, उसका डोल-डौल, उसकी सादगी, उसका बाँकी पन, उसकी क़द का देखकर बड़े-बड़े जितेन्द्रियों का दिल भी उसकी मुट्ठी में होजाता था। बारीक़ नज़रों से जांचकर देखने में वह अभी तक कन्दर्प की कालीगरी से बने हुए खूबसूरत पञ्चरंगी उद्यान में पहुँची हुई मालूम नहीं पड़ती थी, न यही मालूम पड़ता था कि उसकी-रस से भरी हुई अत्यन्त सुन्दर कली को, सुवास से अठिलाने वाली मन्द—मन्द हवा ने गुद-गुदाकर खिलाती हुई किसी रसिक भ्रमर का निगाह लड़ाने का मौक़ा नहीं दिया था। न उसकी अनमोल जवानी की गठडी पर किसी लालची ने लालच में पड़कर हाथ बढ़ाने की नीयत ही की थी। न उसके सौन्दर्य्य से चमकता हुवा खज़ाने की चौकसी करने वाली बड़ी बड़ी कमल के दल की तरह लम्बी आंखों के नीचे किसी किश्म की रेखा मदन के मश्ताना पन की उतराई का रंगही दिखलाई पड़ता था। उसका गद्राया हुवा जोबन, समुन्दर के लहरों की तरह लहरा रहा था। कुमार उसको देखते-देखते भौंचक्के से होगए, उनके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। उनकी ललचाई हुई नज़र उसी के ऊपर जमगई। वे उसके ऊपर आशक हो एक टक देखने लगे। उन्हे ऐसा करते देख-उस कन्दर्प के दर्पको दलन करने वाली कामिनी ने कुछ सिर झुकाते हुए कोकिल कण्ठविनिन्दित स्वर से कहा—'कुमार' आप धोके में पड़ाही चाहते थे,-यह बाज़

इसी तरह सबको धोके में डालकर फँसाता है। अगर आप इसके कहने में आकर इस चौकी पर बैठ जाते तो,-यह चौकी उलटकर आपको नीचे के तहखाने में गिरा देती और आप कुमुदिनी के कब्जे में चले जाते। फिर तो वह दुष्टा जैसा कहती वैसाही आपको करना पड़ता।

कुमार—तब तो आपको मैं किस मुँह से धन्यवाद दूँ?

वह—जी नहीं, मुझे किसी मुँह से भी धन्यवाद देने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं स्वयं आपको धन्यवाद देती हूँ कि—आप ख़तरे से बचगए।

कुमार—यही तो मैं भी कह रहा हूँ कि मैं ख़तरे से बच गया तो किसकी वजह से? किसने आकर मुझे ख़तरे से बचाया? इसके धन्यवाद का हक़ किसको है? ख़ैर यह तो बताइए-आप कौन हैं, और इतनी बड़ी मेहरबानी आपने मेरे ऊपर क्यों की?

वह—आचल से आंखों को पोंछती हुई मैं एक दुखियां हूँ, मैं एक असहाया हूँ,-मैं एक सुखों से जबर्दश्ती दूर की हुई अबला हूँ?

कुमार-मगर आपकी सूरत तो आपको यह सब होने की बाते नहीं बतलाती है?

वह—(रोती हुई) बेशक न बतलाती होगी। मगर कुमार आप जानते नही हैं, कि इस दुखिया के दिलमें कितने दुःखों का बोझा पड़ा हुवा है और यह अपने उद्धार के लिए किस किस तरह की मुसीबतें झेल कर आप के पास तक आई है। आप जब मेरा ताज्जुब से भरा हुवा हाल सुनलेंगे तो आपको भी निहायत ही दुःख होगा।

कुमार—तो आप जल्द ही अपना हाल मुझे बतलाइए ?

वह—मैं बतलाऊँगी—बतलाने ही के लिए तो यहां तक मैं आई हूँ, मगर यहाँ नहीं चलिए मैं आपको लेकर एक हिफ़ाजत की जगह पर चलती हूं, जहां पहुँचने के बाद मैं अपना हाल आपको निश्चिन्तिता के साथ बतलाऊँगी। जिसको सुन कर आप हम लोगों के ऊपर इन्शाफ करेंगे और इन सब दुष्टों को उचित दण्ड देकर, हम लोगों को दुःख की भयङ्कर नदी से निकाल अपनी जगह पर सुख के साथ रहने की आज्ञा देंगे।

कुमार—( चौंक कर ) क्या आप लोग कई आदमी हैं ?

वह—जी हाँ, मेरे मा बाप भी इसी तिलस्म के एक बड़ेही विकट जगह पर फँस कर अनेकों तरह के दुःखों को भोग रहे हैं !

कुमार—मगर आप तो बड़ी आज़ादी के साथ घूम रही हैं। मालूम पड़ता है कि आप यहां की देख—रेख करने वाली ही हैं।

वह—( आँखों को पोछ कर ) हाँ, एक ज़माना ऐसा भी था, मगर इस वक्त मैं लाचार हूं। मेरे हाथ पैर मजबूर हैं। मेरे पास तिलस्म की वह किताब नहीं है, जिससे मैं कुछ कर सकूं। ख़ैर—मैं मा-बाप के साथ उसी तरह के दुःखों को भोग रही थी मगर अनायास आज दो महीने से मैं इस तरह उन लोगों से अलग हाकर इधर—उधर घूम रही हूं।

कुमार—आप उन्हे भी क्यों नहीं इस तरह घुमाने ले आती ।

वह—न मैं अब उनके पास जा सकती हूं, न वेही मेरे पास

आसकते हैं। ख़ैर चलिए, दूसरी जगह जाकर मैं अपना पूरा हाल आपको सुनाऊँगी। इतना कहकर वह दरवाजे की तरफ़ घुसी। कुमार भी उसके पीछे-पीछे हो लिए। उसने कई एक कमरे को लांघने के बाद एक सुरंग में घुस कर, इनका हाथ पकड़ लिया और आगे आगे चलने लगी। सुरंग गहरे अन्धकार में मिली हुई थी। कुछ देरतक धीरे-धीरे चलने के बाद वह एक जगह जाकर रुकी और किसी खटके के साथ एक दरवाजे का खोला। अन्दर भरपूर रोशनी हो रही थी। उस रोशनी में कुमार ने देखा, उसके भीतर मामूली ढंग से सजा हुवा एक छोटा सा कमरा था। वह कुमार को लेकर उसके अन्दर आई और भीतर से एक खूंटी को खींच दरवाज़ा बन्द करती हुई कुमार को एक कोंच पर बैठा कर कहने लगी अब यहाँ इस वक़्त कोई नहीं आसकते,-आप मेरा हाल निश्चिन्तिता के साथ सुन लीजिए! यह सुन कुमार ने उसको भी अपने पासही बैठाया। वह ज़रा शर्माती हुई बैठी। कुमारने देखा—उसका भोली भाली, सूरत चांद की तरह चमक रही है। उसकी झलकें बल खारही हैं। उसकी कटीली आँखें दिल में चुभी जाती है। उन्होंने कनकलता को एक दम भूल सा दिया। वे उसकी खूबसूरती के सामने उसे पासंगा भी नहीं समझने लगे। उनकी फिर टकटकी बंध गई। कुछ देर के बाद उन्होंने कहा—हां तो आप सबसे पहले अपना नाम बताइए,—फिर अपना हाल बताइएगा? यह सुन उसने कहा—मेरा नाम नलिनी है!

कुमार—[ चौंक कर ] नलिनी है! क्या आप इस तिलस्म के महाराज बलदेवसिंह की लड़की नलिनी तो नहीं हैं!

नलिनी—जीहाँ, मैं उन्हीं अभागे महाराज बलदेवसिंह की अभागिनी लड़की नलिनी हूँ। मगर आपने यह सब बातें कहाँ से सुनीं ?

कुमार—मैंने इन्ही दोनों महारानी की सखियों से सुनी है। मुझे आप लोगों का हाल सुन-सुनकर बड़ाही अफ़सोस होता था। तिलस्म से इतने बड़े वाकिफ़कार होकर महाराज बलदेवसिंह कैसे फंसे ? मुझे यह भी बड़ाही ताज्जुब मालूम पड़ता है।

नलिनी—जब ग्रहदशा शिर पर सवार हुवा करती है तो बड़े बड़े की अक्ल भी मारी जाती है। वही हाल मेरे पिताजी का भी हुवा। आप वंशिया का हाल तो सुनही चुके होंगे। अद्भुतनाथ और नब्वाब नशीरुद्दीन के जरिए से वह दरोगा अच्युतानन्द के यहां घुसा, और उसने उन्हे फाँस कर हम लोगों को भी धोके में डाली। उसी के जरीए से मायादेवी यहां की महारानी कहलाने लगी सुनती हूँ यही हाल कटक में भी हुवा। महामाया ने वंशिया और अद्भुतनाथ की मदद लेकर महाराज श्यामसुन्दरसिंह को मय उनकी औरत और लड़की के कैद किया हुवा है। इन सब दुष्टों के कारण हम लोगों ने आज ६ बरस से बड़ी बड़ी तकलीफें को भोगा—जिसको मैं अपनी ज़बान से कह नहीं सकती।

कुमार—[ हमदर्दी के साथ ] आप के माता-पिता कहाँ कैद हैं ?

नलिनी—इस तिलस्म का सोलहवाँ दर्जा बड़ाही ख़तरनाक समझा जाता है। वहाँ सिवाय आप दोनों भाइयों के और जो कोई भी पहुँचेगा—फिर निकल नहीं सकेगा।

वंशिया ने मायादेवी से मिल कर हम लोगों को वहीं क़ैद कर दिया था, इस लिए मेरे माता-पिता वहीं कैद हैं।

कुमार—आप कैसे छूट कर आईं ? आपको किस तरह से आज़ादी मिली।

नलिनी—वह दर्जा एक चहार दीवार से घिरा हुवा है। उसके अन्दर एक छोटा सा बाग़ है। जो जाकर वहां फंसता है वह उसकी दीवार को छू नहीं सकता है। उसके अन्दर कई एक छोटे छोटे बङ्गले भी हैं दो। महीने के करीब हुवा, मैं घूमती फिरती एक बँगले के अन्दर गई। संयोग से-वहां मुझे एक खुला दरवाज़ा मिला-जिसमें कौतूहल वश मैं घुसपड़ी,-घुसते ही वह दरवाज़ा बन्द हुवा और मैंने उसको खोलना चाहा मगर वह किसी तरह से नहीं खुला। मैं बहुत ही घबड़ाई रोई, चिल्लाई,-परन्तु वैसा करने से क्या हो सकता था। आख़िर को मैंने कहीं निकल जाने का रास्ता खोजा, मुझे एक सुरंग मिली। मैं उसी सुरंग में धंस पड़ी। घण्टे भरतक चलने के बाद—मैं एक सीढ़ी के रास्ते से ऊपर आई। देखा, वह एक बड़ी इमारत थी। मैंने एक खिड़की से झांक कर नीचे की तरफ़ देखा तो वही सोलहवें दर्जे की बाग़ दिखलाई पड़ा-जहां हम लोग कै़द थे। साथ ही मैंने अपने माता-पिताको भी नहर के किनारे बैठे देखा। मैंने वहीं से उनलोगों को पुकारा। वे दोनों मेरी आवाज़ सुनतेही खिड़की के नीचे आए। मैंने अपना सारा हाल कहा इसके बाद उसी खिड़की से उतरने के लिए ज्योंही मैंने हाथ बढ़ाकर उसके जंगले को छूवा,-त्योंहीं बेहोश होकर गिर पड़ी। होशमें आने के बाद वहां से उतर कर नीचे जाने की बहुत सी
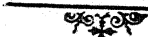
तरकीबें की मगर कुछ भी न होसका, आखिर को हारकर मैं घूमती फिरती यहां चली आई।

कुमार-मालूम पड़ता है, आप तिलस्म की बहुत सी हालातों से वाकिफ़ हैं?

नलिनी—जी हां, सिवाय सोलहवें दर्जे के मैं तिलस्म का एक—एक हाल जानती हूँ—इसीसे तो मैं रोज़ उस इमारत में जाकर माता पिता का दर्शन भी कर लेती हूँ, और छिपे-छिपे यहां आकर इधर-उधर घूमती हुई आपको भी देख जाया करती हूं।

कुमार—अब परमात्मा चाहेंगे तो आपके माता पिता को जल्दही छुटकारा मिलेगा।

नलिनी—जी हाँ, उस सोलहवें दर्जे के टूटने का समय भी बहुत करीब आगया है। जिस दिन वह टूटेगा—उसी दिन मेरे माता-पिता भी आज़ाद होंगे। साथही आपको इन सब दुष्टों की कार्रवाई भी मालूम होजायगी। इसके जवाब में कुमार कुछ कहा ही चाहते थे, इतने में छतपर से कुछ घड़घड़ाहट की आवाज आई जिससे दोनों चौंक उठे। नलिनी ने कुमार का हाथ पकड़ कर कहा—मालूम होता है कोई हम लोगों को गिरफ्तार करने के लिए आ रहा है। अब यहाँ ठहरना ठीक नहीं है चलिए मैं आप को एक दूसरी जगह ले चलती हूँ। इतना कह कर उसने जल्दी से दीवार पर एक रास्ता पैदा किया और कुमार को साथ लेकर उसी के अन्दर चली गई। भीतर गहरा अन्धःकार था। नलिनी ने कुमार का हाथ पकड़ लिया इसके बाद तेजी के साथ वे दोनों एक तरफ़ जाने लगे। पाँच सात मिनट तक लगातार चलने के बाद

वे दोनों एक कमरे में पहुँचे जहाँ काफी रोशनी हा रही थी। कुमार ने उसी के सहारे उसके बीचो बीच एक कूवां बना हुवा देखा नलिनी ने वहाँ पहुँचतेही कुमार से कहा—मैं आपको इसी कूँएँ के रास्ते से एक हिफाजत की जगह पर ले चलती हूं, आप बेखौफ़ होकर मेरे पीछे कूद पड़िएगा। इतना कह कर वह कूँएँ की जगत पर चढ़ी और उसी दम कुएँ के अन्दर कूद पड़ी कुमार भी उसकी देखा—देखी कूएँ पर चढ़ निश्चिन्त मनसे कूद कर ग़ायब होगए।

# आठवां बयान।
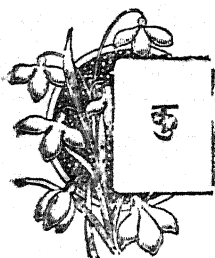
कुमार रणधीरसिंह ने उन सब नक़ाबपोशों को इस तरह आकर वासन्ती को पकड़-अपने को घेरते हुए देख-सावित्री को ढाढ़स देते हुए, एक-एक नक़ाबपोश को पकड़—पकड़ कर गेंदकी तरह कमरे में फेंकने लगे उन सबों की नीयत कुमार को चोट करने की नहीं थी, सिर्फ पकड़ने की थी इसलिए वे सब तरवार का वार नहीं करते थे। उनलोगों का मतलब कुमार भी समझ गए। इसलिए वे भी उनलोगों को पकड़-पकड़ कर ज़ोर से नहीं फेकने लगे। वे सब नक़ाब पोश बार-बार गिरकर कुमार को पकड़ने के लिए इस तरफ़ बढ़ते थे। मगर उन लोगों का किया कुछ भी नहीं हो सकता था। उधर सरस्वती ने अपनी चालाकी से वासन्ती को पकड़े हुए नक़ाब पोशों को ज़मीन पर गिराकर उसे आज़ाद कर दिया था। अब ए लोग सावित्री को छोड़ तीनों मिलकर उन नक़ाबपोशों को निकाल बाहर करने की कोशिश कर रहे थे। इतने में-एकाएक कमरे के अन्दर तोप के दगने की सी आवाज़ हुई और तेज़ी के साथ कमरे भर में एक काले रंग का धूँवा फैल गया जिससे एक दूसरे की नज़र से छिप गए। उसी समय सरस्वती ने चिल्ला कर कहा की होशियार-यह धूँवा बेहोशी से भरा हुवा है। मगर-यह कहने से क्या होसकता है

उस ज़हरीले धूएँ ने नांक मुँह के रास्ते से घुस बातकी बातमें कुमार को बेहोश कर गिरा दिया।

जब कुमार की आंख खुली तो उन्होंने देखा—वे एक निहायत ही खूबसूरती के साथ सजा हुवा कमरे के अन्दर, एक खूबसूरत पलंग के पासही बिछी हुई मखमल गद्दी के ऊपर, हरे रंग की मखमली लिहाफ़ ओढ़ पड़े हुए हैं। उनके पास ही एक सुन्दर ग़लीचे पर एक ग्यारह बारह बरस की खूबसूरत लड़की बैठी गुड़ियां खेल रही है। सुबह का समय है सात आठ बज चुके हैं। चारो तरफ़ की छोटी बड़ी सभी खिड़कियां खुली हुई हैं। उनमें से मन्द-मन्द शीतल समीर आरहा है। कुमार एक टक उस लड़की की तरफ़ देखने लगे। वह लड़की अपनी धुनमें मश्त थी,—कभी कभी उसके मुंह से कुछ गुन गुनाने की आवाज़ निकल आती थी। उसकी चेहरा निहायत ही भोला—भाला दिलको लुभानेवाला था। कुमार देर तक उसकी खूबसूरती को देखते रहे। इसके बाद वे उठाही चाहते थे इतने में उस लड़की ने अपने हाथकी गुड़िया को ज़मीन पर रख-कुमार की तरफ़ देखा। दोनों की चार नज़र हुई। उस लड़की ने उनको जागे हुए देखतेही झुककर प्रणाम किया और बड़े नाज़ के साथ कहा—'जीजा जी, आप तो जागना जानतेही नहीं हैं, देखिए,-मैं आपके आसरे कितनी देर से यहाँ बैठी हुई खेल रही हूं। आपने मुझे क्या ला दिया है? अब की तो आप बहुत दिनों के बाद आए हैं। होली में मैं बहुत आसरा देखती रही,-मगर आपको फुर्सत कहाँ, जो आवें? अगर जीजी को न बुला लिए होते तो आप इस बार भी हर्गिज़ न आते। इतनी बेमुरौव्वती आप में कबसे आगई है?

उसकी बातें सुन कुमार ने सोचा,-यहाँ भी मैं आज कुछ दिल्लगी में पड़ा चाहता हूँ। ज़रूर-यह महामाया की सखियों में से किसी एक सखी की कार्रवाई है। ख़ैर-देख लूँ किस रंग पर वह उतर आती है। उनको इस तरह सोच में पड़े हुए देख उस लड़की ने कहा-क्यों जीजा जी, आप क्यों मुझ से बोलते नहीं हैं? क्या आप नाराज़ होगए? मालूम पड़ता है अबकी आपने मेरे लिए कुछ भी नहीं लादिया है? क्या आप मुझे भूल गए थे? तबकी जाती बेर आपने बहुत कुछ वादा किया था, मगर वे सब वादे कहां गए? आप बोलते क्यों नहीं हैं? कल रातको जिस वक़्त आप यहाँ आगए थे, उस वक़् मैं सो गयी थी। आज सबेरे माँने कहा तो मुझे मालूम हुवा। तब से मैं आपके जागने की राह देख रही हूँ। बोलिए आप चुपचाप क्यों पड़े हुए हैं? क्या आपकी तबीअत ठीक नहीं है?

कुमार-( उठकर बैठते हुए ) सब कुछ ठीक है,-मगर यह तो बतलावो तुम्हारी जीजी कहां है?

वह-क्यों आपको बिना जीजी के चैन नहीं पड़ता है? वह तो हमारे आने के बाद उठकर बड़ी जीजी के कमरे में चली गई हैं।

कुमार-अच्छा, उसे एक मर्तब यहां बुला तो दो?

वह-पहले आप यह तो बतलाइए, मेरे लिए क्या लादिए हैं, तब मैं उसे बुला दूँगी,-नहीं तो हर्गिज़ यहां से टलने वाली नहीं हूँ!

कुमार-तुम पहले उसे तो बुला लादो, फिर तुम्हारी बातें सुनूँगा।

वह-( मुंह चमका कर ) इस तरह आप मुझे बहाना बता कर छका रहे हैं। मैं तभी जाऊंगी जब आप मुझे कोई चीज़ देंगे? देखिए—वह आपका बक्स पड़ा हुवा है, आप उसे खोलकर मेरे लिए जो कुछ लाये हों मुझे दे दीजिए, तब मैं कमला जीजी को बुलाकर ला देती हूँ।

कुमार—उसकी ताली उसी के पास है, उसे बुलावो तो मैं उस बक्स को खोल कर तुम्हारे लिए जो कुछ लाया हूँ वह देदूँगा।

वह—आप झूठे हैं, जीजी कहती थी, इसकी ताली जीजा जी के पासही है। तुम उन्हीं से कहकर इस बक्स को खुलवाना। मालूम पड़ता है-इसमें की बहुत सी चीजें आप मुझे दिखलाना नहीं चाहते हैं?

कुमार—नहीं नहीं, मैं तुमसे झूठ नहीं कहता। मेरे पास ताली नहीं है। उसने तुम्हे बहाना बता दिया होगा!

वह-मुझे विश्वास नहीं होता, खैर हाथ कंगन को आरसी क्या? मैं अभी बुलाकर झूठ-सच की जाँच कर लेती हूँ। इतना कहकर उसने ज़ोर से-कमला जीजी! कह कर पुकारा जिसके पुकारतेही दरवाजे के बाहर से छम छम करती हुई एक सोलह सत्रह बरस की,-बड़ीही खूबसूरत औरत ने आकर मुस्कुराती हुई कहा-क्यों मुन्नी, तू इस तरह चिल्ला चिल्ला कर क्यों कमरे को शिरपर उठाती है,-क्या मुझे कोई काट खारहा है? इसके जवाब में मुन्नी ने कहा—मैं क्या करूं, जीजा जी तुम्हारे बिना घबड़ाने लगे, इसलिए तुम्हे इस तरह से पुकारा है। अब, बताओ-इस बक्स की ताली किसके पास है, यह सुन उसने मुस्कुरा कर कुमार की ओर देखा। वे उसकी

लाजवाब खूबसूरती को देख भौंचक्के से हो रहे थे। उसने मुस्कुराते हुए अपनी बांकी चितवन का वार उनके ऊपर करके मुन्नी से कहा-तू अपने जीजा जीही से क्यों नहीं पूछती है ?

मुन्नी--क्या तुम समझती हो कि मैंने नहीं पूछा ? मैं इनसे पूछही कर तो तुमसे सवाल कररही हूँ। बतलावो, इसकी कुञ्जी कहां है ?

कमला—यह मैं क्या जानूं कि कहां है ? तुझसे तो मैंने पहलेही कह दिया था कि जिसका बक्स है उसीके पास इसकी ताली भी होगी।

मुन्नि-[ कुमार से ] अब बहाने से काम नहीं चलता बतलाइए,-इसकी ताली कहांहै ? मैं अपने हाथ से खोल कर इसमें रक्खो हुई अच्छी अच्छी चीजें उठालूंगी।

कुमार-[ कमला से] जान न पहचान, बड़ी बूआ सलाम,-यह तुम लोग कैसी दिल्लगी करती हो ? क्या इस तिलस्म के अन्दर यही सब चालें चली जाती है ?

कमला—नहीं तो और कैसी चालें चली जाती हैं ! आप अब धीरे से निकाल कर अपनी प्यारी साली के हाथ में ताली देदीजिए, उसके जो जीमें आवेगा चुनकर ले लेगी।

कुमार—तुम मुझे क्या समझती हो ?

कमला—भला, आपही बतलाइए,—मैं आप को क्या समझूँगी ?

कुमार—तुम में जितनी खूबसूरती है उतनी ही सभ्यता भी होती तो सोने में सुगन्ध होता,—मगर मैं ऐसा नहीं देख रहा हूँ।

कमला-[ खिल खिला कर हंसती हुई ] तो मैंने कौनसी आपके साथ असभ्यता की जो आप सोने में सुगन्ध नहीं पा रहे हैं ! क्या ससुराल में आतेही आप का दिमाग़ घूम गया ?

कुमार-यह क्या मेरी ससुराल है ?

कमला—[ हंस कर ] नहीं तो क्या यह अपना घर समझ रहे हैं ! देख,—मुन्नी तेरे जीजा जी क्या कह रहे हैं ? मालूम होता है ससुराल में आकर इन्हें दिल्लगी सूझी है। बहुत दिनों के बाद आए हैं,—कुछ सनक सी सवार हुई है।

मुन्नी—नहीं नहीं, कमला जीजी, तुम समझी नहीं यह और किसी तरह की बातें नहीं है, मुझे छकाने का ढंग है। आप यह न समझिए जीजा जी कि मैं आपको योंही छोड़ दूंगी, मैं लूंगी, जरूर लूंगी। आपको नाक रगड़ कर देनाही पड़ेगा।

कमला—लीजिए साहब, यह नाक रगड़वा कर आपसे लेगी,—अब किसी तरह से छूट नहीं सकते। दीजिए—जो कुछ देना हो इसको देही दीजिए, नहीं तो यह ढीट लड़की घर भर में हल्ला मचाती हुई फिरेगी।

कुमार—मेरा यहां कौन सी चीज़ है जो मैं इसे दूं ?

कमला—[ हंसकर ] लो मुन्नी, इनके यहां कोई चीज़ही नहीं है, यह तुम्हे कहां से देंगे ? मालूम पड़ता है इन्हे अपने बक्स का ख्यालही नहीं है।

मुन्नी—कहिए जीजा जी, मुझ से बहाना कर, न देने में आपको क्या फ़ायदा हैं ?

कमला—कुछ नहीं,—सिर्फ अपनी चीजें जाने से बचती हैं। मगर इस तरह बचाने में सिवाय बदनामी के और कुछ

नहीं हाथ आती है ? आप मेरी तरफ़ क्या देख रहे हैं,—मैं क्या बेजा थोड़ेही कहती हूँ ?

कुमार—तो तुम्ही निकाल कर क्यों नहीं देती हो ?

मुन्नी—लो जीजी, अब तुम्ही निकाल कर क्यों नहीं देती हो ? निकालो,—मैं अपनी पसन्द की चीजें लेकर राधा बहन को दिखाने जाऊँगी।

कमला—मेरे पास ताली कहां है जो बक्स को खोल कर तुम्हे चीजें दिखलाऊँ ?

मुन्नी—अब तो जीजा जी का कोई दोष नहीं है, कमला जीजी तुम्ही बहाना कर रही हो। खोओ निकालो। मैं अब जीजा जी से कुछ भी न कहूंगी। तुम्ही से कहूँगी। अगर न दोगी तो मैं रोती हुई ललिता जीजी और मां के पास तुम्हारी उलाहना लेकर जाऊँगी।

कमला—[ कुमार से ] आप कैसी बला मेरे पीछे लगा रहे हैं ? आपही बक्स को खोल कर क्यों नहीं देते हैं ? अगर आपसे उठा न जाय तो उसकी ताली मुझे दीजिए मैंही खोलकर इसे देदूँगी ?

कुमार—मैं ताली की बात क्या जानने गया,—तुम्हारा बक्स है, तुम्हारे ही पास ताली होगी। खोलकर जो देना हो देदो मगर यह तो बतावो,—तुम लोग कौन हो,—ऐसी दिल्लगी मेरे साथ करने में क्या मज़ा रक्खा है। कल वासन्ती ने भी मेरे साथ क़रीब क़रीब ऐसीही दिल्लगी की थी। मालूम होता है—महामाया के यहां रहने वाली सभी औरतों का मिजाज़ ऐसाही हुवा करता है ?

कमला--[ हँस कर ] आपकी बातें सुनकर मुझे हंसी आती है। क्या कहूँ--मुन्नी है,-नहीं तो मैं कुछ कड़ी दिल्लगी कर बैठती,-खै़र,-जाने दीजिए,—मैं इस वक़ आपकी बातें सब सुन लूंगी, सह लूंगी,। मगर—अपनी गर्दन पर लटकती हुई ताली तो मुझे दिजिए, मैं इसे कुछ देकर बिदा कर दूंगी। कुमार ने देखा,-सच मुच उनकी गर्दन पर एक छोटी सी ताली लटक रही थी। उन्हें इस बात से कुछ ताज्जुब नहीं हुवा उन्होंने उसको उतार कर कमला के हाथ में दिया वह अठ-लाती हुई,—पासही रक्खे हुए एक जड़ाऊ बक्स के पास गई और बसे उठाकर कुमार के सामने रखती हुई कहने लगी लीजिए,—आपही खोलिए। कहीं मुझे चोरी का इल्ज़ाम न लगावें।

कुमार—मैं दूसरे के बक्स को क्यों खोलूंगा? तुम्हीं खोलो।

मुन्नी—हां हां, कमला जीजी तुम्ही खोलो! देखना—कहीं बढ़िया बढ़ियां चीजें छिपाकर कोने की तरफ़ न लगा देना! कमलाने मुस्कुराते हुए बक्स को खोली-परन्तु उसके भीतर हाथी दांत के चौखूटे पर जड़ी हुई कुमारी सावित्री की तस्वीर के अलावे और कोई चीज़ भी नहीं निकली, जिसको देखतेही उसने चौंक कर कहा, हैं! यह विलास पुरकी राजकुमारी सावित्रा की तस्वीर कहाँ से आई? मालूम पड़ता है आप इसके ऊपर आशक़ हुए हैं, जभी तो मुझे यहां भेजकर आप इतने दिनों तक चुप चाप बैठे हुए थे। अफ़सोस! मर्दके ऊपर विश्वास कर बैठना बड़ी भारी भूल है। देखा मुन्नी,—तू उपहार की चीजें लेने के लिए तड़पती थी और तुम्हारे जीजा जो कहाने वाले भोले —

भाखे धन, बक्स खोलकर दिखाने के लिए ना नूकर करते थे,-अब जाकर भण्डा फूटा। हाय, मैं तो कहीं की भी न रही। ज़रा जातो, ललिता जीजी को बुलातो ला। मुन्नी दौड़ती हुई बाहर चली गई, उसके जाने के बाद उसने डबडबाई हुई आँखों से कुमार की तरफ़ देख कर कहा—आपको क्या यही उचित था?

कुमार—पहले यह तो बतावो, तुमने मुझे क्या समझ रक्खा है?

कमला-इस सवाल में भी रुखाई कूट कूट कर भरी हुई है। आपही सोचिए भला मैं आपको क्या समझूंगी? मेरे आप हृदय धन हैं, मेरे आप प्राणेश्वर हैं, मेरे आप जीवनाधार हैं, मेरे आप हृदय वल्लभ हैं, मेरे आप आराध्यदेव हैं, मेरे आप स्वामी हैं, मेरे आप जीवन के संगी हैं, मेरे आपही सब कुछ हैं।

कुमार—नहीं नहीं कमला, तुम बड़ी भारी गल्ती पर हो, मैं तुम्हारा कोई भी नहीं हूं।

कमला—तब फिर आप कौन हैं?

कुमार—मैं मुङ्गेर के महाराज नरेन्द्रसिंह का बड़ा लड़का हूं, मेरा नाम रणधीर सिंह है।

कमला—एं! आप रणधीरसिंह हैं! यह खब्त आप के दिमाग में कब से सवार हुवा है। भला यह सब बातें कोई दूसरा सुन पावेगा तो क्या कहेगा। आप जरा अपने होश में आकर तो बातें कीजिए? इसके जवाब में कुमार कुछ कहा हो चाहते थे, इतने में एक अट्ठारह उन्नीस बरस की हसीन नाजनी को साथ लिए हुए मुन्नी आई—जिसको देखते ही कमला ने कहा—देखो ललिता जीजी, इन्होंने तो मेरे साथ

बड़ा भारी दगा किया। मालूम पड़ता है इनकी नजर कुमारी सावित्री के ऊपर जम गई हैं, इसी लिए ये अपने वक्स में भी उसी की तस्वीर लिए-लिए फिरते हैं।

ललिता—( मुस्कराकर ) तो क्या इसीसे तुम इन्हें दगा देना कहती हो, मर्द हैं, खूबसूरत औरत की तस्वीर देखली, रखने का दिल चाहा, रख लिया होगा। इतनी बातों में इस तरह इनको उलाहना देना ठीक नहीं है।

कमला—तुम्हारे लिए ठीक नहीं है, मगर मेरे लिए ठीक है। तुमने तो क्वारही रह कर जिन्दगी बिताने की ठान रक्खी है, तुम औरत मर्द की बातों को क्या जानने गई ? जरूर इन्होंने मेरे साथ दगा किया और अब यह अब अपने को कुमर रणधीरसिंह कहकर मुझसे अलग हुवा चाहते हैं!

ललिता—तो इसमें हानि ही क्या है, ये अपने को रणधीर सिंह कहते हैं तो कहने दो! इनकी सूरत सकल भी तो बहुत कुछ उनसे मिलती है। अगर ये कहते कहते कुमार रणधीर-सिंह हो जाय तो तुम्हारा नसीबा ही चमक उठेगा।

कमला—खाक चमक उठेगा, तब तो सावित्री भी न आजायगी।

ललिता—आवे, इसमें क्या हर्ज है! एक की जगह तुम लोग दो होकर इनकी खिदमत किया करोगी।

कमला—नहीं, मैं ऐसा नहीं चाहती। सब कुछ मैं बर्दास्त कर सकती हूँ मगर इनके पास किसी दूसरी औरत का होना बर्दास्त नहीं कर सकती। मुझे सौत के नामही से चिढ़ है, मैं सौत को फूटी आँखों से भी देखना नहीं चाहती।

ललिता—मैं तो जब शादी करूंगी तब सौत वाले खसम

ही को खोज कर शादी करूँगी। मुझे तो इसमें बड़ाही मज़ा नजर आता है। ( कुमार से ) क्यों हजरत, आज आप क्यों गूंगे बनकर बैठे हुए हैं ? क्या कमला बहन से आप डर गए ?

कुमार—अब इन सब मज़ाकों को खतम कर यह बतलावो, मुझे क्यों तुम लोगों ने यहां लाकर रक्खा है ? तुम लोग कौन हो ?

कमला—लो जीजो, सुना इनकी बातें ? अब दो जवाब ?

ललिता—( हंस कर ) क्या आप हम लोगों को कोई दूसरी ही औरतें समझ रहे हैं जो इस तरह पूछते हैं ? क्या आपने अपनी आंखों पर परदा डाल रक्खा है ?

कुमार—हां, एक तरह पर परदा डाल रक्खा है, इसी से तो ऐसा पूछते हैं।

ललिता—तब तो बताने पर भी आपकी समझ में कुछ न आवेगी।

कमला—अगर आभी जायगी तो उसका असर कुछ भी न होगा।

ललिता—खैर इस वक़् इन्हें कुछ छेड़ो मत, नहाने धोने का वक़् होगया है, इन्हे नहा धोकर खिलावो पिलावो फिर मैं इनके दिमाग़ को दुरुस्त कर दूंगी।

मुन्नी—मैं तो आज बिलकुलही ख़ाली पड़ गई।

कमला—तो क्यों नहीं इसी तस्वीर को उठा कर लेजाती।

मुन्नी—मैं तस्वीर लेकर क्या करूँगी ?

कमला—तब फिर तू अपने जीजा जीही को उठा लेजा !

मुन्नी—क्या कमला जीजी, यह बातें तुम सच कह रही

हो। देखो, फिर पीछे पछताना न पड़े!

कमला—नहीं नहीं, मैं क्यों पछताऊँगी, तू उठा लेजा, मैं खुशी से उठा ले जाने देती हूँ,—मगर याद रखना ये बड़ेही बेवफा हैं।

मुन्नो-मैं तुम्हारी तरह थोड़ेही हूँ मेरे पाले पड़ेंगे तो ये कैसेही बेवफ़ा क्यों नहों वफादार हो जायंगे। उसकी ऐसी बातें सुन सबके सब हंसने लगे। ललिता ने कुमार की तरफ़ देख कर कहा—माफ़ करना, ऐसा मज़ाक प्रायः शालियाँ किया करती हैं। अब, आप उठिए, नहा धोकर खा पी लीजिए?

कुमार—तुम लोगों ने तो मुझे ख़ासी ससुरालही में बिठा दी है! भला तुम्ही बतावो,—अगर ऐसी दिल्लगी न कर मेरें साथ औरही तरह से पेश आने में क्या तुम लोगों को कोई नुक्सान है?

ललिता—नुक्सान तो कुछ भी नहीं है, मगर ससुराल में आए हुए दामाद के साथ ऐसा न करने से मज़ा किर किरा हो जाता है।

कुमार—क्या तुमने मुझे रणधीरसिंह न समझ अपना बहनोई समझ रक्खा है?

ललिता-बेशक, एक तरह से नहीं सौ तरह से, हज़ार तरह से समझ रक्खा है।

कुमार—तब तो मैं कहता हूँ तुम लोग बड़ी भारी भूल पर हो। मैं तुम्हारा बहनोई नहीं हूँ।

ललिता—[ मुस्कुराकर ] तब फिर आप कौन हैं?

कुमार-मैं रणधीर सिंह हूँ।

ललिता-( हँसकर ) रणधीरसिंह ही तो मेरे बहनोई हैं।

कुमार-वह कोई दूसराही रणधीर सिंह होगा। मैं नरेन्द्र सिंह का लड़का रणधीरसिंह हूँ।

ललिता—मेरे बहनोई रणधीरसिंह भी तो नरेन्द्रसिंह ही के लड़के हैं।

कुमार—यह कभी होही नहीं सकता !

ललिता-हो क्यों नहीं सकता है। कर दिखाने वाला होना चाहिए ! आप अब अपने मज़ाक को ताक पर रखकर नित्य कृत्य से छुट्टी पा लीजिए,-तब मैं आपको अच्छी तरह से मेरे बहनोई होने का सबूत दूँगी। और साथही आपकी दिल्लगी का मुँह तोड़ जवाब भी दूँगी।

कुमार-ख़ैर-यह तो बतावो, मुझे वासन्ती के कमरे से तुम लोगों ने बेहोश कर क्यों यहाँ उठा ले आई ? इस समय वासन्ती कहाँ है ? सावित्री और सरस्वती का हाल क्या है ?

कमला-लो देखो जीजी, यह कैसी ख़ब्ती की तरह बातें कर रहे हैं। हमलोग वासन्ती को क्या जानने गए ? सावित्री और सरस्वती का हाल हम लोगों को क्या मालूम ? इन्हे बेहोश कर क्यों हमलोग ले आने लगे ?

ललिता—चुप रहो, तुम बड़ी सोख़ होगई हौ। मैं इसका जवाब देती हूँ। हाँ साहब, आप किस वासन्ती के बारे में पूछ रहे हैं।

कुमार-इस तिलस्म की महारानी महामाया की सखी वासन्ती के वारे में पूछ रहा हूँ। कल उसने भी मुझसे क़रीब क़रीब ऐसीही दिल्लगी की थी।

ललिता—तब तो उस वासन्ती को हमलोग नहीं जानती। आपने शायद कोई तिलस्मी किताबें पढ़ी होगी-जिसके असर में आपको यह सब भ्रम होरहा है। इसके जवाब में कुमार कुछ कहाही चाहते थे, इतने में दौड़ती हुई एक लौंडी ने आकर कहा—महारानी की सवारी आरही है, आप लोग कुमार को छिपाकर जल्द बाहर आजाइए? यह सुनतेही, वे तीनों के तीनों घबड़ा कर दूसरे का मुंह देखने लगी।

# नौवाँ बयान।
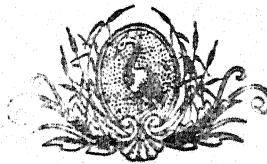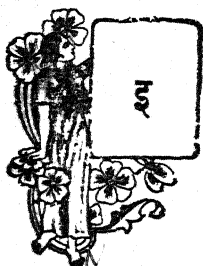
इस तरह छटक कर आसमानी के दूर जा खड़े होने से बड़ाही बेचैन हो रघुबर उसकी ओर देखने लगा। अपने पञ्जे में आई हुई अनुपम सुन्दरी को खो कर उसकी हालत अजीब होगई। वह लम्बी लम्बी सांस लेने लगा। कन्दर्प के पञ्च बाण से बिंध कर उसका चेहरा लाल हो गया। उसकी ऐसी हालत होती हुई देख......आसमानी को घृणा, क्रोध और लज्जा एक साथही हुई, किन्तु उसको अपने चेहरे से ज़ाहिर होने न देकर–ज़बर्दस्ती मुस्कुराती हुई,–उसके ऊपर अपनी तिरछी निगाहों के तीर चलाकर, उसको शर्मिन्दः करने की ग़रज़ से कुछ तेज़ आवाज़ के साथ कहने लगी,–"रघुबर,–मैं देखती हूं, ऐसी ऐयाश मिज़ाज महारानी की सोहबत में इतने दिनों तक रह कर भी तुम निरे गंवार और गंवार में भी हद दर्जे के रूखे फीके दिखलाई पड़ रहे हो। क्या तुमने इतनी ऐशकी जगह पर रहकर भी जरासी सोहबत सीख न पाई? क्या आज तक इस क़िस्मके ऐश बिना शराब कवाब के कहीं भी मनमाफ़िक लूटे गए हैं! क्या तुमने महारानी को इसी तरह से अपने ऊपर मेहर्बान बना रक्खा है? क्या तुम्हे ऐशका तौर तरीका कुछ भी मालूम नहीं है? क्या तुम्हारी इस चालको महारानी पसन्द करती हैं? मालूम होता है तुमने ऐशको मन माफ़िक कभी भी

लूट नहीं पाया है! भला तुम्ही बतावो--यों भी कोई आशक गाय--भैंस को तरह किसी माशूक़ पर चढ़ आते हैं? तुम्हे ऐसा करते ज़रा भी शरम नहीं मालूम पड़ती?

रघुबर--(झेंपकर) बेशक-मेरी प्यारी आसमानी, मैंने आज काम के बश में होकर गाय भैंसही की तरह का काम किया। मुझ से बे अदबी होगई। मैं अपने दिलको संभाल न सका। एक बार के लिए माफ़ करो अब फिर ऐसी हर्कत कभी न करूँगा।

आस--हाँ, तुम्हारे ऐसे सोहबतदार को ऐसाही उचित है। माल सामने रक्खा हुआ है, उसको उतावलापन छोड़ कर क़ायदे के साथ इस्तमाल करो। जिसमें दोनों को लुत्फ़ भी आजाय।

रघु--हां मेरी जान, तुम बहुतही ठीक कह रही हो। म अब उतावलापना न करूँगा। जिस तरह से तुम्हारी तबीअत खुश हो उसी तरह से चलूंगा।

आस--तो चुप चाप वहीं बैठे रहो। मैं दोनों की गजब की मश्ती पैदा होने वाली तरकीब कर लेती हूँ,--तब स्वर्ग के ऐश का मजा लूटना।

रघु--मैंने मानी, मेरी दिलाराम,--मगर मुझे चुप-चाप पड़े रहने मत दो। मैं पागल हुवा जाता हूँ,--मेरा दिल बेचैन हुवा जाता है। मैं अब अपने को संभाल नहीं सकता। मेरी तबीअत बदहोश हो रही है।

आस--फिर वही बात! क्या तुम में शराफत जरा भी नहीं है? इतने दिनों तक खामोश खोकर क्या आध घण्टा और अपने दिल को रोक नहीं सकते?

रघु—अब नहीं रोक सकता हूँ मेरी हृदय की रानी, मुझे अपने लाल लाल होठोंका मज़ा लेने दो। मुझे मत तड़पावो, मेरी दम घुट रही है, मुझे मत सतावो। मुझे मत रोको, एक बार, सिर्फ एक बार तुम मेरे गले लग जावो।

आस—जब मैं सब तरह से तुम्हारे कब्जे में होकर तुम्हे अलौकिक आनन्द देने के लिए तैय्यार ही हूं तब तुम्हारे घबड़ानेकी क्या जरूरत ? कायदे के साथ बैठो, कायदे के साथ खावो पीवो, कायदे के साथ मिलो। कायदे के साथ जो काम किया जाता है वह कभी किरकिरा नहीं होता।

रघु—बेशक, मेरी दिलरूबा, मैं इसको मानता हूं, लेकिन इस वक्त तुम्हें इस तरह यहां अकेली पाकर मेरा कायदा हवा हो गया है, मैं अपने होश में नहीं हूँ। तुम अब मुझे कायदा मत सिखलावो ? मुझे एक क्षण के लिए मनमाना मौज लूटने दो ! इतना कह कर उसने बड़ी गहरी मश्ती में आ, आसमानी को दोनों हाथों से पकड़ अपनी छाती की तरफ खीचकर,—अपना मुंह उसके लाल-लाल होठ की तरफ बढ़ाया। मगर—उस चालाक कामिनी ने अपने को उससे अलग कर कुछ दूर जा खड़े हो कहा—'रघुबर, मैं देखती हूँ, तुम बड़े हो बेताब हुए जाते हो। यह कोई मजे में मजा नहीं है। अपने को काबू में लावो और रंग में तबीअत को घोल कर विशाले इश्क का मजा चक्खो !

रघु—नहीं हृदय की रानी, अब बर्दास्त नहीं होता ! तुम मेरी गुस्ताखी को माफ करो ?

आसमानी—बस, घबड़ावो मत, मैं तुम्हारी तबीअत भर देती हूँ। बैठ जावो,—कश्मीरी शराब की शीशी निकाल

लूं,--तुम मुझे पिलावो, मैं तुम्हे पिलाऊंगी । फिर देखना कैसा रंग आता है। इस तरह बिना शराबके तो सारी सोहबत दो कौड़ी की हो जाती है। तुम मजा लो तो पूरा मजा लो।

रघु--ठीक है। अब मैं न घबड़ाऊंगा। आज बरसों के बाद मेरा नसीब जगा, मैं आज बिहिश्त में पहुँचा। तुम पर मेरी आहों का असर जाहिर हुवा । पिलावो, मुझे खूब पिलावो ! मैं खामोश हूँ पिलावो ?

आसमानी--हां हां मैं तुम्हे पिलाती भी हूँ और जैसी तुमने मेरे ऊपर आशिक होकर मुहब्बत की है--वैसी ही सोहबत दिलाकर तुम्हारी तबीअत भर दूंगी। तुम भी समझ जाओगे कि--जिन्दगी में कैसा लुफ्त उठाया ।

रघु--तो मेरी प्यारी आसमानी, तुम देर क्यों कर रही हो,--आज मैं तुम्हारी इन नाजुक कलाइयों से उठाया हुवा प्याला अपने होटों पर लगाकर दुनियाँ में एक ही कहलाऊंगा। देखो. मैं इसी के लिए,--इसी प्रेम की मुयस्सर करने के लिए कितना तड़पता था,--मुझे महारानी का सोहबत भी अच्छी नहीं मालूम पड़ती थी,--आज मेरी आसना पूरी हो आई ?

आस--खैर, इन सब बातों को जाने दो,--मैं तुम्हारी मोहब्बत से खुश हूँ, इस के बदले आज से तुम्हारा रोना-कलपना भी छुड़ा दूंगी। इतना कहकर उसने--सामने दीवार के साथ लगी हुई बिलौरकी इलामारा खोली और उसमें से कश्मीरी शराब की एक बोतल निकाल,--याकूत के दो खूबसूरत गिलास में भर कर,--एक छोटी सी दवा की पुड़िया अपनी कुर्ती में छिपा,--रघुबर के सामने की कोच पर आ बैठी। उसके बैठते ही रघुबर ने मश्ती में आ मुहब्बत के साथ

उसे लिपटाना चाहा। मगर लाचार, भीतरही भीतर जली हुई आसमानी ने उसकी ऐसी गुस्ताखी देख, अपने को संभाल न सकने की वजह से त्योरी चढ़ाकर कुछ जोश के साथ कहा,—निरे गँवार की तरह ऐसी जल्दबाजी क्यों करते हो, रघुबर,—तुममें तो जरा भी खामोशी नहीं है। बैठो, चुप चाप बैठे रहो। इस तरह घबड़ाने से काम नहीं चलता ?

रघु—बैठा हूं, मगर अब रहा नहीं जाता। तुम जरा मेरी बगल में आ कर मुझे दिलासा देती रहो।

आस—मैं सब कुछ करूंगी, तुम इस तरह उतावला क्यों होते हो ?

रघु-(हाँथ बढ़ाकर)हाय,प्यारी तुम क्यों सताती हो आजावो

आस—( हाथ हटाकर बिगड़ती हुई ) सुनो साहब, अगर तुम्हे इस वक्त आदमी की तरह रहकर सोहबत का मजा उठाना हो तो रह जावो, नहीं तो इस कमरे के बाहर इसी दम चले जावो। यहां ऐसे उतावले पागल का काम नहीं है। किसी दोजख की हवा खावो। तुम नाराज होगे। होते रहो। क्या करोगे, ज्यादः से ज्यादः महारानी से मेरी शिकायत करोगे, मुझे कसूरवार मुकर्रर करने के लिए कोई बात उठा न रक्खेंगे, यही न जावो कह दो। कोई बात बाकी न रक्खे। मेरी तकदीर ही में जल्लादकी तेज धार वाली तलवार लिखी होगी तो कोई क्या रोक सकताहै, मैं इसकी तकलीफ को,कैसी ही नाजुक क्यों न हूं, खुशी के साथ, धीरज के साथ, हिम्मत के साथ बर्दास्त करलूंगी। बस,-इससे ज्यादा तो तुम्हारा जुल्म मुझे कुछ नहीं कर सकता।

रघु—( बढे हुए हाथ को समेट फिर माफ करो मेरी प्यारी,—मुझसे कसूर हुआ इसकी सजा मुझे दो। मैं अब
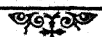
ऐसी बेजा हर्कत हर्गिज न करूंगा। उस तरह तुम्हारी शिकायत करने वाले का मुँह काला हो,–मारे जायं तुम्हारे दुश्मन—तुम क्यों इस जिन्दगी में मारी जावोगी। जल्लाद की चमचमाती हुई तलवार उसी की गरदन पर बिजली की तरह गिरकर —उसका वारान्यारा कर दे, जो तुम्हारी ओर बुरी निगाहों से, तुम्हे बिगाड़ने के लिए टेढ़ी निगाहों से देखेंगे ?

आस—(अपनी तिरछी निगाहों से उसे घायल करती हुई) तो खामोश बैठो ?

रघु—हां प्यारी, मैं खामोश ही हूँ। तुम नाराज हो गई, नाराज मत हो। बरसो के बाद तुम मिली हो—इसलिए मुझसे रहा नहीं जाता। मेरी खता का माफ करो। अगर तुम खफा होकर ऐसा ही कहा करोगी तो मैं बेमौत मारा जाऊंगा मेरा दम मुझे तड़पा-तड़पा कर निकलेगा। मेरा दिलाराम, मैं अब कसम खाता हूँ,—तुम जिस तरह से चलने को कहोगी उससे खिलाफ उँगली तक न हिलाऊँगा—माफ करो, एक बार के लिए माफ करो, मगर आसमानी, याद रखना, तुम शराब पिला रही हो—इसलिए शराब के नशे में जो कुछ गुस्ताखी करें उसको माफ करना। लावो,—मुझे अपने नाजुक हाथ से पिलावो।

आसमानी—( नज़र हारकर एक जबर्दस्त बाद छोड़कर ) तुम घबड़ावो मत, मैं तुम्हे पिलाऊंगी—और नशे में जो कुछ गुस्ताखी होगी उसको भी माफ करूंगी। मगर एक बात है—वह तुम्हे मञ्जूर करना होगा।

रघु—वह क्या प्यारी, जल्द कहो, मैं तुम्हारी एक बात क्या हजार बात मानने के लिए तैय्यार हूं। यह शरीर किस लिए बना हुवा है।

आस—( मुस्कराती हुई ) मेरे लिए तुझे जान देना होगा।

रघु— हां हां, मैं तुम्हारे लिए खुशी से जान देने के लिए तैय्यार हूं। बोलो— किस तरह से जान देना होगा?

आस— ( हंस कर ) मैं अभी बताती हूँ। इतना कह कर उसने अपनी चितवन से उसको बेताब बना,— बोतल में से दोनो याकूती गिलास में शराब भर कर—टेबुल पर रखती हुई कहने लगी,—लो मेरे दिलवर, अबसे मैं तुम्हें दिलवर ही कहा करूंगी,—लो—तुम मुझे एक ग्लास पिलावो, मैं तुम्हे एक ग्लास पिलाऊँगी। जब उसके रंगकी गहरा लहर उठेगी तब देखना दिलवर,—कैसा मजा आता है? तुम फिर कहां के कहां हो जाते हो? जितनी देर में जो चीज मिलती है—वह उतनाही आनन्द देने वाली होती है। बरसों के बाद तुम मिले हो तो भरपूर मजा उठा लो।

रघु—( मश्ती से )—ठीक है मेरी प्राण, मुझे इस वक्त सिवाय तुम्हारी बातों के और कुछ भी भला मालूम नहीं होता, तुम जो कुछ कहती हो सो सब दुरुस्त है। सही है। विना रंगके तरंग भी नहीं उठती।

आस—इसी से तो मैं जल्दी नहीं कर रही थी। तुम बहुत सी शराब पी होगी मगर आज की तरह लज्जत को देने वाली कभी भी पी न होगी। इतना कह उसने एक ग्लास उठा कर मुस्कराती हुई रघुबर के हाथ में दिया। उसने बड़ी मुहब्बत के साथ उसको ले,—सिर आँखो में लगा,—एक ही सास में पी गया। आसमानी ने फिर भर कर उसे दिया, उसे भी उसने खाली किया। इसके बाद—उसने भी एक गिलास भर कर बड़ी नम्रताके साथ आसमानी को दिया। उसने सिर्फ एकही घूंट पीकर उसको टेबुल के ऊपर रखती हुई, । दूसरा

ग्लास भर कर रघुबर को दिया। वह तुरन्तही उसे खाली कर गया। उसने फिर भर कर रख दिया। इसी तरह लगातार आधी से ज्याद: बोतल खाली करने के बाद आसमानी बैठ गई। रघुबर को नशा ज्यादा हो गया। आखें लाल होकर झपकने लगी। चेहरे पर बड़े जोश के निशान दिखलाई पड़ने लगे। जबान लड़खड़ाने लगी। वह मस्त हो आसमानी की तरफ देख—आप ही आप कहने लगा—प्यारी, मेरी प्यारी, मैं इस वक्त तुम्हें कैसा देख रहा हूं, नहीं कह सकता—तुम जान हो, तुम प्राण हो, तुम सर्वश्व हो, तुम जिगर हो, तुम आंख हो, तुम आंखों की पुतली हो,—तुम्ही सब कुछ हो। तुम मुझमें हो मैं तुममें हूँ। आज—मैं हवा में उड़ रहा हूँ, नन्दन की शैर कर रहा हूं। तुम मेरे सामने हो—मैं तुम्हारे सामने हूँ। लावो जानी, पिलावो—और पिलावो, खूब पिलाओ,—दिल भर के पिलावो,—तुम न पीओगी, मत पीओ, तुममें तो हमेशा ही चार बोतल शराब का नशा चढ़ा रहता है,—तुम्हें इससे ज्यादा पीना ठीक नही है। नशा तेज हो जायगा। मजा किर किरा हो जायगा। आवो, मिल कर गावें, इस वक्त सबसे अच्छा तो गाना ही मालूम पड़ता है।

अय दिलरुवा जिलालो, दिलकी मजा दिलालो।
हर दम खुशी मना लो, रस प्रेम को मिलालो॥
दिल शाद होके आवे, गम एक दम हटावे।
मिल मिल के लुत्फ पावे, मुख चन्द्र को खिलालो॥
हो वस्ल का उजाला, दिलमें रहे न काला।
हर्दम हो रङ्ग आला, दिल दिल से तुम मिलालो॥
आसिक को डसने वाले, ये बाल काले काले।
हो अब बड़े निराले, डस डस के तुम जिलालो॥

चमके बदन चमक से, आवे मज़ा गमक से।
हो दूर दिल कलक से, पत्थर को लो हिलालो॥
तुमसी परी को पाके, रहता जो दिल लगा के।
जाता मज़ा उड़ाके, लो चोट को सिलालो॥

गाते गाते उसका नशा बहुत ही तेज हुवा,—आसमानी ने एक गिलास और भर कर पिलाया। उसने भर्राई हुई आवाज में—उस अनुपम सुन्दरी, कामिनी की तरफ झुकता हुवा, कुछ जोश के साथ कहा—पप्यारी, अय आसमानी, तुम वाकई आसमानी हो,—तुम्हारी शानी के कोई नहीं है, आज मैं परवाना बन कर शमा के पास आया हूँ। मैं जलूंगा—जलकर खाक बनूंगा मगर तुम्हे अपने दिल से दूर न करूंगा मैं सच्चा आशक हूं,—मैं वाकई में सच्चा दीवाना हूँ। तुम बुल बुल हो,—मैं गुल हूँ,—नहीं नहीं, गल्ती हुई, माफ करो, तुम गुल हो मैं बुलबुल हूँ,—क्यों जजमानी,—एक जाम और भर कर पिलावोगी। मगर तुम तो कुछ पीती ही नहीं,—मुझे इससे सख्त नाराजी है। तुम भी पीओ, मुझे भी पीलाओ खूब पिलावो, मै का दर्या बहादो। लावो,—लावो मेरी प्राण,—एक जाम और लावो?

आसमानीने घृणा से उसकी ओर देखा—उसकी बड़ी बड़ी लम्बी आँखो से बे हिसाब चमक निकलने लगी। होठ कांपने लगे। गाल सुर्ख हो आए। भृकुटी चढ़ने लगी। उसने कुछ तेज आवाज में कहा—अजी हजरत, आप क्यों उतावला करते हैं,—धीरे धीरे पीते जाइए, मैं पिलाती जाती हूं, आज बरसों के बाद तो मुलाकात भयी है,—अब न जाने फिर कब मुलाकात होगी। लिजिए आपने एक जाम और कहा है न,—यह अंगूरी शराब पीजिए इतना कह कर उसने उसकी

आंखे बचा अपनी कुरती से वह पुड़िया निकाल ग्लास में डाल दिया और,—एक लाल रंग की बोतल को निकाल उसको भर कर उसे दिया। वह बदहोश रघुबर उसे भी उसके हाथ से लेकर—क्या खुब प्यारी, आज तो तुमने मुहब्बत की हद करदी—कहता हुआ गट गट कर पी गया। आसमानी के होठों पर नफरत की मुस्कराहट निकल पड़ी। रघुबर को जिस तरह का जोश और और गिलासो को पीनें से हो आता वैसा इस गिलास के पीने से नहीं हुवा। शराब की घुंट पेट में जाते ही उसकी सूरत बिगड़ गई, वह मुह बिचका कर आसमानी की तरफ देखने लगा। क्षण भर में ही उसके मुंह से थोड़ी थोड़ी फेन निकलने लगी। वह छटपटाने लगा। उसको अन्तिम समय की सी वेदना मालूम पड़ने लगी। वह बैठा हुवा था,—एकाएक पेट में हाथ रखता हुआ। घुटनो के बल, कमर को झुका कर झोके के साथ उठ खड़ा हुआ। उसके चेहरेका रंग उतर गया। आंखे बन्द होने लगी। झाग से ठुड्डी भर गयी। होठ काले पड़ गए। बदन थर थराने लगा। उसने एक बार अपनी अधखुली आखों को जोर से खोलता हुआ—आसमानी की तरफ देखा,—अपने पेटको दोनों हाथों से दबा कर,—बहुत ही धीमी आवाज से कहा,—'अफसोस' मैं मुहब्बत के बदले दगा से मारा गया!

आसमानी उसके पास ही की कोच पर बैठी हुई थी,—उसने उसके मुंह से ऐसी बाते सुनते ही—शराब की बोतल उसी के ऊपर फेक उछल कर कुछ दूर जा खड़ा हो,—बड़ी तेज आवाज में कही—बेशक, हरमजादे, बेशक तेरे साथ,—तेरे सलूक के मुताबिक दगा हुई। कमीने, पाजी, बदजात तू इसी लायक था। तेरे ऐसे मरते हैं तो इसी तरह कुत्ते की

मौत मरते हैं। जैसा तू ने पाजीपन किया, जैसा तुमने हरामीपन करने पर कमर कसा उसी तरह को सजा भी मिली। समझ जा, नामाकूल, समझ जा। इस तरह एक कोमल कलेजे वाली कामिनी को गहरी चोट पहुँचा कर—लाचार करते हुए अपनी मतलब निकालने के लिए आने वाले दोजखी कुत्तों की ऐसी ही हालत हुवा करती है। आज तूने अपनी कमीनेपन का मजा चक्खा। अब खुश होगी—यहां की सब औरते खुश होंगी। जा पाजी अब अपने किए का फल भोग।

रघुबर के कान में यह सब बाते गयीं,—उसने घृणा के साथ मुंह बिचका कर—आसमान की तरफ दोनों हाथ बढ़ाया—और साथ ही गिर कर उसने दम तोड़ दिया। जब तक वह घुठने के बल खड़ा रहा, तबतक तो आसमानी गुस्से के मारे बकती हीं गयी,—मगर जब उसने उसको दुनिया से कूच करते हुए देखा,—तब उसे एक तरह का खौफ मालूम लगा। उसने घंटी बजा कर किसी को बुलाना चाहा मगर उसका हाथ ढीला पड़ गया। उसने आंख बन्द करली। किसी आर से जोर जोर के साथ सांस लेने की आवाज आई। उसने आंख खोल कर देखा,—रघुबर की लाश सामने पड़ी हुई थी। उस समय उसकी आंखे उलटी हो कर खुल गई थी। उसको मालूम हुआ—वह गुस्से से आंखे खोले, अपने सूरत को भयानक बना कर तिरस्कार के साथ उसकी तरफ देख रहा है उसके मुंह से एक हलकी चीख निकल पड़ी। वह अपने को सभाल न सकी, पास ही की कोंच पर बैठ कर उसने जोर से अपनी आंखे बन्द कर ली।

आसमानी को आंखे बन्द करने पर भी चैन न मिली। उस हालत में रह कर उसे और भी तकलीफ मालूम होने

लगी। उसके आंख बन्द करते ही उसे मालुम हुआ – वही रघुबर – इस तरह मार डाले जाने से, – उसके साथ सख्त नाराज हो, – बड़ी ही भयानक सूरत बनाकर, – दोनो हाथ फैलाता हुआ, – उसके सामने खड़े हो मुरदों की सी हँसी हँस रहा है, – वह लाख कोशीश करने पर भी उस की तरफ खीची जा रही है। वह धीरे धीरे हाथ पैर नचाता हुआ बढ़ रहा है। यह सँभलने की चेष्टा करती है मगर सँभल नहीं सकती है। उसने एकाएक अपनी कमर से एक बड़ासा फन्दा निकाला, – यह झिझक कर दूर हटी इतने में उसने एक विकट हँसी हंस कर उसकी गरदन पर उस फन्दे को डालना चाहा,—लेकिन यह भयानक दृश्य देखतेही वह आँखे बन्द करके देर तक रह न सकी,—डर के मारे घबड़ाकर उसने आखें खोलदी। उसकी छाती जोर जोर से धड़कने लगी।

आसमानो ने मारे डरके आख खोलतेही—उसकी निगाह रघुबर की पड़ी हुइ लाश पर गई। उसकी आखें सुफेद होकर ऊपर की तरफ उलटी हुई थी। उसे मालूम हुवा वह हँस रहा है,—मुह विचका रहा है.—आखें झपका रहा है। उसके तमाम बदन पर रोंगटे खड़े हो गए। उसके खौफ़ की हद न रही। तमाम शरीर पसीने से भर गया। हाथ पैर काँपने लगे। उसने उठना चाहा मगर उठ न सकी डरते-डरते उसने फिर लाश के चेहरे पर आखें जमाई। अबतो उसे साफ मालूम हुवा,-वह हँस रहा है,—वह भी विकट हँसी से हँस रहा है,-और आँखे खोलकर उसे गुस्से से घूर रहा है। यह देखतेहो उसके मुँह से दबी हुई चीख़ निकली। उससे अब और संभाला नहीं गया,—वह ज़ोर से उठकर मैना-मैना कहती हुई जिस दरवाजे से यह दोनों आए थे दरवाजे की तरफ भागाही

चाहती थी, इतने में धड़ाके के साथ पीछे की तरफ का दरवाजा खुला। उसने यह आवाज सुनतेही चौंक कर पीछे की तरफ घूमकर देखा—देखतेही उसके मुह से एक गहरी चीख निकल पड़ी। उसका शरीर बेंत की तरह काँपने लगा। वह अपने को संभाल न सकी। उस समय जहां वह खड़ी थी उसी जगह धड़ाम से बैठ गयी। उसके बैठतेही स्वयं महारानी मायादेवी धीरे-धीरे दरवाजे के अन्दर आती हुई दिखलाई पड़ी।

## दसवां बयान।
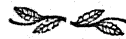
नीली पोशाक से अपने तमाम बदन को छिपाया हुवा एक आदमी को इस तरह आवाज देकर जङ्गला के भीतर भागता देख—अनन्त ने उसका पीछा करना चाहा मगर कुमार केशरी सिंहने उसे ऐसा न करने देकर कहा—'बस, अनन्त, अब इसके फेरमें मत पड़ो। हमलोग जहाँ तक जल्द हो सके उसे कस्बे में पहुँच कर कोई किराये की सवारी लेकर के चले चलें। इस हालत में हमलोगों को रुककर दुश्मनों का पीछा करना मुनासिब नहीं हैं। उनकी बातें सुन वह रुक गया। इसके बाद चारो आदमी उन दोनों बेहोशों को उठा तेजी के साथ चलकर उस कस्बे में पहुँचे। वहाँ पहुँच कर पूछ-ताछ करने पर एक बैठने के लायक सराय मिली। वे सब वहीं जाकर बैठे। इस समय आसमान पर सुबह की सुफेदी छा गयी थी। अनन्त की कोशीश से कुमारी मानिनी और बेला होशमें आईं। गुलाबने सारा किस्सा कह

सुनाया। कुमारी ने बड़ी कृतज्ञता की दृष्टि से कुमार की तरफ देख प्रणाम किया। देरतक बातें होती रही,-इसके बाद नहा, धो, खापीकर सराय वाले से कटक तक घोड़ा पहुँचाने के लिए छ घोड़े का इन्तजाम करदेने को कहा गया। मगर एक घोड़ा गाड़ी और तीन सवारी घोड़े के अलावे उस समय और घोड़ मिल नहीं सके। कुमारने कहा—यह भी अच्छा ही हुवा, तीनो औरतें गाड़ी पर सवार होगी, हमलोग घोड़े पर सवार होकर साथही साथ चले चलेंगे। गाड़ी घोड़े आगए। अपनी दोनों सहेलियों के साथ कुमारी गाड़ीपर सवार हुई। कुमार और उनके दोनों ऐयार घोड़े पर सवार हुए।

ये सब जङ्गली हो जङ्गल इस तरफ आ निकले थे, इसलिए-इस रास्ते से जाने में फर्क साठ कोस की दूरी पर पड़ता था,—मगर सड़क पीसी हुई साफ और चौड़ी थी। कुमार ने सराय वाले को भरपूर ईनाम दिया। इसके बाद गाड़ी तेजी के साथ उसी सड़क से होती हुई कटक की तरफ चलने लगी। कुमार भी अपने दोनों ऐयारों के साथ उसी के पीछे–पीछे रवाना हुए। दिन दो घण्टे से ऊपर चढ़ आया था। धूपके कारण पेड़ों की छाह इस समय भी बहुत ही भली मालूम पड़ती थी। कुमार के दोनों साथी भी कुमारी मानिनी को बचाकर ले आने की खुशी में उत्साहित हो चल-रहे थे। इस समय कुमारी की खुशी का तो कोई ठिकाना नहीं था, वे बारबार गाड़ी के पास आकर कुमारी की तबी-अत का हाल उससे दर्याफ्त करते थे। ये लोग बारह बजे तक इसी तरह बराबर चलते रहे,-गर्मी के मारे घोड़े और घोड़े पर सवार होने वाले सभी व्याकुल दिखलाई पड़ने लगे। पसीने से सबों का बदन भीग गया था। प्यास के मारे

तारू चटकने लगी। इतने में एक छोटा सा गांव आ पड़ा, जानवर बहुत थक गए थे सभों की राय-कुछ देर यहां ठहर कर आराम करने के बाद चलने की हुई। आखिर एक सराय में जाकर थोड़ी देर के लिए ये लोग सवारी से उतर पड़े। गाड़ीवान एक शीख की तरह दाढ़ी मूछ रक्खा हुवा एक हट्टा कट्टा जवान था,—उसने तुरन्त अपने घोड़े को मल, दाना घास देकर ताज़ा किया। सराय वाले से कहकर दलीपने भी अपने तीनों घोड़ों को दाना घास दिलवाया। सबों ने खा पीकर कुछ देर आराम किया। इसके बीचमें मानिनी ने अपने फँस कर मनोहर से सताकी आने का हाल बयान किया। जिसको सुनकर कुमारने कटक पहुँचने के बाद उसको उसके सामने लाकर सज़ा दिलवाने की प्रतिज्ञा की। कुछ देर तक इध र उधर की बातें होती रही।

दो बजे का समय था, सरायवाले को ईनाम देकर ये लोग अपनी अपनी सवारी पर चढ़ वहाँ से रवाना हुए। अब भी धूपमें बड़ी ही गर्मी थी। ये लोग इस बात की कुछ भी परवाह न कर तेज़ी के साथ आगे की तरफ बढ़ने लगे। कुमार बार बार पीछे की तरफ फिरकर--किसी के पीछा करके आने की आशङ्का से देखा करते थे। अभी कटक पहुँचने के लिए पैंतीस कोश की दूरी थी,-इतने में कुमार ने पीछे की तरफ मुड़कर देखा और कुछ चौंक कर कहा—देखो-अनन्त बहुत दूर पीछे—इधरही आते हुए कुछ सवार दिखलाई पड़ते हैं, मालूम होता है—ये लोग मनोहर के आदमी हैं और हमलोगों का पीछा किए हुए चले आते हैं। हमलोगों को तो इन सब चिउटियों से कुछ परवाह नहीं, है मगर कमज़ोर और

डरी हुई कुमारी को किस तरह से बचावेंगे। मालूम पड़ता है वे लोग गिन्ती में बहुतही ज्यादा हैं।

अनन्त-( देखकर ) बेशक, बहुत ही ज्यादा मालूम पड़ते हैं। अगर एक के मुकाबले में छ छ होंतो कोई परवाह नहीं, हमलोग उनको,—जिस शरारत के रास्ते पर चलने का उन लोगों ने कहा कस्द किया है,—उनकी उस रास्ते पर खूब-खातिर दारी करके,-फिर भूलकर भी इरादा कर बैठने की आदत छुड़ादेंगे।

कुमार—जरूर जरूर, मगर इस समय मुझे कुमारी कि चिन्ता है।

अनन्त—आप इस समय उसको अपने दिलमें जगह न दीजिए। परमात्मा चाहेंगे तो हमलोगों की हिम्मत के सामने वे लोग जराभी ठहर न सकेंगे।

कुमार--मालूम पड़ता है-इस समय मनोहर भी इनलोगों के साथ है।

अनन्त—सम्भव है। मगर-अबकी वह बचकर भी नहीं जा सकता।

दलीप—मैं सच्चे दिलसे कहता हूं,-जबतक इस जानमें जान है तबतक मनोहर तो क्या मनोहर के बाप उतर आवें तब भी कुमारी और उनकी दोनों सखियों की तरफ किसो को निगाह उठाकर भी न देखने देंगे। क्या उन सबों ने इस बात को खेल समझ रक्खा है। वे सब भी मुकाबिले पर उठ कर आज किसी की तलवार का मजा चखवेंगे।

कुमार—शाबस दलीप शाबस, तुम्हारी हिम्मत को मैं अच्छी तरह पहचानता हूं। तुम कभी उनलोगों को गाड़ी के पास तक फटकने न दोगे।

अनन्त—(हँसकर) आपजानते हैं-इसका जोश इस समय गुलाबी की वजह बढ़ रहा है,-नहीं तो इसको ऐसा कहते कभी आपने सुना है।

दलीप—तुम बड़ेही वाहियात हो,-क्या ऐसे समय में भी कोई दिल्लगी करता है। मुझे गुलाब से क्या मतलब? मैं तो कुमारी के लिए जान दिया चाहता हूं।

अनन्त—तुम बिगड़ते क्यों हो, मैं झूठ थोड़े ही कह रहा हूं?

दलीप—तब तो तुम भी बेला के लिए सब कुछ कर रहे हो। क्या मैं इस बात को नही जानता? अपने को अलग करने का ढङ्ग सभी जानते हैं।

कुमार—हां हां, तीनों के लिए तीनों जोशमें भरे हुए हैं,-इसके लिए तुमलोग क्यों लड़ते हो। किसी तरह से भी, इन दुश्मनों के हाथों से इन अबलाओं को बचाना चाहिए।

अनन्त—(हँसकर) ये सब बातें तो यह कुछ समझता है नहीं, अपनी ही टेटें करता जाता है। देख पीछा करने वाले करीब-करीब हो रहे हैं। अब अपने जोश को तिगूना करके बैठ। मैं कटक पहुँचने पर तेरी खूब दिल्लगी उड़ाऊँगा।

कुमार—जोर जोरसे मत बोलो देखो-कुमारी और उनकी दोनों सखियों के कान पें इस बात की भनक पड़ने न पावे। वे लोग बहुत ही डरी हुई हैं,—इस बातको सुनकर और भी डर जायंगी। मगर—देखो तो वह गाड़ीवान बार-बार उचक-उचक कर क्यों पीछे को तरफ देख रहा है। क्या उसे भी सवारों के आनेका शक हो गया है?

अनन्त—शक तो होगा-मगर उसका इस समय कुछ औरही रङ्ग ढङ्ग मालूम पड़ता है? वह गाड़ी को तेजी के

साथ चलाने के बदले धीरे-धीरे घटता हुआ चला जा रहा है। कुमार ने कुछ आगे बढ़ कर गाड़ीवान को गाड़ी तेज चलाने का हुक्म दिया। उसने घोड़े पर चाबुक उठाई वे तेज़ी के साथ कनौती काटे हुए भागने लगे। ये तीनों भी उसी के साथ साथ चलने लगे। कुछ देर के बाद कुमार ने पीछे फिर कर देखा और चौंक कर कहा ओफ,—ये सब तो बहुत से नजर आते हैं अनन्त,—मैं समझता हूं पचास से किसी तरह कम न होंगे। देखो-उनके हथियार धूप में कैसे चमक रहे हैं? बेशक. ये सब मनोहर ही के आदमी हैं। इस समय उनके सिवाय हम लोगों का पीछा करने वाला और कौन हो सकता है?

दलीप—ये बातें तो उन लोगों की पोशक ही बतला रहीहै।

अनन्त—हां, यह ठीक कहता है,—फालसे रंग की वर्दी से इसकी मुठ भेड़ एक मर्तबः होकर कुछ चोट खा गया है, इसलिए उसका ध्यान इसके दिल में बनाही हुवा है।

दलीप—यह मत कहो, – कहां ख्याल का पक्का है। एक बार देखी हुई बातें तुम्हारी तरह थोड़े ही भूलने वाले हैं?

कुमार – खैर-इन सब बातों को इस समय रहने दो, अब बताओ अनन्त क्या किया जाय?

अनन्त – इस समय वे सब दो मील की दूरी पर होंगे। अगर हम लोग चाहें तो हर तरह से निकल जा सकते हैं। मगर गाड़ी किसी हालत से भी उन लोगों के हाथ से बच नहीं सकती।

कुमार – बेशक, तो फिर क्या किया जाय?

अनन्त – ये आने वाले सवार हम लोगो के अन्दाज से बहुत ज्यादः हैं। ताज्जुब नहीं—उन लोगों के पास कोई तिलस्मी

हथियार भी हो। ऐसी हालत में उन लोगों का मुकाबला करना सरासर पागलपन है?

दलीप—देखो कुमार, इनका कलेजा अभी से दहल उठा, मैं तो कभी ऐसे मौके पर ऐसी बातें नहीं कहता।

अनन्त—बेशक बेशक, तुम बड़े बहादुर हो। हम लोग कुमारी को लेकर चल देते हैं तुम डँट कर इन लोगोंसे मोर्चा लो?

दलीप—तब तो बेकार मैं किस के लिए अपनी जान खोने बैठूंगा।

कुमार—हां तो अनन्त बताओ अब क्या करना होगा?

अनन्त—उन लोगों से लड़कर तो हम लोग इस समय कुमारी को बचा नहीं सकेंगे। इससे बेहतर तो अब इस गाड़ी को छोड़ कर, उन तीनों को घोड़े पर सवार करालेने ही से होगा। मालूम होता है—गाड़ीवान भी उन्हीं लोगों से मिला हुआ है। ताज्जुब नहीं—सूरत बदल कर उन्ही के साथी में से कोई आया हो। खैर जो कुछ भी हो। इस गाड़ी को अब छोड़ ही देना चाहिए। आप कुमारी को अपने घोड़े पर चढ़ा लीजिए,—मैं बेला को अपने घोड़े पर ले लेता हूं,—और दलीप, तुम गुलाब को अपने घोड़े पर सवार करा लो?

दलीप—(हंसकर) देखो, कुमार इन्होंने कैसी अच्छी तरकीब निकाली।

अनन्त—मैं इस वक्त तुम्हारी बातें नहीं सुनता। कुमार, जल्दी कीजिए,—अब वक्त नहीं है। उन तीनों को सवार कराने के बाद अपने घोड़ों की तेजी पर भरोसा कीजिए और अपने को परमात्मा की मेहरबानी पर छोड़ दीजिए। वे बड़े ही विवेकी हैं,—जरूर हम लोग बेलाग बचा कर चले जायंगे। कुमार को यह बातें बहुत ही पसन्द हुईं। उन्होने आगे बढ़

कर गाड़ीवान को गाड़ी रोकने का हुक्म दिया। वह तो यही चाहता था,—उसने सुनते ही गाड़ी रोक दिया। मानिनी ने गाड़ी से बाहर झांक कर इसका सबब दर्याफ्त किया। कुमार ने जल्दी-जल्दी में उसे दुश्मनों का पीछा कर आने की बात समझा गाड़ीवान को कुछ अशर्फियां दे कर कहा—देखो गाड़ीवान, तुम्हारे घोड़े बहुत थक भी गए हैं—और हम लोगों को जल्दी से निकल भागना है,—अब तुम वापस जावो तुम्हारी इस वक्त जरूरत नहीं है। सराय वालों को कह देना, तुम्हारे तीनों घोड़े परसों तक आ जायंगे। जल्दी करो, उन तीनों को उतर आने का रास्ता बना दो। देखो पीछा करने वाले हमारे दुश्मन बहुतही पास आ पहुंचे। तुम चाहे जो भी हो मगर वे सब तुम को नुकसान न पहुँचावेंगे। इतना कह कर उन्होंने जल्दी से गाड़ी का परदा हटा दिया और उन लोगों की तरफ देख कर कहा—बस अब देर मत करो, उठो और दिलेर बन कर हम लोगों के साथ घोड़े पर सवार हो लो। देखो—पीछा करने वाले बहुत ही करीब आ पहुँचे हैं। इस वक्त उन लोगों के मुकाबले पर खड़े होना हम लोगोंने बिलकुल ही मुनासिब नहीं समझा। उतरो, जल्दी से उतर पड़ो। यह सुनते ही वे जल्दी जल्दी उतर पड़ीं और कुमार ने मानिनी को अपने घोड़े पर सवार करा लिया। इसके बाद—अनन्त ने हाथ बढ़ा कर बेला को अपने घोड़े पर चढ़ा लिया और दलीप ने मुस्कराते हुए गुलाब को खींच अपने घोड़े पर सवार कराया। इतने में दूर से बन्दूक के छूटने की आवाज आई। कुमार ने अपने घोड़े को तेजी के साथ कटक की तरफ बढ़ाया। उनके दोनों साथी भी उनके पीछे पीछे रवाना हुए। गाड़ीवान खड़ा होकर दोनों तरफ

देखने लगा। ये सब भागने वाले बात की बात में उसकी नजरों से गायब हो गए। पीछा करने वाले सवारों ने आकर गाड़ीवान से कुछ पूछा,—इसके बाद दूनी तेजी के साथ घोड़ा बढ़ाए हुए आगे की तरफ रवाना हुए।

कुमार केशरी सिंह का घोड़ा और घोड़ो में से बहुत ही तेज और फुर्तिला था। इसलिए वे अपने साथियों से एकदम आगे निकल गए। उन्होंने इस तरह उन लोगों के पीछे रह जाने से अपने घोड़े की चाल जरा भी कम न की,—तिसपर अनन्त ने भी आगे बढ़ते ही उन्हे—हर तरह से कुमारी को बचा कर निकाल ले जाने की हिदायत करदी थी,—साथ ही कुमार भी उसे हर तरह से बचाना चाहते थे। इसलिए घोड़े में जहां तक दम था उन्होने उसकी चाल को तेज ही करने की कोशिश की। यह देख अनन्त और दलीप बहुत ही खुश हुए। उन्होंने सोचा,—कुमार और कुमारी बच कर निकल जायंगे तो हम लोग फँस भी जायँगे तो किसी न किसी तरह बच कर निकल सकेंगे। अगर वे दोनों फँसे तो तिलस्मी अंगूठी भी जाती रहेगी और साथ ही दोनों की जानपर आ बनेगी। वे लोग कुछ दूर आगे बढ़ कर आने के बाद ही एक मोड़ पर जाकर – दोनों दो ओर से – झुरमुट के बीच में घोड़ा शुदा छिप गए।

कुमार तेजी के साथ बढ़ते ही गए। उन्होंने उस वक्त घोड़े के जान की कुछ भी परवाह नहीं की घोड़ा भी हवा से बातें करता हुआ उड़ता जाने लगा। सड़क के दोनों ओर लगे हुए पेड़ सन-सन करते हुए निकलने लगे। आध घण्टे के बाद कुमार ने घूम कर देखा – पीछा करने वाले सवारों का तो क्या उनके साथियों का भी कहीं पता नहीं था। यह

उन्होने कुमारी से कहा—मालूम होता है—हम लोग अपने साथियों से भो कई मील आगे निकल आए।

कुमारी—तब तो हम लोगों को अपने घोड़े की चाल कुछ कम करके उनका रास्ता देखना चाहिए। बिचारों के ऊपर न जाने कैसी मुसीबत आई होगी।

कुमार—नहीं, प्रिये, इस वक्त उन लोगों का रास्ता मत देखो। उन लोगों से दुश्मन बोलेंगे भी नहीं,—अगर कुछ बोलकर उन लोगों को गिरफ्तार किया भी तो वे चारो ऐयारी के फन में उस्ताद हैं—किसी न किसी तरह निकल आवेंगे। बचना है हम लोगों को,—और उन्होने पीछा भी किया है हम ही लोगों का। तुम सँभल कर रहो,—मैं घोड़े की चाल और भी तेज करता हूँ।

कुमारी—तब तो प्रीतम, मैं सँभल न सकूंगी। मेरा शरीर इस वक्त बहुत ही कमजोर हो रहा है। मैं रह-रह कर इस तेज चाल से गिरना चाहता हूं।

कुमार—तुम घबड़ाओ मत, मैं तुम्हे अच्छी तरह थामे हुए हूं। अगर इस वक्त घोड़ा ठोकर भी खा जायगा तो तुम्हे गिरने न दूंगा। इतना कह कर उन्होने उसे भरजोर पकड़ कर घोड़े को और भी भगाया। कुछ दूर इसी तरह तेजी के साथ जाने के बाद उन्हे सड़क बगलही में जंगल के अन्दर से जाता हुवा एक सीधा रास्ता दिखलाई पड़ा। उन्होने इसको इस समय दुश्मन की आंख में धूल झोंक कर निकल भागने का अच्छा जरीया समझ,—अपने घोड़े को उसी तरफ फेरा। यह रास्ता सड़क की तरह पीसा हुआ नहीं था,—आदमियों ने लकड़ी काट कर बैलगाड़ी से इस तरफ, उस तरफ की सड़क पर निकालने का एक कच्चा रास्ता बनाया हुवा था।

इस समय घोड़ा उस तेजी के साथ बढ़ चलने में लाचार हो रहा था। कुमार ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया। रास्ते को देखते हुए वे उसकी मर्जी पर भगाने लगे। इसी तरह करीब आध घण्टे तक चलने के बाद जंगल पार कर एक मैदान में पहुँचे। वहां आकर कुमार ने चारो तरफ निगाह दौड़ाई--मगर बड़ी दूर पर दिखाई देनेवाला पहाड़ी सिलसिला के सिवा वहां पर उन्हे कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ा। प्यास के मारे इन दोनों की जबान तालूके साथ सटी जा रही थी—परन्तु लाचार, उस सन्नाटेके मैदान में कहीं भी नदी नाला दिखलाई नहीं पड़ता था।

वहाँ आते ही उन्होंने एकबार पीछे घूम कर देखा-इसके बाद घोड़ेकी चाल को कुछ कम किया। इस समय पांच बजेका वक्त था। भगवान् सहस्रांशुकी तेज किरण कुछ शिथिल हो सोनेके रङ्गकी हो रही थी। कुमार कुछ आगे बढ़े; उन्होंने पाव मील तक चलने के बाद अपने घोड़ेकी चाल को कुछ कम की। इतने ही में उन्होंने दस कदम आगे एक नाला-देखी,- जिसको देखते ही वे चौंक कर कहने लगे—'ओफ़, प्यारी अगर मैं घोड़े की चाल को एक दम ही कम न किये होता तो अवश्य इस नाले में गिर कर हम दोनों की जान चली जाती। परमात्मा ने बाल बाल हम लोगों को बचाया।

कुमारी—बेशक, प्यारे, कितना गहरा और किस सूरत से यह नाला जमीन के बरोबर मिला हुवा है। तुम्हारे मन में वह बातें आकर घोड़े को न रोका गया होता तो ज़रूर इसमें गिर कर हम लोग मर जाते। अब ऐसा उपाय करो-जिससे इस नाले के अन्दर उतर कर पानी पीएँ। प्यासके मारे गला सूखा जा रहा है। कुमार ने घोड़े को कुछ आगे बढ़ा कर देखा, वास्तव में वह नाला बड़ा ही विचित्र था। उसको देखकर—

मैदान बहुत दूर तक मुंह बाए हुए मालूम पड़ता था। उन्होंने निगाह उठा कर इधर उधर देखा—मगर उसके अन्दर उतरने की कहीं से जगह नहीं देखा। किनारे से झांकने पर मालूम हुआ—वह नाला गहरा भी हद से ज्यादा था। रास्ता ढूंढ़ते हुए कुमार उस नाले के किनारे किनारे कोस भर से भी ज्यादा निकल गए। वह नाला कहीं से बहुत ही ज्यादा चौड़ा और कहीं से कुछ कम चौड़ा मिलता जाता था, परंतु उसको पार कर निकल जाने का कहीं से भी मौक़ा नहीं मिलता था। वे बड़े ही चक्कर में पड़े,— उनको इस समय सड़क छोड़कर इस तरफ आने का बड़ा ही अफ़सोस हुआ। उन्होंने कुछ सोच कर घोड़े को धीरे-धीरे किनारे ही किनारे चलने दिया। इतने ही में पीछे से बन्दूक के फैर करने की आवाज़ आई और साथही सन-सनाती हुई गोली आकर घोड़े के पिछले पैर के पास ही गिरी। उन्होने पीछे मुड़ कर देखा तो एक रोबीला खूबसूरत नौजवान सवार को दस सवारों के साथ बन्दूक तान पीछा करते हुये आते पाया। उन्होंने भी अपना तमञ्चा हाथ में लियो। वे लोग इस समय तेज़ी के साथ इनकी तरफ़ बढ़ रहे थे। कुमार ने देखा—अब घोड़ा दौड़ाकर निकल जाने की जगह नहीं है, वे कुछ हतास भी हो गये। उन्होंने सोचा—इनके मुक़ाबले में इस समय लड़कर पार नहीं पा सकता अगर कुमारी न होती तो मैं किसी न किसी तरह इन लोगों को चीना दिखा कर निकल जाता। यह सोचते ही उनका दिल उदास हो गया फिर एक गोली सन-सनाती हुई आकर पासही गिरो। कुमार ने समझा अब हम दोनों की जान जाने में किसी तरह का भी शक नहीं है। उन्होने तमञ्चा उठाकर पीछे की तरफ

फैरकी, साथ ही उनमें से एक सवार जोर से चिल्लाकर घाड़े पर से लुढ़कता हुवा दिखलाई पड़ा। कुमार ने फिर फैर किया, अबकी कोई गिरा नहीं। गोली निशाना चूक गई। इतने में उस तरफ से कई एक फैर हुई-मगर कोई भी गोली आकर लगी नहीं। सब के सब आस पास ही आकर गिरीं। कुमार को इससे कुछ ताज्जुब भी हुवा। कुमारी ने इस तरह पीछा करने वाले को अपने सिर पर आ पहुँचे हुवे देख-पुकार कर कहा—'मेरे जीवन सर्वश्व, मेरे आराध्य देवता,-अफसोस! तुम मेरे लिए इस समय नाहक ही अपनी अमूल्य जान दे रहे हो; छोड़दो मुझे जल्दी से छोड़ दो,—मैं उतरती हूँ, मेरे ही लिए ये सब पीछा करते हुए आ रहे हैं,-मुझे एक गोली का निशाना बनने दो। सब बखेड़ा तै हो जाता है। तुम बे लाग निकल जा सकते हो। तुम बचोगे तो मुझसी लौंडी हजारों पावोगे। जल्दी करो—मुझे उतार दो। मैं अपने साथ तुम्हारी कीमती जान को इस तरह इन लोगों की गोली का निशाना बनना नहीं देना चाहती।

कुमार ने हर तरह से उसे ढाढ़स देकर बड़े प्रेम के साथ कहा,—प्यारी माननी,—तुम क्यों घबड़ाती हो; ईश्वर का नाम लो, डरो मत, संभलो, संभलकर मुझसे खूब चिपट जावो। ये सब सिर्फ तुम्हारे ही लिए नहीं है। देखो–तुम तो पहचानती हो, वह खूबसूरत नौजवान जरूर मनोहर ही होगा। वह मुझसे वही तिलस्मी अंगूठी लिया चाहता है। खैर—तुम हिम्मत न हारो, अगर परमात्मा चाहेंगे तो बेड़ा पार हो जायगा। संभल जावो, अब मैं एक आखिरी हौसला करता हूँ,—अगर हो सका तो दुश्मन के पंजे से अपनी जान बचालेंगे,—नहीं

तो दोनों आदमी लिपटे हुये दूसरे जन्म के लिये मौत के मुंह में चले जायँगे।

कुमारी ने कुछ जोर से कहा-तुम क्या करना चाहते हो प्यारे!

कुमार--देखती रहो,-मैं तुम्हे जहां तक हो सकेगा बचा लूंगा। उन्होंने उसको जो कुछ आखिरी हौसला करना चाहते थे, बताया नहीं, उन्होंने सोचा-,-यह सुनकर डर जायगी। उन्होंने घोड़े को बढ़ाया। पीछा करने वाले अब बराबर गोली चलाने लगे,-मगर बचा बचाकर। उनकी नीयत उन दोनों को मारडालने की न थी। सिर्फ वे लोग बन्दूक का मुंह नीचा करके फैर करते हुये घोड़े को गिराकर, उन दोनों को आसानी के साथ जीते ही गिरफ्तार करना चाहते थे। उनकी नीयत को कुमार भी भाँप गये। इसलिये उनका साहस दूना होगया। उन्होंने कुमारी को दम दिलासा देते हुये नाले के किनारे घोड़े को बढ़ाया। दुश्मनों की कोई भी गोली आकर घोड़े को न लगी। अन्त को-कुमारने एक जगह से कम चौड़ा नाला देखा,-उनकी तबीअत प्रसन्न होगई। उन्होंने घोड़े को चक्कर देकर घुमाया, साथ ही उसे थपथपा कर तेजी के साथ एंड़ लगा नाले के पार कुदा दिया। मानिनी के मुंह से एक गहरी चीख निकल पड़ी। घोडा सही सलामत के साथ नाले के पार हो गया। कुमार की छाती खुशी से धड़कने लगी। उन्होंने ईश्वर को मुक्त कण्ठ से धन्यवाद दिया। पीछा करने वालों ने घोड़े का कुदाना देख लिया,—जिसको देखकर उनलोगों के मुंह से भी वाह वाह की आवाज आने लगी। कुमार ने तेजी के साथ घोड़े को आगे की तरफ बढ़ाया। पीछा करने वाले को घोड़ा कुदाने का हौसला न हुवा, उनमें से एक ने जोर से पुकार

कर कहा–सम्भलना,–किसी तरह से जाने न पावे ? यह आवाज इन दोनों के कान तक भी आई, मगर कुमार ने इस बात की कोई भी परवाह न की घोड़े को बढ़ाकर बहुत दूर निकल गए।

सन्ध्या हुवा ही चाहती थी, इतने में कुमार एक गाँव में पहुंचे। वहां ठहरने के लिये एक अच्छी सराय मिली। घोड़े का दाना घास खिलाने का बन्दोबस्त कर ये दोनों एक कमरे में गये। वह अमीरों के रहने लायक का बनाकर सब तरह के सामानों से सजा हुवा था। वहां पहुंचते ही मानिनी ने दरवाजा बन्द कर दिया और दोनों जाकर टेबुल के पास कुर्सीपर बैठ गये। मानिनी ने कहा–प्यारे, तुम्हे किस मुंह से धन्यबाद दूँ ? आज मुझे अपनी जान बचाने की किसी तरह से उम्मीद न थी। तुमने जिस तरह मुझे दुष्ट, आततायी के पंजे से छुड़ाकर मेरी लज्जा रक्खी है उसके बदले मैं अपने चमड़े की जूती भी बनाकर पहना दूँ तो हो नहीं सकता।

कुमार––प्यारी, तुम मुझे क्यों इस तरह सातएं आसमान पर चढ़ाती हो। तुम्हे दुश्मन के हाथ से बचाना तो मेरा सबसे पहले कर्त्तव्य था।

कुमारी––सो तो था, मगर प्यारे तुमने किस जवांमर्दी के साथ अपनी जानपर खेलकर मुझे बचा के ले आये वह मेरा जीही जानता है। मैंने तुम्हे देखा नहीं था,–तब भी तुम्हारे ही नाम की माला जपती थी, अब तो जी जान से तुम्हारी दासी हो गई। मैं सिवाय तुम्हारी हर तरह से खिदमत करने के और क्या कर सकती हूं। इतना कहकर उसने कुमार के कन्धे पर दोनों हाथ रख उनके मुँह में मुँह देकर

जोर से चुम्बन लिया,—साथ ही उसके मुंहसे गर्द की तरह कोई सुफेद चीज उड़कर कुमार के नाक की राह भीतर चला गया और उसी दम दो तीन छींक मारकर वे बेहोश हो, जमीन पर गिर पड़े। उनके गिरते ही मानिनी के मुंह से एकाएक--'वह मारा' कहने की आवाज आई। इसके बाद उसने कुमार की तलाशी लेकर उनकी जेब में से तिलस्मी अंगूठी निकाल, खुशी-खुशी दरवाजा खोलकर बाहर जाया ही चाहती थी, इतने में दरवाजे के बाहर अद्भुतनाथ को खड़े देख,--डरके मारे जोर से चिल्लाकर उलटे पैर देहलो के अन्दर आ दरवाजा बन्द करने के लिए हाथ बढ़ाया।

# ग्यारहवां बयान।

"नहीं अब मैं कमरे के अन्दर हर्गिज न आऊँगा, मेरी बन्दगी है, जाता हूँ-फिर कभी इत्तफाक़ हुवा तो आजाऊँगा" कहता ऊवा एक निहायतही खूबसूरत नवयुवक महारानी महामाया के आराम-गाहकी देहली से उलटे पैर लौटा। इस समय बहूरानी अकेली मखमली गद्दी पर बैठी हुई,—अपने ही हाथ से—एक छोटी सी बिल्लौरी ग्लास में—खुश्बूदार अर्क ढाल-ढालकर थोड़ा-थोड़ा पी रही थी। रोशनी से कमरा जगमगा रहा था। उन्हों-ने उस युवक को इस तरह लौटते देख कुछ मुस्कुरा कर कहा—,वाह भई' तुमतो नाज़ करने में नाज़नियों को भी मात करते हो। भला, मैंने ऐसा कौन कसूर किया ह जिसके लिए तुम देहली के अन्दर भी न हो कर उलटे पैर लौट रहे हो। अगर तुम्हे इसी तरह लौट जाना ही था तो ख़ाली अपनी एक झलक दिखाने ही के लिये आए थे क्यों?

उसने ज़रासा घूम कर कहा—मुझसे यह गल्ती हुई महा-रानी साहेबा. माफ़ कीजियेगा। अब आइन्दा इस तरह की गल्ती...

महारानी—( हँस कर ) खैर—गल्तो हुई तो थोड़ी सी और सही आइन्दा तो कभी—किसी तरह की गल्ती न होगी न,

आवो, जरा पान तो खालो। यों मचल-मचल कर किसी को दूरही से निशाना बनाने में क्या फ़ायदा ?

वह--बस, माफ़ कीजियेगा महारानी साहेबा,-मैं इस वक्त वेकार आ कर अपने को फ़ज़ूल के कामों में नहीं फँसा सकता। घर पर बड़े-बड़े काम पड़े हुए हैं। मैं कुछ आप की तरह बेकार बैठ कर अन्दाज से भी बढ़ कर सुख उठाने वाला थोड़े ही हूँ,—तिस पर मुझे तो कोई इस तरह अकेले बेकार बैठावे तो मेरा दम घुटने लग जाता है।

महारानी—( खिलखिला कर हँसती हुई ) सो तो मैं अच्छी तरह से जानता हूँ विनोद, मगर मेरे सरकी क़सम, थोड़ी देर बैठ जावो, कुछ काम है। क्या जरासा मेरा काम करते न जावोगे ? क्या अब तुममें इतनी निठुराई आगई ? क्या थोड़ी देर बैठ जानेसे तुम्हारा हर्ज हो जायगा। आवो, इस तरह दूर ही दूर उड़े हृदय को मज़बूत रस्से से बाँधकर मत खींचो। मैं हाथ जोड़ती हूँ,—पाँव पड़ती हूँ। अब तो मान जावोगे ?

विनोद—( देहली पर खड़े होकर ) बस, वही रोज रोज की चाल शुरू न की आपने ! जैसा कुछ काम है वह सब मैं अच्छी तरह से जानता हूं।

महारानी--मगर-आज तुम यह आप-आपका नया ढर्रा कहां से लिए हुए आते हो ? क्या किसी ने तुम्हे आपके रङ्ग में डुबोकर तो नहीं भेज दिया है। मैं सच कहती हूं, कुछ काम है ? अगर काम न होता तो तुमे इस तरह गिड़-गिड़ाकर हर्गिज न रोकती ?

विनोद—( मुस्कुराकर ) वाह वाह, दुनियां में भी कैसे-कैसे ढङ्ग के लोग होते हैं। अभी तो—जरा पान खाते जावो-

ही था। अब काम भी निकल पड़ा। कहीं रहते-रहते को दूसरी बात भी न निकल पड़े।

महारानी—नहीं नहीं विनोद,—काम के सिवाय और इस समय कुछ भी बातें निकल न पड़ेगी। तुम डरो मत, बहुत बडा काम नहीं है, बहुत हो छोटा काम है, तुम चाहो तो...

विनोद—मैं चाहूँ तो काम को जीतेजी हड़प कर सकता हूं, यही न मगर आपको...

महारानी—फिर यह तुमने आपको और आपके बाप को कहने की बुरी आदत कहाँ से सीखी है? क्या इसे अब छोडोगे?

विनोद—खैर माफ़ करो महारानी आज गलती पर ग़ल्ती हो रही है। अगर तुम्हारे सामने कुछ देर और रहूँगा तो न जाने कितनी तरह की ग़ल्तियां होंगी। आज मैं नाहकही बेवक्तकी शहनाई बजाने आया?

महा०—तो फिर इसमें हर्जही क्या है? तुम जिस तरह ग़ल्ती पर ग़ल्ती कर रहे हो, उस तरह मैं माफ़ पर माफ़ करने वाली हुई हूं। सच पूछो तो भई, मुझे तुम्हारी ग़ल्ती पर बड़ा ही मज़ा आता है।

विनोद—तुम्हे मज़ा आता होगा—मगर मुझे तो मज़ा नहीं आता। मैं जब एक ग़ल्ती करता हूँ तो दस अफ़सोस होता है।

महा०—(हँसकर) इसीलिए तो मुझे मज़ा आता है। आवो,—मेरे काम को चन्द मिनटों में निपटा कर चले जावो? आज तुम्हारी भी तबीअत खुश हो जायगी।

विनोद—किसी को अपनी तरह बैठाकर—झूठ-मूठ में हैरान करने से क्या फ़ायदा ! अगर काम होता तो-लाखों काम को छोड़ कर भी कर देता। वेकार तश्तरी पर ग्लास रखकर—उसकी परछाहीं में अपना मुंह देखते रहने से क्या लुत्फ ? मुझे इस समय तुम रोको मत, मेरा बडा ही हर्ज हो जायगा, कई तरह के अधूरे पडे हुए काम हैं। बिना उसको पूरा किए हुए मुझे दम लेने की भी फुर्सत नहीं है।

महा०—यह तो मैं नहीं कहती की तुम्हे कोई काम हई नहीं है, तुम जोरू जाते, घर-गृहस्थी वाले ठहरे, तुम्हे बहुत सा काम है। तिसपर इन दिनों तुम्हारी मेहरबानीकी नजर किसी ऐसे गुल के ऊपर पड़ी हुई है जिससे तुम्हे काम के मारे अच्छी तरह सांस लेने का भी समय नहीं है।

विनोद—यह तो तुम सरासर मेरे ऊपर झूठा इल्ज़ाम लगा रही हो। भला-तुम अपने ईमान से बताओ। मेरी नज़र किस......

महा०— स बस, ज्यादा उछलो कूदो मत,—धीरे से चले आकर मेरी बगल में बैठ जावो। मैं तुम्हारे कान में कहदूंगी।

बिनोद—कहदेना,—मगर इस वक्त तो मुझे बड़ा काम है,—मैं जाता हूं। कल फिर चला आऊंगा।

महा०—तुम तो भई शुरू से अब तक काम ही काम रट रहे हो ? क्या तुम्हारे काम का कुलावा कभी टूटने का नहीं है। करो, तुम अपना काम बड़ी खुशी के साथ करो,-मगर मेरी बातें भी तो जरूरी है। मेरा भी तो कुछ काम करना है। मैं भी तो संसार ही में हूँ। मेरे लिए भी तो काम की आवश्यकता है। आखिर तुमने इस झांव-झांव में इतना समय नाहक

ही में बर्बाद कर दिया,--अब तक तो पान भी खा लेते, कुछ बातें भी हो जातीं, साथ ही साथ मेरा काम भी निकल जाता। तुममें यही तो एक बुरी आदत बैठी हुई है। आवो—यह ग्लास अब अकेले मुझसे उठाया नहीं जाता।

विनोद—खूब,—पान के बाद काम, काम के बाद ग्लास का भी नाम आया। क्या मुझे यही उठाना होगा ?

महा०—नहीं नहीं, कई एक चीजें तुम्हे उठानी होंगी ?

विनोद—फिर सरकार, मुझे क्या मज़दूरी मिलेगी ?

महा०—( हँसकर ) जो रोज़ तुम्हे मिला करती थी।

विनोद—मुझे रोज़ क्या मिला करती थी, मुझे तो ख्याल नहीं है।

महा०—तुम आ तो जावो मेरे पास, मैं तुम्हे ख्याल दिला दूँगी।

विनोद—मैं पास आऊँ और तुम ख्याल दिला दोगी। ऐसा तो कभी हुआ ही नहीं था। आज क्या इस ग्लास देवने तुम्हे नयी बात सिखला दी है ?

महा०—तुम सीधी तरह आवोगे या मुझे उठकर आना पड़ेगा।

विनोद--मैं कह रहा हूँ-मेरे काम में हर्ज हो रहा है। तुम मानती ही नहीं हो। मैं तो यहाँ आकर एक बेढब बला में गिरफ्तार हुवा।

महा०—( हँसकर ) तुम सीधी तरह मानने वाले शै कहां हो ? क्या तुम्हारा पैर देहली ने पकड़ रक्खा है ? तुम यों न मानोगे ? इतना कह कर वह उठ खड़ी हो उसके पास आई और बड़ी मुहब्बत से उसे खींच कर उसी गद्दी पर

बैठाती हुई-कहने लगी जैसा आदमी होता है वैसाही बर्ताव भी करना पड़ता है। तुममें ईश्वर ने जैसी कमाल की खूबसूरती दी है वैसी ही लाजबाब ढीठाई भी दे रक्खी है।

विनोद—और तुममें तो यह सब बातें नहीं दी हैं। मैं देखता हूं—तुम मुझ से इन सब बातों में कई इञ्च बढ़ कर हो।

महा०—( उसके गाल में धीरे से चपत लगाकर ) बस, जबान संभाल कर बातें करो।

विनोद—जबान संभली—संभलाई है,—मगर यह तो बतलावो तुम मुझे कितनी देर तक इस तरह बेकार की हाँडो मझाती रहोगी ?

महा०—बस, केवल दो घण्टा।

विनोद—दो घण्टा ! दो घण्टा तो बहुत ज्यादा होता है। इतनी देर में तो मेरा सारा काम चौपट हो जायगा। मैं दो घण्डा न रहूँगा। तुम मुझे पान खिलावो और जो कुछ भी मुझ से कहना हो चट पट कह कर मुझे घता बतावो।

महा०—( उसके मुंह में ग्लास लगाती हुई ) खैर, इसको पी जावो तो मैं तुम्हें घण्टे भरही के भीतर पान,—पत्ता खिलाकर जाने को छुट्टी दूँगी। मगर यह तो बतावो आज तुम बड़े काम काजी मालूम पड़ते हो,—क्या काम है ? कहीं किसी की बरात तो नहीं सजानी है ?

विनोद—[ पीकर ] हाँ, करीब करीब ऐसे ही कुछ काम है। मगर देखना—मैं एक घण्टे से ज्यादा हर्गिज न रहूँगा। अच्छा लावो, मुझे पान दो।

महा०—( पान खिलाकर ) अब क्या मुफ्त में मेरा पान डकार कर कुछ न कहोगे ? बोलो—तुम्हारा क्या काम है ?

विनोद—मेरे घर आज कई एक मेहमान आने वाले हैं। उनकी खातिरी करनी है, उनको खिलाना है, पिलाना है,-हिफ़ाज़तकी जगह पर लेजाकर सुलाना है। कई एक काम हैं। तुमतो इन दिनों कुमार रणधीर सिंह के इश्क में बावली होकर किसी की परवाह नहीं करती हो मगर मुझे तो ऐसा करना नहीं है।

महा०—फिर तुम वही रोना ऐसे वक्त रोया करते हो। भला यह तो बतलावो,–वे सब तुम्हारे मेहमान मेरे भी जान-पहिचान के हैं?

विनोद—क्यों नहीं—एक तो शाहजादी जेबुन्निसा हैं, दूसरी महारानी अम्बालिका हैं, तीसरी रानी साहिबा भुवनेश्वरी हैं, चौथी राजेश्वरी बाई हैं। पाँचवें उनके कई एक ऐयार हैं।

महा०—यह तुम्हे किसने कहा?

विनोद—(हज़ारी बाग़ से लेकर सुरङ्ग के बङ्गले तक का हाल बताकर) मुझे यह सब ख़बरें मेरे एक ऐयार ने आकर दी है।

महा०–मगर वे सब मेरे यहाँ न आकर तुम्हारे यहाँ क्यों उतरेंगे?

विनोद—इसमें बहुत कुछ रहस्य हैं, इसीलिए तो मैं इस वक्त यहाँ चला आया हूं। इतना कहकर उसने धीरे-धीरे महारानी के कानके पास लेजाकर पाँच मिनट तक बात चीत की इसके बाद उसने कुछ जो इसे कहा—देखो, तुम अब उन लोगों से जरा होशियार रहो और अपने लायक पति विहारी सिंह को उनके बङ्गले के बाहर जाने मत दो। मैं

उन चारों शैतान की खालाओं को अच्छी तरह अपने कब्जे में लिए रहता हूँ।

महा०—प्यारे विनोद, आज तुमने बहुत सी भेद भरी बातें बताकर मुझे सावधान कर दिया। इसका एहसान कभी भूलूँगी नहीं। (एक ग्लास भरकर उसे पिलाती हुई) तुम्हारे उस ऐयार को मेरी तरफ़ से दस हज़ार अशर्फ़ी ईनाम में देना। मैं उसको अपने यहाँ रखलूँगी।

विनोद—खैर यह सब तो होता रहेगा, अब एक घण्टा पूरा होगया। मुझे जाने दो उन लोगों के आनेका वक्त़ हुवा।

महा०—होने दो, इस वक्त मैं तुम्हे बिना कुछ खिलाए-पिलाए जाने न दूँगी। मेरी तबीअत आज लहरा रही है।

विनोद—(हँसकर) तुम्हारी तबीअत कब नहीं लहराती है। मगर आज मेरी तबीअत कुछ उन्हीं लोगों की फ़िकर में पड़ी हुई है।

महा०—क्यों नहीं, चार-चार नाज़नियों का मुक़ाबला भी तो करना है। इसके जवाब में विनोद कुछ कहा ही चाहता था, इतने में घबड़ाई हुई सूरत से मानिनी ने आकर महारानी का पैर पकड़ लिया और फुक्का फाडकर रोने लगी। जिसको देख महामायाने चौंक कर उसे अपनी गोद में उठा लिया। विनोद हक्का-बक्का सा हो उसकी तरफ देखने लगा।

# बारहवाँ बयान
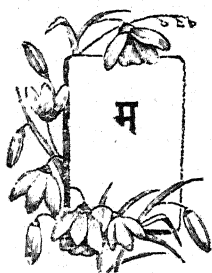
महारानी माया देवी को इस तरह, इस कमरे के अन्दर आती हुई देख आसमानी की जान सूख गई। उस समय उसके बदन में काटो तो खून का नाम निशान नहीं था। वह अपने संभाल न सकी। जिस जगह खड़ी थी, वहां बैठ गयी। इतने में इधर—उधर देखती हुई धीरे-धीरे धीरे महारानी भी उसके पास आगयी। उसने एक बार उसको गौर से देखकर अपनी नजर, दूसरी तरफ फेरी,—फेरते ही उसने रघुबर के निर्जीव लाश को देखा। मगर—उस के मुंह से कुछ आवाज नहीं निकली। वह कुछ देरतक उसी तरह खड़ी—खड़ी उसकी ओर देखती रही, इसके बाद फिर उसने अपनी नजर आसमानी की तरफ फेरी। खतरे का वह पहला वक्त निकल जाने के बाद, कायदे के मुताबिक आसमानी के होश भी कुछ दुरुस्त हो गए,—वह अपने दिल में इस भयानक आफत से बचने का तरीका सोचने लगी। उसने उस उपाय को भी सोच लिया। इसके बाद वह उठ खड़ी हुई। उसने अदब के साथ महारानी को सलाम किया। उसकी धड़कन बहुत कुछ कम हुई। उसने इस समय रघुबर की लाश को देखते हुए भी महारानी के चेहरे में कुछ फर्क नहीं पाया। मन ही मन उसने परमात्मा को धन्यबाद दिया। महारानी ने उससे नजर मिलाती हुई—

कुछ धीमी, मगर उत्सुकता भरी हुई आवाज़ में पूछा—आसमानी, मैं इस वक्त, तुम्हारे इस रङ्गीन कमरे के अन्दर, यह सब क्या तमाशा देख रही हूं। मुझे स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि यहाँ आकर मैं इस कमरेको इस मुर्दे के साथ तुम्हें अपने अन्दर लेकर मनहूस की सूरत बना हुवा पाऊंगी।

आस०—जी हां महारानी, आज इस कमरे में अनायास ही यह सब बातें हुई। मुझे लाचार होकर अपने को बचाने के लिये यह सब भयानक दृश्य को अपने हाथ ही से खड़ा करना पड़ा।

महा०—कैसे, जरा मुझे समझाकर तो बताओ?

आसमानी—आप कुर्सी पर बैठ जायँ तो मैं बताऊँ।

महा०—नहीं, मैं खड़ी खड़ी तुम्हारी बातें सुन लूँगी तब कुर्सी पर बैठूँगी।

आस०—यह तो सब किसी को मालूम है कि रघुबर आपके स्नेह पात्रों में से एक था। इसके ऊपर आपकी पूरी मेहरबानी थी, मगर अफसोस, मुझे यह सब जानते हुए भी निरुपाय बेवश होकर वह काम करना पड़ा जिससे आपके दिल में इसकी ऐसी हालत देख कुछ सदमा पहुँचा होगा।

महा०—नहीं पूरा पूरा हाल जाने बिना मुझे जरा भी अफसोस नहीं है।

आस०—खैर तो महारानी आपकी बढती हुई खातिरी के कारण यह इन दिनों कुछ ढीठ होगया था। इस लिए लौंडियों की तो बातें ही नहीं है, हम लोगों के साथ भी यह खुल्लम-खुल्ला मजाक किया करता था। सबसे ज्यादा तो यह मेरे ही पीछे पड़ा था,—मुझे ही हैरान करता था, मेरे साथ ही छेड़-खानी की बातें निकाला करता था। मैं इसके लिए इसको

बहुत मना करती थी मगर यह अपने घमण्ड में भूला हुवा उस बात की रत्ती भर भी परवाह नहीं करता था।

महा०—हाँ तो फिर क्या हुवा?

आस०—इसके उस तरह दिक़ करने से मैं निहायत ही तंग आगई थी, मगर डरके मारे आपसे कुछ नहीं कह सकती थी। इसी का परिणाम आज यह भयानक दृश्य इस तरह यहाँ उपस्थित हुवा।

महा०—तुम रुको मत, अपनी बातों को आख़ीर तक ले चलो।

आस०—आज मैं सबेरे-सबेरे उठकर अकेले इसी कमरे में बैठी हुई अपने बालों को सँवार रही थी, इतने में सहसा इस को इस कमरे के अन्दर आते हुए देखा,—इसे इस तरह आते हुए देखते ही मेरा माथा ठनका, मैं डर कर चिल्लाया ही चाहती थी, इतने में इसने मेरे पास आकर, जबर्दश्ती के साथ मेरा मुह बन्द कर कहा········।

महा०—हाँ हाँ, कहो, इसने तुम से क्या कहा?

आस०—क्या कहूँ महारानी, उसने मुझे उस वक्त बड़ी शर्म्म की बात कही। मुझे वे सब बातें याद कर अब तक भी शर्म्म मालूम होती है।

महा०—तुम शर्म्म न करो कहती जावो, मैं इसकी एक-एक बातों को सुना चाहती हूँ।

आस०—इसने कहा—यह मेरे ऊपर तीन चार बरस से आशक था,—मेरे ही लिए—इसने बहुत कुछ सिफारिश पहुँचाकर अद्भुत नाथ के जरिए से आपकी मेहरबानी हासिल की। यह तब से मुझे रात दिन अपने सामने देखकर मेरे इश्क में बहुत ही बेचैन था, इसको खाने-पीने की भी सुध

नहीं थी रात दिन में एक मिनट के लिए भी नींद न आती थी। आठो पहर मेरी ही याद में डूबा रहता था। इसे किसी बात में मजा नहीं आता था। आप जितना ही इसको चाहती थीं उतना ही यह भीतर ही भीतर नफरत करता था।

महा०—शायद, हो भी सकता है। तब फिर क्या हुवा?

आस०—मैं आपसे झूठ नहीं कहती,—इसने आपकी शान में बहुत कुछ वाही—तबाही कहने के बाद कहा—आज रात को उसने मुझे स्वप्न में देखा, मैं इसके साथ हंस-हंस कर मुहब्बत भरी बातें करती थी, सहसा मैं गायब हुई,—यह भी नींद से चौंक उठा। तब इससे बिलकुल ही सब्र न हो सका। अपनी ऐयारी से एक लौंडी की सूरत बन, आपका गुप्त संदेश को पहुँचाने का बहाना कर बाहर के कमरे तक आया और वहाँ अपनी असली सूरत में बनकर मेरे पास सामने एकाएक आ मौजूद हुवा। मुझे इसकी नीयत पहले ही से बद मालूम पड़ती थी, मगर आज तो इसने खुल्लम—खुल्ला मुझ पर अपना इश्क जाहिर कर यहाँ से निकल भागने के लिए जोर दिया,—बल्कि मेरी खुशी हो तो आपके दुश्मन को मिटाकर आपकी जगह मुझे रखने का भी इशारा किया। मैं इसके इस पाजीपन की बातों को सुन बहुत ही भयभीत हुई।

महा०—ठीक है तुम्हें डरना ही चाहिए था,—मगर अब तुम अपनी बातों को बढ़ाओ मत। बतलावो—यह सामने—जो कुछ हम दोनों देख रहे हैं,—वह दृश्य कैसे उपस्थित हुवा? तुमने अपनेको इस नीचके हाथ से कैसे बचाया? मुझे इस वक्त सब से पहले इसी बात के सुनने की उत्सुकता है?

आस०--मुझे उस तरह सुनाकर यह हाथ--पैर जोड़ता हुवा अपना इश्क जताने लगा। मैंने इसको हर तरह से समझाया मगर इसने मेरी बातों पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। आखिर को मैं इससे बहुत ही नाराज हुई मैंने साफ साफ इसको यहाँ से निकल जाने के लिए कहा। मेरी नाराजगी को देख, यह और भी अल्लम गल्लम बककर जबर्दस्ती करने पर उतारू हुवा।

महा०--तुम्हें इसने क्या किया आसमानी?

आस०--मेरे दोनों हाथों को ज़ोर से पकड़ कर-एक छोटी सी पुडिया को दिखाता हुवा मुझ से कहा--अगर तुम इस तरह पर राज़ी नहीं होती हो तो, मैं तुम्हे इसी पुड़िया से बेहोश कर पहले तुम्हारी आबरू को ले लेता हूं,-बाद को तुम्हे उसी हालत में गठरी बाँध अपनी चालाकी से तिलस्म के बाहर ले चलता हूं। फिर तुम कैसे मेरी होकर नहीं रहती हो वह मैं देख लूंगा। उसकी ऐसी बातें सुन मैं बहुत ही घबड़ाई,-उसी घबराहट में मैं उससे उस अत्याचार से बचने की कोई अच्छी तर्कीब सोचने लगी। मुझे आपके अक़बाल से एक उम्दः तर्कीब मिलगई।

महा०--तुम्हे कौन सी ऐसी तर्कीब मिली आसमानी!

आस०--मैंने अपने बचाव के लिए--इससे उस वक्त अपनी मन्ज़ूरी दिखाती हुई,--शराब पी कर दिल बहलाने को कहा। यह मेरी बातों में आ गया। मैंने इसकी आंख बचा कर इसके ग्लास में उसी ज़हर की पुड़िया को डाल दी, जो कभी-कभी आप भी अपने काम में लाया करती हैं। इसने निश्चिन्त होकर उसको पीया,--पीते ही उसके नतीजे में यह उसी दम तड़प तड़प कर ठण्डा हो गया। मैं भी अपने को

इस नीच के हाथ से अपना छुटकारा पाकर ईश्वर को धन्यवाद देने लगी। इतना कह कर उसने एक लम्बी साँसली। महारानी का चेहरा कुछ गम्भीर हो आया। वे उसकी बातें सुन शिर झुकाकर कुछ देर तक सोचती रहीं, इसके बाद उन्होंने आसमानी की तरफ़ देखकर कहा—अच्छा हुआ आसमानी,-निमकहराम इसकी मौत इस तरह तुम्हारे हाथ से बदी हुई थी, मर गया,...मुझे इसका ज़रा भी रञ्ज नहीं है। अब हम लोगों को इस कमरे से दूर किसी दूसरी जगह चलकर बात चीत करना चाहिए। इस हरामजादे ने—जिस गुस्ताखी के साथ तुम्हारी अस्मत में दाग़ लगाना चाहा था,—उसकी सज़ा आज न पाता तो कुछ दिन के बाद बिना भोगे हुए कदापि न बच सकता। इसने मेरे साथ दगा की, मुझे धोका दिया,—इसके बदले में यह आग की अँगीठी पर बैठाया जाता इसके हक़ में तो यह मौत बहुत ही अच्छी हुई,—इतनी ही तकलीफ से इसकी जान निकल गई,—नहीं तो मुमकिन था,—दूसरी तरह की मौत से दम निकल ने में इसको हद से ज्यादा कष्ट होता। खैर जाने दो,—चलो; किसी दूसरे कमरे में चलें। मुझे तुमसे दो एक ज़रूरी बातें करनी है,—इसीलिए मैं इस वक़ यहाँ चली आई हूँ। इस नालायक पाजी की लाश को अपने नौकरों से उठवा कर चील-कौवों को खिलानेका हुक्म दे, इस कमरे में गंगाजल छिड़कवा दो। साथ ही इस कमरे के तमाम कपड़ों को भी फँकवादो।

उनकी ऐसी बातें सुन आसमानी की जान में जान आई। उसने मन ही मन प्रसन्न होकर अपनी प्यारी लौंडी मैना को आवाज दे,—उस कमरे से लाश को हटवा कर वहाँ की चीजें बदलने का हुक्म दिया। इसके बाद महारानी को अपने

हाथ का सहारा देकर उस कमरे से बाहर बड़े कमरे में ले आई। वहाँ जाते ही महारानी ने उसकी तरफ़ देखकर कहा,–वह बदज़ात, नमकहराम इसी कमरे से होता हुआ उस कमरे में गया होगा, अतएव मैं यहां भी नहीं बैठा चाहती,–तुम मुझे अपने सोने के कमरे में ले चलो, मैं आज उसकी सजावट भी देखूंगी, वहां बैठकर कश्मीरी शराब के दो एक ग्लास ख़ाली कर कुछ देर आराम भी करूँगी। तुम जानती ही हो,—मैं जहाँ जाती हूँ वहां से जल्द लौटना नहीं जानती। उनकी ऐसी बातें सुन आसमानी बहुत ही व्याकुल हुई,—उसकी छाती धड़कने लग गयी, उसका पैर भारी हो गया, शरीर थर थर काँपने लगा,—वह अपने मन ही मन सोचने लगी–अब कौन सा उचित बहाना करके इन्हे उस कमरे की तरफ़ न ले जावें,—अफसोस मैंने बड़ी गल्ती की, मैना को इशारे से समझा कर कुमार को किसी दूसरी जगह भेजवा ही देना चाहिए था, अब क्या होगा, किसी तरह मेरी आबरू के साथ—साथ जान बचेगी। मुझे तो इस वक्त कुछ भी उपाय नहीं दिखलाई पड़ता। आसमानी को चुप रहकर कुछ सोचती हुई देख महारानी ने कुछ तेज आवाज़ के साथ फिर कहा—आसमानी, मेरी प्यारी सखी आसमानी, तुम नाहक की चिन्ता में फँस कर क्यों अपने दिल को व्याकुल कर रही हो। उस दृश्य को भुला दो,–चलो, जल्द चलकर अपने कमरे में आराम करो, वहाँ दो एक ग्लास पीते ही तबीअत ठिकाने आ जायगी। तुम्हे फिर यह सब बातें स्वप्न की तरह मालूम पड़ने लगेगी। मैं वहां चलकर और सखियां को भी बुलाने भेजूंगी। आज का दिन तुम्हारे ही कमरे में चुहल से कटेगा। मैं वहीं आजकल

आई हुई देहली की मशहूर गाने वाली मोती जान को भी बुलवा मँगाऊँगी।

आसमानी ने भीतर ही भीतर कांप कर, हाथ जोडती हुई कहा—महारानी, आज आप उस कमरे में न जाकर किसी दूसरे ही कमरे में चलतीं तो बड़ाही अच्छा होता।

महारानी०-क्यों क्यों, उस कमरे में आज क्या है आसमानी, मुझे तो इस मकान भर में उस कमरे से बढ़कर और कोई कमरा अपने मन के लायक दिखलाई नहीं पड़ता।

आसमानी०-इधर महीनों से उसकी सफ़ाई नहीं हुई थी इसलिए, आज उसमें सफ़ाई होगीं। उसमें के कई एक सामान भी हटा दिए गए हैं। मेरा विचार तो...

महा-( बात काट कर ) तो क्या हर्ज है आसमानी, आज सफाई न होकर उसकी कल सफ़ाई होगी। सब के सब सामान भी तो नहीं हटा दिए गए होंगे?

आस०-नहीं महारानी, क़रीब क़रीब उसमें का आधा सामान हटा दिया गया है। इसीलिए तो मैं आज उस छोटे से कमरे में जाकर बैठी हुई थी।

महा०-तब तो आसमानी, मैं ज्यादे देर तक न बैठूंगी,—मेरी तबीअत और किसी कमरे में नहीं लगती। उसकी सफ़ाई होने के बाद मैं एक दिन आकर यहाँ दिन भर रहूँगी, आज आध घण्टे तक बैठ कर चली जाऊँगी,—मगर बैठूंगी वहीं जाकर। चलो,—जरा उसकी हालात भी तो देखलूं। मुझे उसको नए सिरे से सजाने के बारे में कुछ तुम्हें समझाना भी है।

आस०-( घबरा कर ) महारानी, आप इस समय उसकी हालात न देखतीं तो बड़ा ही अच्छा होता, वहां का फ़र्श भी

नहीं है, बिलकुल कमरा गर्द से भरा हुआ है। उसकी सूरत देखते ही नफ़रत हो आती है।

महा०–मुझे ऐसी ही हालात में उसे देखने का शौक हो आया है। मैं उसको ज़रूर देखूंगी। चलो,—एक मर्तवः उसे देख ही लें, फिर जहाँ सुभीता पड़ेगा वहीं बैठकर बातें कर लेंगे, न होगा—उसी कमरे के रास्ते से महल में चले चलेंगे। इतना कह कर वे कमरे के बाहर निकल आईं। पहरे की तातारी बाँदियों ने महारानी को देख अदब के साथ झुक कर सलाम किया। वे उस कमरे की तरफ बढ़ने लगीं जहां कुमार चन्द्रसिंह बैठे हुए थे। यह देख आसमानी का कलेजा ज़ोर से धड़कने लगा,—उसकी गुलाबी रङ्गत सुफ़ेद सङ्गमरमर के रङ्ग में बदलने लगी,—दबाकर न दबने वाला बेहद खौफ़न उसके हृदय पर कब्ज़ा करता हुआ दिमाग़ को पश्त कर दिया। वह किसी मूर्त्ति की तरह बे हिले डोले जिस जगह खड़ी थी, उसी जगह खड़ी की खड़ी रह गई। उसको अन्दर ही अन्दर कँप कँपी पैदा होने लगी। उसकी पेशानी से बर्फ की तरह ठण्डे-ठण्डे मोती के बूंद टपकने लगे आंखों की पलक गिरने से रह गई। दम भी रुकता हुवा मालूम पड़ने लगा। उसको अन्दर ही अन्दर हद से ज्यादा तकलीफ होने लगी। महारानी ने कुछ क़दम आगे बढ़कर अपने साथ आसमानी को आती हुई न देख, घूम कर उसकी ओर निगाह उठाई, साथ ही उसकी उस समय, उस चिन्ता से एक दम मुरझाई हुई सूरत को देख. चौंककर, कुछ क़दम उसकी तरफ़ बढ़,—ग़ौर से उसे देखती हुई कुछ उच्चस्वर से कहा,—आसमानी, मेरी प्यारी आसमानी'—तुम्हारे दिल से अभी तक उस शैतान का खौफ़ नहीं गया है? उनकी बातें

सुन आसमानी चौंक उठी, उसने अपनी निराशा भरी हुई धुंधली आँखों से उनकी ओर देखा,--साथ ही उनके पैर पकड़ कर अपने कसूर की माफी मांगना चाहा-मगर उसको ऐसा करने का साहस नहीं हुवा, न उसकी ज़बान से एक लफ्ज़ही निकल सका। उसकी अवस्था देख,—महारानीने उस के पास आ मुहब्बत से उसका हाथ पकड कर कहा-आसमानी मेरे दिल को मदद देने वाली आसमानी, तुम क्यों नहीं उस खौफको दिल से दूर करती, संभलो,—अपने दिल को धैर्य्य दो,-मैं तुम्हारे साथ ही हूँ।

आस०-मैं संभली हुई हूं महारानी!

महा०-मगर इस वक्त की तुम्हारी हालात तो यह नहीं बतलाती है।

आस०-जी नहीं महारानी, मुझे आपके रहते हुए उस बात का ज़रा भी खौफ़ नहीं है। मेरे सिर में इस वक्त अनायास ही एक खौफनाक दर्द हो आया। जिससे मेरी हालत ऐसी हो गई।

महा०-तब तो चलो आसमानी, तुम इसी कमरे में चलो। मैं तुम्हे वहां चल कर दीवार में लगी हुई एक तिलस्म चीज़ को छुलाकर तुम्हारे सिर में उठे हुए दर्द को बात की बात में दूर करदूँगी। तुम्हे शायद वह तरकीब आज तक मालूम न होगी; मैं आज वह तरकीब भी तुम्हे बता दूंगी। उससे तमाम बदन में उठने वाले दर्द आराम होते हैं। चलो, जल्द चलो, यहाँ इस तरह खड़ी रहने से और भी तुम्हे तकलीफ होगा उनकी ऐसी बात सुन कर आसमानी को बड़ी चोट लगी,—उसका बदन बेंत की तरह काँपने लगा। आँखे भर्रा आईं। रङ्ग मुरदे की तरह पीला होगया। पैर मन—मन भर

के हुए। उसकी ऐसी हालत होती देख, महारानी ने उसे चट पट थाम लिया, नहीं तो वह धड़ाम से पत्थर पर गिर कर सख्त चोट खा जाती। महारानी को इस तरह उसे सँभालते देख चारों तरफ से लौंडियां भी दौड़ती हुई आईं, मगर उन्होंने किसी को उसे पकड़ने नहीं दिया, खुद ही उसे सँभाल कर उसके उसी ख्वाबगाह की तरफ ले चलीं। अभी पाँच चार क़दम आगे बढ़ भी नहीं पाईं थीं इतने में आसमानी ने ठहर कर बगल वाले एक दूसरे कमरे की तरफ उँगली के इशारे से दिखाती हुई कहा—वहां, महारानी, वहां मुझे हर तरह से आराम मिलेगा। मुझे वहां ले चलिए। मैं इस कमरे में न जाऊँगी। मेरे सिर में यहां जाकर और भी दर्द बढ़जायगा। आप को मेरी मुहब्बत का ज़रा भी ख़याल हो तो इस तरफ ले चलिए?

महारानी--तुम्हें आज अपना शयनागार क्यों काट खा रहा है?

आसमानी—मैंने तो आप से निवेदन किया ही है। उसकी हालत बीमार के जाने लायक नहीं है। उस कमरे में जाकर मैं आपकी दी हुई वही रङ्गीली शर्बत पीऊँगी। उसकी ऐसी बातों से महारानी के दिल में बड़ा खटका हुवा, उन्होंने एक बार ग़ौर के साथ आसमामी के चेहरे को देखा, इसके बाद उसके ख्वाबगाह की तरफ एक गहरी निगाह डाल आप ही आप कहा—मैं ठीक तो नहीं कह सकती, मगर इस कमरे के अन्दर जरूर कुछ न कुछ रहस्य भरा हुवा मालूम होता है, नहीं तो यह इस तरह यहाँ जाने से क्यों इनकार करती।

आस०—(जल्दी से) नहीं, नहीं महारानी, इस कमरे में कोई भी रहस्य नहीं है। यह आप के दिल में नाहक़ ही का

शक पैदा हुवा है। अगर कुछ रहस्य होतातो मैं आपको न बताती ?

महा०--तब फिर आसमानी, तुम अपने सोने के कमरे में जाने से क्यों इस तरह आना-कानी करती हो ? जरूर इसमें कुछ न कुछ भेद है। तुम्हारी इस वक्त की चाल ही मुझे इस बात की गवाही दे रही है। तुम मुझे भुलावा देकर मुझे इस कमरे में नहीं ले जाना चाहती हो। बोलो सच सच बोलो ? इसके अन्दर क्या है और तुम क्यों नहीं जाना चाहती हो ?

आस०--आप नाराज तो न होंगी महारानी, मैं आप से साफ साफ कहूं ? सुनने पर मुझे अब तक इस तरह कहनेका दोष तो न देंगी !

महा०—नहीं, मैं माफ कर दूँगी और साथ ही तुम्हारे हक में भी साफ साफ कह देने से अच्छा ही होगा। नहीं तो जानती हो आसमानी मुझे धोका देनेवाले से बड़ी नफरत रहा करती है।

आस-०मैं सब कुछ जानती हूँ महारानी,--मुझे समझाने की कोई जरूरत नहीं है। इतने दिनों तक मैं आपकी...

महा०—( बात काटकर ) तो फिर जल्द बतावो क्या बात है ?

आस०--आप तो जानती ही हैं, मेरे एक बुड्ढे चचा इन दिनों कुसुमपुर के ताल्लुकेदार हुए हैं। उन्हों के छोटे लड़के आज सबेरे मुझ से मिलने के लिये आए हुए हैं। उन्हीं को मैंने इस कमरे में ठहरा रक्खा है। बिना आपकी इजाजत के कोई भी इस तरह आकर मिल नहीं सकता था इसलिए माफ कीजिएगा महारानी, मैंने आप से इस तरह का बहाना कर उस बात को छिपाया था। मेरी नीयत बुरी नहीं थी।

महा०—परन्तु आसमानी,--मैं तुम्हें सब सहेलियों से इतना मानती हूँ, मगर ऐसा होते हुए भी तुमने मुझे यह बातें पहले ही क्यों न कह दी ? अगर मुझसे दिल खोल कर कह देती तो क्यों मुझे परेशान होना पड़ता।

आस०—मैंने आप से इसलिए साफ साफ नहीं कहा महारानी, आप आशक मिजाज हैं, वह गजब के खूबसूरत हैं। आप उन्हें देखकर शायद अपने महल में चलने के लिए जोर देतीं, वह इस बातको बिलकुल ही नहीं चाहते,—क्योंकि उन्होंने मुझसे आते ही इस बात का इशारा कर दिया था और चचा ने भी अपनी चिट्ठी में कुछ ऐसी ही बातों का जिक्र किया था।

महा०—क्या तू यह बात सच सच कह रही है आसमानी ? मुझे तो जरा भी विश्वास नहीं होता। आज तेरी रंग ढंग ही कुछ और है।

आस०—नहीं महारानी, मैं बिलकुल सच सच कहती हूँ। भला आप से झूठ बोलकर मेरे हक में कहीं अच्छा होगा ?

महा०--परन्तु आसमानी, तू अपनी निगाह को इस वक्त आप नहीं देख रही है, मगर मैं देख रही हूँ। वह तो साफ़-साफ बतला रही है कि तू सिर से पैर तक झूठ बोलकर मुझे धोके में डाला चाहती है।

आस०—( काँपती हुई ) नहीं नहीं, महारानी, मैं ऐसा कभी कर सकती हूं। मेरी क्या मजाल है ? आप जाँच कर देख लीजिए।

महा०—नहीं, तू सरासर झूठ बोल रही है।

आस०—मैं झूठ बोल रही हूँ महारानी ?

महा०—हां, तू झूठ बोल रही है आसमानी, यहाँ आकर

आज मुझे एक अजीब तमाशा दिखलाई पड़ रहा है। इस कमरे के अन्दर यही बात नहीं, जरूर कोई अजीब रहस्य है। मैं इसके अन्दर जाकर अवश्य देखूंगी। मुझे अब तेरी बातों का यकीन जाता रहा। इतना कहकर महारानी तेजी के साथ उस कमरे की तरफ बढ़ीं। पहरेपर बैठी हुई तातारी बाँदिया अदब के साथ हटकर कुछ दूर खड़ी होगईं। आसमानी का सिर घूम गया। उसका तमाम बदन सन सनाने लगा। आँखों के आगे बिलकुल ही अंधेरा छा गया। बरफ की तरह तमाम बदन का खून जमता सा मालूम हुआ। हाथ पैर ऐठने लगे पीलापन बढ़ता ही गया। महारानी ने दरवाजे के परदे पर हाथ लगाया। आसमानी के मुँह से उस समय एक लम्बी चीख निकल पड़ी और वह बेहोस होकर वहां गिर पड़ी। उसको उठाने के लिये चारों तरफ से लौंड़िया दौड़ी हुई आईं।

आँठवाँ भाग समाप्त।

इसके आगे का हाल जानने के लिए नवाँ भाग देखिएगा।

इस हिस्से में दूसरे बयान की जगह भूल से चौथा बयान छपगया है उसी सिलसिले से आगे के सब बयान हैं। परन्तु किस्से में कोई छूट नहीं है। अस्तु पाठक गण इस गलती के लिये क्षमा करेंगे।